पंज ज्योति

YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अंक चतुर्थ
वर्ष 2019-20

उप क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

लुधियाना

छायाचित्र: मुकेश कुमार

नराकास लुधियाना द्वारा हिन्दी मे उत्कृष्ट कार्य करने पर उप क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया है।

नराकास, लुधियाना द्वारा गृह पत्रिका 'पंज ज्योति' तृतीय अंक को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया है। पुरस्कार ग्रहण करते श्री सत्यवान सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा प्रभारी)

पंज ज्योति

चतुर्थ अंक, वर्ष 2019-20

संरक्षक

प्रेम कुमार नरूला
निदेशक (प्रभारी)

संपादक मंडल

कुंवर अजय सिंह
उप निदेशक

सत्यवान सिंह
सहायक निदेशक

मुकेश कुमार
सहायक

संपादन सहयोग

अश्वनी कुमार सेठ
अधीक्षक

श्री राजू कुमार
सहायक

पत्रिका के लिए भरांक सहयोग

राजू कुमार
सहायक

आवरण

मुकेश कुमार
सहायक

प्रकाशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय
एस.सी.एफ-२२-२३, फेस-२, अर्बन एस्टेट
फोकल प्वांइट, लुधियाना (पंजाब)

दूरभाषः 0161–2670839–42, 2671839 टोल फ्री नं: 1800–180–0026
वेबसाईटः www.esisroldh.org ई–मेलः sro-ludhiana@esic.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं तथ्य रचनाकारों के अपने है। इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है। यह पत्रिका केवल निःशुल्क सीमित वितरण के लिए है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	-	2.3
2	संरक्षक की कलम से..	प्रेम कुमार नरूला	4
3	संपादकीय	सत्यवान सिंह	5
4	लुधियाना समाचार	-	6
5	विविध गतिविधियां	-	7.11
6	कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अंतर्गत देय कुछ अनछुए अनदेखे हितलाभ	संदीप कुमार श्रीवास्तव	12
7	रसोई बागवानी की बढ़ती उपयोगिता	नीरज कुमार	13
8	सेवा पुस्तिका का रख-रखाव और आपका दायित्व	ज्ञान गौरव कुमार	14
9	बीज बम	राजू कुमार	15
10	खुश रहने के लाभ,	सुखविंदर सिंह	16.17
11	स्वच्छ पेय जल	राजेश कुमार	18.19
12	माउंटेनमैन दशरथ मांझीः एक जीवन कथा,	राजू कुमार	19
13	हिन्दी की विकास यात्रा	सुजीत कुमार	20
14	स्विच आफ की महत्ता	राजू कुमार	21
15	आईएफएससी एवं एमआईसीआर संख्या	हरीश शर्मा	22
16	क्युआर कोड एवं बार कोड	सिद्धार्थ नागपाल	22
17	भारत की विलासी ट्रेन	दीपक भाटिया	22
18	हिन्दी साहित्य में दैनिक समाचार पत्रों की उपादेयता एवं प्रासंगिकताः एक विवरण	कृष्ण वीर सिंह सिकरवार	23.26
19	साइकिलनामा	मुकेश कुमार	27-28
20	जीने का नजरिया	मुकेश कुमार	29-30
21	ऋषि का कर्ज	नीलम	31-32
22	दस कदम का फलसफा	संदीप श्रीवास्तव	33
23	स्मृति के कैनवास पर	राजू कुमार	34
24	मेरी प्यारी नानी	बार्बी शर्मा	34
25	बेटी, जीवन के मंत्र,	अवल मग्गू,जगदीश चन्द सूर्यवंशी	35
26	राखियां	मुकेश कुमार	35
27	यात्रा संस्मरण-माउंट आबू दर्शन	संजीव मदान	36-37
28	कुंडलपुर का जैन शवेताम्बर मंदिर	पूजा कुमारी	38
29	स्वाद मेरे देश का	मुकेश कुमार	39-40
30	मेरी चार धाम यात्रा का अनुभव	अनिल कुमार	41-42
31	हिन्दी जगत की खबरें	पूजा कुमारी	43
32	राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी	-	44
33	हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं एवं हिन्दी प्रतियोगिता	-	45
34	वाषिक कार्यक्रम 2019-20	-	46
35	कार्यालय की विविध झलकियां	-	47-51
36	बॉलीवुड से ब्रॉडवे तकः सईद जाफरी	सुभाष चन्द्र गुप्ता	52
37	अचकन की छींटे	मंजू शर्मा	53
38	आपकी पाती मिली	-	54.55

क.रा.बी.नि.
चिंता से मुक्ति

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी.मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in •www.esic.india.org

संख्या : ए–49 / 17 / 1 / 2016–रा.भा.

संदेश

राज कुमार (भा.प्र.से.)
महानिदेशक

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना अपनी विभागीय पत्रिका 'पंजज्योति' के चतुर्थ अंक का प्रकाषन करने जा रहा है। विभागीय पत्रिका कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का आईना तो होती ही है, साथ ही यह अधिकारियों तथा कर्मचारियों में रचनात्मकता को बढ़ावा भी देती है। उम्मीद है कि 'पंजज्योति' का यह अंक न केवल सृजनात्मकता से सराबोर होगा, बल्कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को भी बढ़ावा देगा।

पंजज्योति के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं

(राज कुमार)

क.रा.बी.नि.
चिंता से मुक्ति

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी.मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in •www.esic.india.org

संध्या शुक्ला
(भा.ले.और ले.से.)
वित्त आयुक्त

संदेश

गृह पत्रिका 'पंजज्योति' के अंक **4** का प्रकाशन, एक सराहनीय प्रयास है। यह सत्य है कि कार्यालयीन कार्य हिंदी में करके हम संविधान के नियमों का पालन तो करते ही हैं, राष्ट्र निर्माण की दिशा में भी महत्तवपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। गृह पत्रिका, हिंदी के प्रचार प्रसार का एक सशक्त माध्यम होती है। आशा है कि यह पत्रिका न केवल कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देगी बल्कि अधिकारियो/कर्मचारियों के अभिव्यक्ति कौशल को भी निखारेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(संध्या शुक्ला)

क.रा.बी.नि.
चिंता से मुक्ति

संरक्षक की कलम से

विभागीय हिन्दी पत्रिका **"पंजज्योति"** के एक और अंक की प्रस्तुति मेरे लिए अपूर्व आनंद व हर्ष का विषय है। यह हमारे प्रबुद्ध पाठकों के सुझाव व उत्साह तथा साथी अधिकारियों/कर्मचारियों के रचनात्मक सहयोग का प्रतिफल है कि एक और नए अंक की परिकल्पना फलीभूत हुई है।

यह भी सूचित करने में अत्यंत गौरव अनुभव कर रहा हूं कि यह कार्यालय राजभाशा विभाग द्वारा जारी वार्शिक लक्ष्यों के सफल कार्यान्वयन की दिषा में काफी गंभीर है। हालांकि यह कार्यालय "ख" क्षेत्र में आता है, कार्यालय के कई कार्मिक हिन्दी भाषी नही है तथापि उनका हिन्दी के प्रति लगन व कार्य करने की इच्छाशक्ति सराहनीय है। धीरे-धीरे कार्यालय द्वारा हिन्दी में कार्य निष्पादन की प्रतिशतता बढ़ती जा रही है। उम्मीद है कि आने वाले दिनों में शत-प्रतिशत कार्यालयी कार्य केवल हिन्दी में करने की दिशा में हम कामयाब होंगे।

कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग से इत्तर अगर बात करें तो पिछला साल राजभाषा हिन्दी के लिए वैश्विक भाषा बनने की दिशा में बढ़ते कदम का गौरवपूर्ण क्षण का साक्षी रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने हाल ही में हिन्दी में साप्ताहिक बुलेटिन जारी करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही उनके द्वारा हिन्दी में ट्विटर खाता खोला गया हैं। यह हिन्दी के बढ़ते प्रभाव का नतीजा है। साथ ही सारे देशवासियों के लिए यह गर्व का क्षण है । भारत सरकार भी हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है, आशा है हमारा देश इस मकसद में अवशयक कामयाब होगा।

अपनी बात इस उम्मीद और विश्वास के साथ समाप्त करना चाहूंगा कि **"पंजज्योति"** का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर पुनः खरा उतरेगा। प्रबुद्ध पाठकों से यह भी आशा रहेगी कि वे इस अंक को लेकर अपने विचार व सुझाव से हमें प्रोत्साहित करेंगे।

प्र कु नरूला

(प्रेम कुमार नरूला)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
पंचदीप भवन, सी.आइ.जी.मार्ग, नई दिल्ली–110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110002
Website: www.esic.nic.in •www.esic.india.org

संपादकीय

विभागीय हिन्दी पत्रिका 'पंजज्योति' का चतुर्थ अंक प्रस्तुत करते हुए असीम आनन्द की अनुभूति हो रही है। वस्तुतः यह कोई पत्रिका नही बल्कि एक गुलदस्ता है, जिसे साथी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बौद्धिक श्रम से रचित रचनारूपी पुष्पों से इस तरह सजाय गया है, जो किसी भी सुधी पाठकों को अपने सम्मोहन में वशीभूत करने में सक्षम है।

मुझे यह भी बताने में अतीव प्रसन्नता हो रही है कि यह कार्यालय हिन्दी को अपनाने तथा इस बाबत राजभाषा विभाग द्वारा जारी हिदायतों के अनुपालना में काफी गंभीर है। कार्यालय में उतरोत्तर हिन्दी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। हिन्दी पत्रिका के चतुर्थ अंक की परिकल्पना का फलीभूत होना भी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के हिन्दी प्रेम को दर्शाता है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि भारत सरकार हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रुप में मान्यता दिलाने के प्रति प्रयत्नशील है। अतः यह हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम दैनंदिन जीवन में हिन्दी को संपूर्ण रूप से अपनाएं, व्यक्तिगत से लेकर सामूहिक संचार माध्यम के रूप में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

'पंजज्योति' के चतुर्थ अंक के संदर्भ में आपकी प्रतिक्रिया, सुझाव व टिप्पणी की प्रतीक्षा रहेगी ।

सत्यवान सिंह

(सत्यवान सिंह)

लुधियाना समाचार

पदोन्नति

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में वर्ष 2018–19 के दौरान कई कर्मचारियों की पदोन्नति हुई। श्रीमती स्वर्ण कौर विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर सहायक पद पर पदोन्त हुई, वहीं श्री शमशेर सिंह, श्री सुरेश कुमार विभागीय परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नत हुएं ।

नए अधिकारियों / कर्मचारियों का आगमन

गत अवधि के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में कई अधिकारी व कर्मचारियों का भी आगमन हुआ। श्री सत्यवान सिंह की सहायक निदेशक के पद पर तथा श्रीमती अकांक्षा रहेजा की सामाजिक सुरक्षा अधिकारी के पद पर पदोन्नति के उपरांत उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना आगमन हुआ।

राजभाषा विषयक गतिविधियां

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना कार्यालय द्वारा विभागीय राजभाषा समिति की नियमित बैठक आयोजित की जा रही है। इसके अतिरिक्त हिन्दी कार्यशला का भी नियामित आयोजन किया जा रहा है। हिन्दी कार्यशाला में विशेषज्ञों को आमंत्रित करके हिन्दी भाषा के संबंध में झिझक को मिटाया जा रहा है तथा कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य के प्रति उत्साह बढ़ाया जा रहा है।

नाराकास द्वारा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु कार्यालय को विशेष पुरस्कार प्राप्त

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को वर्ष 2017–18 में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके पूर्व भी उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना कार्यालय को नाराकास द्वारा हिन्दी में कार्य संपादन के लिए पुरस्कृत किया जा जाता रहा है।

इसके अतिरिक्त राजभाषा हिन्दी के प्रसार–प्रचार को बढ़ावा देने के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना के गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' को भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कृत किया गया ।

सेवानिवृत्ति

वर्ष 2018–19 के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में कार्यरत कई अधिकारी व कर्मचारी भी सेवानिवृत्त हुएं। इनसे श्री मनजीत सिंह,सहायक,श्री चण्डी प्रसाद, श्री प्रवीण कुमार, सा.सु. अधि., श्रीमती उमा कपिला, अधीक्षक, श्री गुरमीत सिंह, अधीक्षक, श्री धनपत राय, अधीक्षक शामिल हैं।

नाराकास, लुधियाना द्वारा आयोजित राजभाषा चेतना मासवर्ष 2017 व 2018 में उप क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारी हुए पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना द्वारा वर्ष 2017 में संयुक्त हिन्दी माह का आयोजन किया गया। इस दौरान कई हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें श्री मुकेश कुमार सहायक ने हिन्दी चित्र कहानी प्रतियोगिता में लगातार दूसरी बार प्रथम पुस्कार प्राप्त किया। जबकि श्री राजू कुमार, सहायक वर्ष 2018 में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

नवनियुक्त कर्मचारियों का आगमन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में वर्ष 2017–18 के दौरान उच्च श्रेणी लिपिक तथा बहु कार्य स्टाफ के पद पर कई नवनियुक्त कर्मचारीयों ने कार्यग्रहण किया। श्री गौरव नंदा, श्री चंद प्रकाश, श्री अनुराग जिदंल, श्री सिद्धार्थ नागपाल, श्री आशीष शर्मा, श्री हरीश शर्मा, श्री दीपक भाटिया, श्री कुलवीर माही, श्री मनोज सिंगला, श्री संजय तिवारी, श्री पलविंदर सिंह, श्री नवजीत सिंह, श्री विरेन्द्र कुमार श्री मनोज कुमार श्री चंद्र शेखर, श्री जगमोहित सिंह, श्री अमित कुमार, श्री अमनदीप सिंह, श्री मोहित कुमार, श्री ने उ.श्रे.लि. के पद पर तथा श्री ज्ञान गौरव कुमार, श्री प्रिंस कुमार, श्री राजू कुमार, श्री आशीष कुमार सिंह, श्री हरेराम कुमार, श्री विकास, श्री प्रियांशु कुमार, श्री राजेश कुमार, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री दीपक ने बहु कार्य स्टाफ के पद पर कार्यग्रहण किया ।

का.रा.बी. योजना के अंतर्गत विभिन्न हितलाभ विषयक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना द्वारा समय–समय पर विभिन्न जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन करके निगम के सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी उद्यमियों, कामगारों आदि को दिया जाता रहा है, इसी कम में दिनांक 26.06.2018 को चैम्बर ऑफ इंडस्ट्रीज एंड कॉमर्शियल अंडरटेकिंग्स (CICU) में एक इंटरएक्टिव सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई जाने–माने उद्यमी व श्रम विभाग, पंजाब सरकार के कई अधिकारी उपस्थित थे। श्री प्रेम कुमार नरुला, निदेशक (प्रभारी) महोदय ने इस सत्र के दौरान अपने संबोधन में कर्मचारी राज्य बीमा योजना के उन्नयन के लिए हाल ही में निगम द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी देते हुए बताया कि यह योजना श्रम जगत के लिए काफी उपयोगी है। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य लोगो द्वारा सेमिनार के आयोजन की सराहना की गई।

दोराहा, सहनेवाल क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा का विस्तार

लुधियाना के दोराहा तथा सहनेवाल क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा का निगम द्वारा का विस्तार किया गया। लघु उद्योग विस्तार, लुधियाना के सहयोग से बीमाकृत बंधुओं एवं उनके आश्रितों के चिकित्सा सुविधा हेतु एमआइएमपी योजना का प्रारंभ सहनेवाल तथा दोराहा क्षेत्र के लिए किया गया। जिसके अंतर्गत राजवत अस्पताल के श्री जसकिरत सिंह, एम.डी. को आइएमपी के रुप तथा कपलीश ड्रग स्टोर तथा रजवंत लैब, दोराहा को निंबधित किया गया। योजना की शुरुआत मेसर्स मित्तल फास्टनर्स, दोराहा, लुधियाना के परिसर में आयोजित कार्यक्रम द्वारा की गई। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा निगम के सदस्य श्री दिनेश लाकडा, श्री पी.के.नरुला निदेशक (प्रभारी) श्री सत्यवान सिंह, सहायक निदेशक, श्रीमती रंजना गोस्वामी, अधीक्षक, श्री संदीप सलुजा, सा.सु.अधि. तथा लघु उद्योग भारती के कई गणमान्य सदस्य भी उपस्थित थें। इस अवसर पर श्री दिनेश लाकड़ा तथा श्री पी.के.नरुला निदेशक (प्रभारी) द्वारा बीमाकृत व्यक्तियों के बीच स्वास्थ्य पासबुक का भी वितरण किया गया ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

दिनांक 29.10.2018 से लेकर 03.11.2018 तक उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना एवं अधीनस्थ शाखा कार्यालयों में सतर्कता जागरुकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमे प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, विशेष शिकायत निवारण/सुविधा समागम का आयोजन प्रमुख है। सप्ताह की शुरुआत निगम के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के सत्यनिष्ठा के शपथ के साथ हुई। इस दौरान पोस्टर, बैनर आदि के जरिये सतर्कता विषयक जागरुकता फैलाई गई। उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में दिनांक 31. 10.2018 को एक सेमिनार का भी आयोजन किया गया। इस सेमिनार में सेवानिवृत्त आयकर अधिकारी श्री आर.के.वालिया, श्री पी.के. नरुला, निदेशक (प्रभारी) समेत अन्य वक्ताओं द्वारा अपने विचार व्यक्त किए गयें।

सूक्ष्म, लघु व मध्यम उपक्रमों के लिए सहयोग व विस्तार कैंपेन का आयोजन

मुख्यालय के निर्देषानुसार उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना द्वारा दिनांक ०२.११.२०१८ से २८.०२.२०१६ तक लुधियाना के विभिन्न क्षेत्रों में एमएसएमई सपोर्ट एंड आउटरीच कैंपेन के दौरान जागरुकता कैंप में निगम की भागीदारी सुनिष्चित की गई। इन कार्यक्रमो के दौरान सूक्ष्म, लघु व मध्यम उपक्रमों में लगे उद्यमियों को निगम द्वारा कर्मचारियों/कामगारों के लिए चलाये जा रहे विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी दी गई तथा अधिक से अधिक कामगरों को इस योजना के अंनर्गत लाने की अपील की गई। यह भी उल्लेखनीय है कि इस कैंपेन के दौरान लगभग २८३८ कामगारों को क.रा.बी. योजना के अंतर्गत व्याप्त किया गया। इस कैंपेन को सफतापूर्वक चलाने में श्री सत्यवान सिंह सहायक निदेषक, श्री अष्विनी सेठ, सा.सु.अधि, श्री गुरपरविन्दर सिंह रंधावा, सा.सु.अधि, श्रीमति रंजना गोस्वामी, अधीक्षक श्री संदीप सलुजा, सा.सु.अधि, श्री सुनील दत्त, सा.सु.अधि, श्री मनीश षर्मा, उ.श्रे.लि. आदि की सराहनीय भूमिका रही।

एमएसएमई सपोर्ट एंड आउटरीच कैंपेन के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना द्वारा विभिन्न कैंपों में भाग लिया गया

वर्ष 2019 में स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

दिनांक 01.05.2019 से 15.05.2019 के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना एवं इसके अधीनस्थ कार्यालयों में स्वच्छता पखवाडा का आयोजन किया गया। इस अवधि के दौरान मुख्यालय की हिदायतों के अनुसार विविध कार्यकमों का आयोजन किया गया।

पखवाड़े की शुरुआत अपने आस–पास के वातावरण की सफाई तथा इस संबंध में लोगों को उत्साहित करने के शपथ के साथ हुई। इस अवधि के दौरान कई गतिविधियां का भी आयोजन किया गया, जिनमें वृक्षारोपण, फूलों के गमले को कार्यालयों परिसर में लगाने, पानी की टंकी की सफाई, कार्यालय परिसर में कूड़ा दान की व्यवस्था आदि के द्वारा निगम के भवनों को आकर्षक रुप दिया गया। दिनांक 03.05. 2019 को शाखा कार्यालय, फोकल प्वाइंट, लुधियाना में पौधारोपण किया गया, इस कार्य हेतु कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारी समेत कार्यालय भवन में ही चल रही डिस्पेंसरी डॉक्टर व पैरा मेडिकल कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर अपना योगदान दिया। इस पखवाडे के दौरान दिनांक 07.05.2019 को शाखा कार्यालय, गिल रोड, लुधियाना में स्वच्छता विषयक एक सेमिनार का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई नियोक्ता व कामगार उपस्थित थें। पखवाड़े के दौरान निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों से स्वच्छता विषयक सुझाव भी मंगाए गए तथा सराहनीय विचार देने वाले कार्मिकों को पुरस्कृत भी किया गया।

इसी बीच दिनांक 10.05.2019 मॉन्टे कार्लो फैक्टरी परिसर में स्वच्छता विषयक एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निगम की तरफ से श्री कुं. अजय सिंह. उप निदेशक, श्री सत्यवान सिंह, सहायक निदेशक, श्रीमती रंजना गोस्वामी, अधीक्षक, श्री अश्विनी सेठ, अधीक्षक, श्री सुरजीत सैनी, सा.सु.अधि., श्री संदीप सलूजा, सा.सु.अधि, आदि ने भाग लिया जबकि कंपनी की तरफ से मानव संसाधन विभाग प्रमुख श्री महक सिंह समेत कई वरिष्ठ अधिकारी व फैक्टरी के कई कामगार उपस्थित थें। इस सेमिनार को संबोधित करते हुए श्री कुंवर अजय सिंह, उप निदेशक ने बताया कि स्वच्छता का हमारे जीवन में क्या महत्व है। इस अवसर पर उपस्थित लोगो ने घर, कार्यस्थल के साथ–साथ अपने आस–पास के वातावरण की स्वच्छता का संकल्प लिया ।

स्वच्छता पखवाड़ा वर्ष 2018 की झलकियां

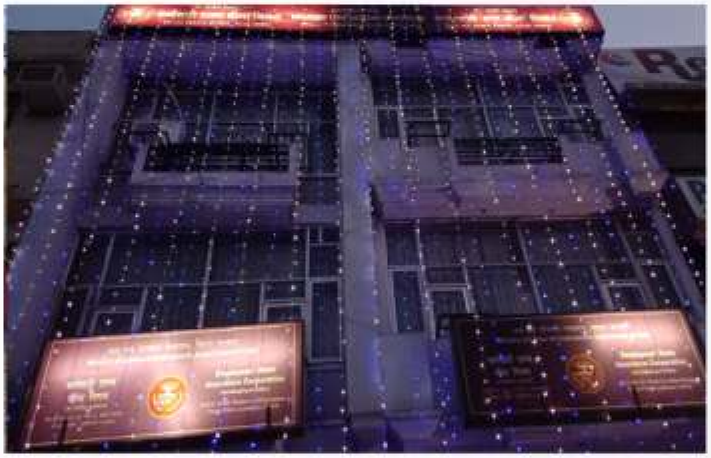

समारोहपूर्वक मनाया गया एसिक पखवाड़ा

कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपनी स्थापना की 66वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में दिनांक 24.02.2018 से 10.03.2018 तक विशेष सेवा पखवाड़ा मनाया। पखवाड़े के दौरान कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा योजना को व्यापक स्तर पर प्रचार व प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया गया।

पखवाड़े का आरंभ मैरेज पैलेस एसोसिएशन के प्रतिनिधियों को जागरुक करने हेतु विशेष कार्यक्रम के साथ किया गया, जिसका आयोजन दिनांक 28.02.2018 को फिरोजपुर रोड स्थित शहनाई पैलेस में किया गया। इसमें एसोसिएशन के 30–40 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इसी क्रम में दिनांक 07.03.2018 को शेरपुर चौक स्थित मेसर्स ओसवाल वुलेन मिल्स में ईएसआई अस्पताल, लुधियाना के सहयोग से एक विशेष स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया. जिसमें कर्मचारी राज्य बीमा निगम के निदेशक श्री पी.के. नरुला एवं ईएसआई अस्पताल के चिकित्स अधीक्षक श्री बलराज भंडार विशेष रुप से उपस्थित हुए। इस चिकित्सा शिविर में लगभग दो सौ बीमित व्यक्तियों के स्वास्थ्य की जांच की गई तथा आवश्कता अनुसार दवाईयों का भी वितरण किया गया ।

इसी दिन कर्मचारी राज्य बीमा निगम के ग्यासपुरा स्थित शाखा कार्यालय में बीमीत व्यक्तिों एवं नियोजकों के प्रतिनिधियों की समस्याओं के तुरंत निवारण हेतु विशेष सुविधा समागम का आयोजन श्री पी.के. नरुला, निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम की उपस्थिति में किया गया। इस समागम के दौरान लगभग 100 से अधिक कामगारों ने भाग लिया। समागम में नियोजको के तरफ से मेसर्स हीरो साइकिल, एवन इस्पात, एवन साईकिल एवं रालसन टायर्स के प्रतिनिधयों ने भी भाग लिया।

यह भी उल्लेखनीय है कि लुधियाना नगर में कर्मचारी राज्य बीमा निगम अपने 01 उप क्षेत्रीय कार्यालय, 05 शाखा कार्यालय, 01 मॉडल अस्पताल तथा 13 डिस्पेंसरियों के द्वारा लगभग 14,162 फैक्ट्रियों / संस्थानों में कार्यरत लगभग 380218 से अधिक कामगारों को अपनी सेवाएं प्रदान करता है।

इस वर्ष कर्मचारी राज्य बीमा निगम सदस्य श्री वी.राधाकृष्णन जी का उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना आगमन हुआ।
इस अवसर पर उनका स्वागत करते कार्यालय प्रमुख श्री पी.के. नरूला व अन्य अधिकारीगण।
इस दौरान श्री वी. राधाकृष्णन जी द्वारा उप क्षेत्रीय कार्यालय के विभिन्न शाखाओं का भी निरीक्षण किया गया।

वर्ष 2019 में विशेष सेवा पखवाड़ा के दौनान शाखा कार्यालय, गिल रोड, लुधियाना में आयोजित एक गोष्ठी में उपस्थित नियोजकों एवं बीमाकृत बंधुओं को संबोधित करते कार्यालय प्रमुख श्री पी.के.नरूला, निदेशक (प्रभारी)।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अंतर्गत देय कुछ अनछुए–अनदेखे हितलाभ

-संदीप श्रीवास्तव, अधीक्षक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की स्थापना कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948 के अंतर्गत की गई थी, जिसके तहत निगम द्वारा संगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमबल को सामाजिक सुख हितलाभो के रूप में प्रदान की जाने वाली प्रमुख 5 हितलाभों यथा 1.बीमारी हितलाभ 2.अपंगता हितलाभ(अस्थायी अपंगता हितलाभ, स्थायी अपंगता हितलाभ व वर्धित बीमारी हितलाभ) 3. आश्रितजन हितलाभ 4. प्रसूति हितलाभ व 5. चिकित्सा हितलाभ से तो हम सब भली–भांति परिचित है व देशभर में व्याप्त करीब 4 करोड़ कर्मचारी व लगभग 12 करोड़ हितलाभ अधिकारी इन हितलाभों का समुचित उपयोग किसी न किसी रूप में जरूरत के अनुसार करते हैं। लेकिन कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा इनके अलावा अन्य हितलाभ भी प्रदान किये जाते है जिनके बारे में निगम में व्याप्त श्रमबल में जागरूकता का अभाव है। आइए इनके बारे में एक संक्षिप्त परिचय प्राप्त करते हैं

1.बेरोजगारी भत्ता– इस योजना के अंगर्तत फैक्ट्री बंद होने, छंटनी अथवा गैर रोजगार चोट के कारण स्थाई अपंगता से रोजगार की अस्वैच्छिक हानि व रोजगार जाने के कारण बोरोजगार हुए कर्मचारियों को निगम द्वारा कर्मचारी के पूरे जीवनकाल में 24 माह की अधिकतम अवधि के लिए पहले 12 माह औसत दैनिक मजदूरी भत्ता का 50 प्रतिशत व उसके बाद के 12 माह अर्थात 13वें से 24वें माह तक औसत दैनिक भत्ता का 25 प्रतिशत बेरोजगारी भत्ता दिए जाने का प्रावधान है। बशर्ते कि रोजगार क्षति से पूर्व कम से कम 3 वर्ष का उसके द्वारा अंशदान अदा किये गये हो। बेरोजगारी के दौरान बीमाकृत व्यक्ति खुद व परिवार के लिए बेरोजगारी की तिथि से 24 माह तक चिकित्सा हितलाभ के भी पात्र होगा।

2.सेवानिवृति हितलाभ– कोई बीमाकृत व्यक्ति जो कम से कम 5 वर्ष तक बीमाकृत व्यक्ति रहने के बाद सेवानिवृति आयु के पूरे होने पर या स्वैच्छिक सेवानिवृति योजना के तहत अवकाश लेने या समय पूर्व सेवानिवृति लेकर बीमायोग्य रोजगार छोड़ता है, तो वह एक वर्ष के लिए आंशिक अंशदान राशि 120/– रूपये के एकमुश्त भुगतान अर्थात प्रतिमाह 10/– रूपये व आवश्यक प्रमाण पत्र दिखाकर अपने लिए व अपने जीव साथी के लिए चिकित्सा हितलाभ प्राप्त कर सकता है।

3.विधवा के लिए भी चिकित्सा हितलाभ की सुविधा– क.रा.बी.निगम ने विगत कुछ वर्षो से किसी बीमाकृत व्यक्ति की रोजगार चोट में हुई मृत्यु के कारण विधवा हुई उनकी जीवनसाथी के लिए भी मात्र 120/– रूपये का वार्षिक भुगतान करके पूरे साल के लिए चिकित्सा हितलाभ प्राप्त कर सकती है।

4.प्रसव व्यय– बीमाकृत महिला अथवा बीमाकृत व्यक्ति की पत्नी को यदि प्रसव हेतु क.रा.बी. योजना के अंतर्गत आवश्यक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध ना होने की स्थिति में केवल 2 प्रसव तक प्रसव व्यय के रूप में 5000/– प्रति मामला नकद दितलाभ के रूप में देने का प्रावधान है।

5.अंत्येष्टि व्यय– बीमा योग्य रोजगार में प्रवेश के प्रथम दिन से ही किसी बीमाकृत व्यक्ति को उसके अंतिम संस्कार पर हुए व्यय के एवज में वास्तविक व्यय या अधिकतम 15000/– रूपये दिये जाने का प्रावधान है। यहां यह भी बताना आवश्यक है कि अगर कोई बीमाकृत व्यक्ति सिर्फ निगम से स्थाई अपंगता हितलाभ (पी.डी.बी.) प्राप्त कर रहा है, तो भी उसकी मृत्यु पर अंत्येष्टि व्यय उसके परिवार को देय है

6.व्यवसायिक प्रशिक्षण– रोजगार चोट के कारण 40 प्रतिशत से अधिक अपंगता की स्थिति में 45 वर्ष से कम उम्र के किसी बीमाकृत व्यकित को अगर व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु श्रम मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे किसी प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है तो उस बीमाकृत व्यक्ति को 123/– रुपये प्रतिदिन की दर से प्रशिक्षण तक निगम द्वारा दिये जाने का प्रवधान है।

7. शारीरिक पुनर्वास भत्ता– रोजगार चोट की वजह से अपंगता की स्थिति में बीमाकृत व्यक्ति को जब किसी कृत्रिम अंग केन्द्र (आर्टिफिसियल लिम्ब सेंटर) में भेजा जाता है तो उस केन्द्र तक आने जाने का खर्च, कृत्रिम अंग का खर्चा उस केन्द्र को तथा वहां केन्द्र मे दाखिल रहने तक औसत दैनिक वेतन का 100 प्रतिशत बीमाकृत व्यक्ति को भुगतान का प्रावधान है।

8.राजीव गांधी श्रमिक कल्याण योजना के अंतर्गत कौशल उन्नयन प्रशिक्षण– कारखाने के बंद होने, छंटनी या गैर रोजगार चोट की वजह से हुई स्थायी अपंगता के कारण रोजगार की अस्वैच्छिक हानि की स्थिति में और रोजगार क्षति से पूर्व कम से कम तीन वर्ष का उसके द्वारा अंशदान अदा किये होने पर उसे कम से कम दस सप्ताह या अधिकतम 6 माह तक के लिए कौशल उन्नयन प्रशिक्षण केन्द्र मनें पिरशिक्षण प्राप्त करने के ले प्रशिक्षण केन्द्र का पूरा फीस व वहां आने जाने का खर्चा निगम द्वारा देय होता है।

9. वाहन भत्ता– इसके अंतर्गत स्थायी अपंगता हितलाभ प्राप्त करने वाले हितलाभाधिकारी को साल में एक बार संबंधित शाखा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से जीवन प्रमाण पत्र जमा करने के ले 100/– रूपये नकद भुगतान किये जाने का प्रावधान है।

10.अतिविशिष्टता उपचार– बीमाकृत व्यक्ति व उसके परिवार के लिए विशेष देखरेख (सुपर स्पेशलिटी) हेतु पूरे भारत वर्ष में 1000 से अधिक टाई–अप अस्पतालों के माध्यम से रेफर आधार पर आधुनिक सूचीबद्ध चिकित्सा संस्थानो के द्वारा या कुछ क.रा.बी. अस्पताल या ई.एस.आई पीआईजीएमआर में उपलब्ध आंतरिक सुपर स्पेशिएलिटी सुविधाओं के माध्यम से प्रदान की जा रही है।वर्तमान में से सुपर सेपेशिलिटी ट्रीटमेंट के लिए पात्रता–बीमाकृत व्यक्ति को पंजीकरण की तिथि से छह महीने की लगातार सेवा होनी चाहिए तथा उस छह महीने में कम से कम 78 दिन का अंशदान देय हो, जबकि उसके परिवार के लिए बीमाकृत व्यक्ति की पंजीकरण की तिथि से कम से कम एक साल की सेवा पूरी होनी चाहिए तथा लगातार दो अंशदान अवधियों में 78–78 दिनों का अशदान प्राप्त होना चाहिए।

रसोई बागवानी की बढ़ती उपयोगिता

नीरज कुमार, सहायक

आज की भाग–दौड़ जिंदगी में अक्सर मन में एक संदेह रहता है कि हम जो खा रहे हैं, क्या वो बिल्कुल शुद्ध है? कहीं कुछ इसमे मिलावट तो नहीं! शहरों में रहने वाले लोगों की जिंदगी तो और भी बनावटी हो गई है। अब तो साक–सब्जी, अनाज, दूध से लेकर अंडे तक संश्लेषित और कृत्रिम मिलने लगे हैं। कुछ पैसों की लालच में हमें नकली और हानिकारक रासायनयुक्त चीजे परोस दी जाती है। हम जाने–अनजाने में इन चीजों को खाकर अपने स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा देते हैं। वैज्ञानिक शोध बताते है कि बाजार में मिलने वाले मिलावटी दूध को बनाने में यूरिया और कृत्रिम चावल और अंडे बनाने में प्लास्टिक का इस्तेमाल होता है। जोकि कहीं से भी मानव स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद नहीं है। इन हानिकारक खाद्य पदार्थों को खाकर एक स्वस्थ्य इंसान भी कुछ ही दिनों में बीमार हो सकता है। इन सभी चीजो से हम बचने के लिए अपने घर में प्रयोगशाला तो नहीं बना सकते है, परंतु एक बागीचा जरूर बना सकते है। हां! मैं बात कर रहा हूं एक ऐसे बगीचे की जिसमें घरेलू जरूरतों की लगभग सभी शाक–सब्जियों और फलों को उगाया जा सके। आजकल यह शहरों में "किचन गार्डेन" अर्थात "रसोई बगीचा" के नाम से काफी लोकप्रिय हो रहा है। लोग अपने जरूरत की फल–सब्जियां जैसे कि बैंगन, भिंडी, करेला, तुरई, कद्दू, बीन, पालक, धनिया, पुदीना, टमाटर, मिर्च, गाजर, मूली, गोभी, पपीता, अमरूद, आम, केले, अंगूर, अनार और नींबू आदि इन बगीचों में उपजाने लगे हैं। इसके के लिए काफी तकनीक और साजो–सामान की जरूरत नहीं होती, बल्कि जरूरत होती है सिर्फ कुछ गज जमीन और घर में इस्तेमाल होने वाले कुछ सामान की। आमतौर पर घर बनाते समय हम वाहन पार्किंग हेतु गैराज और फूलों की क्यारियों के लिए कुछ जमीन के टुकड़े छोड़ देते हैं। इन जमीन के टुकड़ों का इस्तेमाल इन बगीचो के निर्माण में किया जा सकता है। यह हमारे घर की सुंदरता के साथ–साथ, हमारे रसोई की स्वाद और हमारे मनोरंजन का साधन भी उपलब्ध कराता है। हमारे गृहणियों को भी घरेलू कार्यों से बचे समय टी.वी, और मोबाईल के बजाय प्रकृति के करीब गुजारने का समय मिलता है। रसोई बागवानी के लिए बहुत–सी चीजो की जरूरत नहीं होती है। हम अपने घरेलू सामानो का भी इस्तेमाल कर सकते है। जैसे मिट्टी को कुरेदने के लिए कलछे, चम्मच या कोई अन्य नुकीली चीज का इस्तेमाल। इसी तरह बीज बोने के लिए चम्मच, कांटे, स्क्रू ड्राईवर, चाकू व कोई अन्य नुकीली चीजों और खर–पतवार व पत्तियों की सफाई के लिए कैंची, चाकू और झाडू का इस्तेमाल कर सकते है। मिट्टी में खाद और पोषक तत्व के लिए घर में इस्तेमाल होने वाली चीजे जैसे चायपत्ती के अवशेष, शाक–सब्जियों के इस्तेमाल के बाद बचने वाले उसके अंश, फलों के छिलके व अवशेष आदि का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह मुफ्त की जैविक खाद है जो सेहत के लिए बहुत ही लाभकारी है। कैल्शियम और आयरन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वो के लिए अंडे के छिलके और केले के छिलके का इस्तेमाल कर सकते है। जिन लोगो के घरों में किचन गार्डेन के लिए पर्याप्त जगह नहीं हैं, उन्हें भी निराश होने की जरूरत नहीं। आप चाहे तो मकान की सबसे ऊपरी छत पर फल और सब्जियों को उगा सकते हैं। घर के इस्तेमाल में बचें डब्बे और बाल्टी को मिट्टी रखने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। आप चाहे तो इस काम के लिए प्लास्टिक की थैलियों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

हैं जो आपको किसी निकटवर्ती पौधशाला में मिल जाएगा। बहुवर्षीय पेड़ो के ग्राफ्टिंग पौधे लगा कर कुछ ही महीनों में अमरूद, आम, केले , अंगूर, अनार और नींबू जैसे बहुवर्षीय पेड़ो से फल पा सकते है। यह आपके घर की सुंदरता के साथ–साथ अपके सेहत का भी ख्याल रखेगा। किचन गार्डेन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसे बनाने में कोई अलग से प्रयास नहीं करना पड़ता है। यह घर में उपलब्ध जगहों और सामानों से भी बनाया जा सकता है। यह हमारे घरों को हरा–भरा रखकर वातावरण को शुद्ध रखकर हमारे सेहत का ख्याल रखता है और शाक–सब्जियों व फलों पर होने वाले खर्च को कम करके हमें आर्थिक रुप से मजबूत बनाता है। अर्थात तन–मन–धन तीनो का एक साथ फायदा। अगर हम सभी अपने–अपने मकान को किचन गार्डेन की अवधारना पर काम करते हुए सफल हो जाए, तो पर्यावरण से लड़ने के लिए हमें अलग से प्रयास करने की जरूत नहीं पड़ेगी। हमारे कंक्रीटों के जंगल धीरे–धीरे कब नखलीस्तान में तब्दील हो जाएंगे हमें पता ही नहीं चलेगा।

सेवा पुस्तिका का रख रखाव और आपका दायित्व

ज्ञान गौरव कुमार, ब.का. स्टाफ

सेवा पुस्तिका में किसी अधिकारी अथवा कर्मचारी के सम्पूर्ण कैरियर का रिकार्ड होता है। इसमें नौकरी के विभिन्न सोपानों की हर प्रविष्टियों का विवरण दर्ज होता है। जन्मतिथि, कार्यग्रहण, नियुक्ति, स्थानांतरण, पदोन्नति, वेतन, पारिवारिक सूची जैसे विवरण सेवा पुस्तिका में दर्ज होते हैं। स्पष्ट है कि यह किसी सेवारत अधिकारी अथवा कर्मचारी के लिए बहुत जरूरी दस्तावेज है। सेवानिवृति के उपरांत हितलाभ पाने के लिए बहुत हद तक सेवा पुस्तिका में दर्ज अपरिहार्य प्रविष्टियों की आवश्यकता होती है, जिसमें सेवा सत्यापन, वेतनवृद्धि की सूचना, जन्म तिथि आदि प्रविष्टियां प्रमुख है। कई बार ऐसा होता है कि सेवानिवृत्ति के समय किसी कर्मचारी की सेवा पंजिका में पंद्रह-बीस साल पीछे का किसी अवधि का सेवा सत्यापन की प्रविष्टि नहीं पाई जाती है, तो ऐसे में विकट समस्या उपस्थित हो जाती है। संबंधित सेवा सत्यापन सूचना के लिए कई कार्यालयों से पत्राचार किया जाता है, कई बार अपेक्षित सूचना नहीं मिलने की स्थिति में ग्रेच्युटी जैसी सेवानिवृत्ति हितलाभ में कटौती तक की जा सकती है। सवाल है कि आखिर ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए क्या किया जाए ? इसका सीधा सा एक ही समाधान है कि सभी अधिकारी अथवा कर्मचारी थोड़ी दिलचस्पी लेकर अपनी सेवा पुस्तिका में वर्ष के दौरान की गई सभी प्रविष्टियों की एक बार अवश्य जांच कर लें।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि सेवा पुस्तिका में जन्मतिथि, कार्यग्रहण, नियुक्ति, स्थानांतरण, पदोन्नति, वेतन, पारिवारिक सूची जैसे विवरण दर्ज होते हैं। अतः सभी संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों का यह दायित्व बनता है कि उपरोक्त प्रविष्टियों की भली-भांति जांच कर लें। वैसे तो प्रशासन शाखा द्वारा प्रत्येक वर्ष कर्मचारियों से को सेवा पुस्तिका देखने का आग्रह किया जाता है, लेकिन कई कर्मचारी अपनी सेवा पुस्तिका जांच करने की जहमत नहीं उठाते हैं, नतीजतन कई बार कोई प्रविष्टि छूटने की स्थिति में बाद में कई समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

सेवा पुस्तिका में निम्न प्रविष्टियों की अवश्य जांच की जानी चाहिए:-

१) बायोडाटाः सेवा पुस्तिका की पहले पृष्ठ में कर्मचारी का बुनियादी विवरण दर्ज होता है, जिसमें आपका नाम, जन्मतिथि, शैक्षणिक योग्यता, गृह नगर का पता आदि प्रमुख हैं। जिसे नवनियुक्त कर्मचारियों द्वारा अच्छी तरह जांच कर लेनी चाहिए।

२) नियुक्ति का विवरणः नवनियुक्त कर्मचारियों को अपनी सेवा पुस्तिका में नियुक्ति आदेश, नियुक्ति की तिथि व प्रकार आदि विवरण की जांच अवश्य कर लेनी चाहिए।

३) पदोन्नति का विवरणः पदोन्नत कर्मचारियों को पदोन्नति आदेश, पदोन्नति के उपरांत वेतन नियतन, कार्यग्रहण की तिथि की प्रविष्टि तथा इसे सक्षम पदाधिकारी द्वारा साक्ष्यांकन की जांच कर लेनी चाहिए।

४) पारिवारिक विवरणः सरकारी कर्मचारी की सेवा पंजिका में पारिवारिक विवरण को होना अपरिहार्य है। पारिवारिक सूची के अभाव में आश्रित परिजनों को पेंशन आदि का लाभ प्रदान करने में काफी असुविधा होती है।

५) नामांकनः सामूहिम बीमा योजना, मृत्यु सह सेवानिवृत्ति उपदान आदि हेतु नामांकन प्रपत्र की मूल प्रति सेवा पुस्तिका में रखी जानी चाहिए और संबंधित कर्मचारी को अपने हित में इसकी जांच अवश्य करनी चाहिए।

६) अवकाश विवरणः कर्मचारियों द्वारा उपभोग की गई छुट्टियां का विवरण भी सेवा पुस्तिका में दर्ज होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक छमाही में अर्जित अवकाश व अर्द्ध वेतन अवकाश कर्मचारी के अवकाश खाते में जोड़े जाते हैं, जिसे भी अवश्य देख लेना चाहिए।

७) अन्य विवरणः सामान्य भविष्य निधि संख्या, स्थानांतरण, कार्यग्रहण, स्थाईकरण आदि भी महत्वपूर्ण विवरण होते हैं, जिसकी भी नियमित जांच जरूरी है। इसके अतिरिक्त पदावनति, निलंबन, अवकाश यात्रा रियायत उपभोग की सूचना आदि की भी सेवा पुस्तिका में प्रविष्टि होती है, जिसे भी देख लेना चाहिए।

(पर्यावरण)

बीज बम

राजू कुमार, सहायक

आपने दिवाली के अवसर पर छोड़े जाने वाले कई पटाखों मसलन आलू बम, छुरछुरी बम, मुर्गा बम आदि के बम के बारे में तो सुना होगा, यहां तक कि आपने एटम बम के बारे में भी सुना होगा। पर क्या कभी ''बीज बम'' के बारे में सुना है? बीज बम की बात की जाए तो आपकों यह कुछ अटापटा–सा लगेगा। ''एक बीज भला बम कैसे बन सकता है?, तो इसका जवाब है, हां! पर्यावरण संतुलन के लिए बीज भी कुदरत का बम बन सकता है। ''हर वर्ष पर्यावरण दिवस और वृक्षारोपण सप्ताह आते हैं और हम उस उत्सव को उत्साह पूर्वक मनाकर भूल जाते है कि इसके अलावा भी हमारा पर्यावरण के प्रति कुछ दायित्व है। हमेशा की तरह समय का बहाना बनाकर इसे अनदेखा कर देते हैं। इसी गलती को सुधारने के लिए पर्यावरणविदों ने एक नई तरह का प्रयोग किया है जो पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला "बीज बम" के रुप में सामने आया है। "बीज बम" कुछ और नहीं बल्कि फल–फूलों के बीज को ही पोषक तत्वों से युक्त मिट्टी और कुछ रसायनो मे मिलाकर बनाया जाता है। इसे हम अपनी जेब या पर्स में रखकर कहीं भी ले जा सकते है। हम पैदल चलते–फिरते या फिर वाहनों में सवार होकर कोई भी उपर्युक्त जगह देखकर, जैसे कि बंजर भूमि, परती भूमि, पहाड की तराई, टीले, घास के मैदान, खेत–खलिहान, सुंदर बगीचे, और नदी किनारे,जहां चाहे कभी भी अपनी ईच्छानुसार इसे फेंक सकते हैं। इसके धमाके आपको तुरंत नही सुनाई देगा, इसके लिए थोड़ी प्रतीक्षा करनी होगी। पर जब भी यह फूटेगा, इसके अंदर से एक सुंदर कोंपल निकलेगा जिसकी छटा से पर्यावरण के मुख पर छायी प्रदूषण की झुरिंयों वाली कालिमा हट जाएगी। जब यह तरूणाई की अंगड़ाई लेगा तों बंजर जमीन, नंगे पहाड़ ऊसर खेत–खलिहान, झरने के ढलान, सूखी नदी के तट, घटियों की तलहट, सभी इसके हरे–हरे चादरों से ढक जाएंगे। पंछी इसके कंधो पर बैठकर प्रेम–प्रलाप का बसंत गीत गायेगें। भूमिगत जल के रूप में फौव्वारे प्रस्फूटित हो उठेंगे और फूलों की क्यारियां लहलहाने लगेगी। तपती और कड़–कड़ाती धूप फिर किसी को आंख नहीं दिखाएगी। घनघोर बारिश में मन फिर से बच्चा बनकर कागज की नाव छोड़ने को करेगा। पूरबा बयार चुपके से घर के चौखट पर दस्तक देगी और रोज रोज मोगरे की खुशबू में लपेटी खुशियों की पाती छोड़ जाएगी। नन्हें और सुन्दर जीव जंतु रैन बसेरे और खाने की तलाश में हमारे कंकीटों के बीहड़ो मे फिर नहीं खींचे चले आयेंगे। कहने को तो यह एक छोटा–सा बम है, पर इसके अंदर पूरी पर्यावरण को बदलने की ताकत छिपी है। इसके धमाके पूरी मानव सभ्यता की गणित बदलने की क्षमता रखते है।

(अध्यात्म)

खुश रहने के लाभ

सुखविंदर सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक

जो व्यक्ति भावनाओं को जितना लंबे समय तक काबू रखते हैं वह उतनी ही ज्यादा देर तक खुश रह सकते हैं। व्यक्ति की परिपक्वता उसके अपनी भवनाओं को काबू करने की क्षमता पर निर्भर होती है। जितना अधिक हम शांत रहेंगे उतना ही अधिक हम परिपक्व होंगे। यहां शांत रहने का मतलब गंभीर रहने से नही है। शांति का मतलब है सरोवर के जल की सतह की तरह। मन वैसा ही बनेगा जैसा हम अपने तन को बनाएंगे। और तन भी वैसा ही होगा जैसा हम में सोचेंगे। यानी तन और मन का रिश्ता डोरी और पतंग की तरह होती है। जितना डोर ढ़िली छोड़ोगे पतंग उतना दूर जाएगा। यदि किसी व्यक्ति का मन उदास है, तो उसका शरीर भला कैसे स्वस्थ्य रह सकता है। मन के अंतःस्थल में क्या चल रहा है, यह चेहरे के पटल स्पष्ट कर ही देती है। हम अपनी भावनाओं पर "पौरुष" प्राप्त कर नियंत्रण रखने में कामयाब हो सकते हैं। "पुरुषार्थ" का अर्थ सही मायने में तन और मन के खाते को अलग–अलग रखना। परिस्थितियों के अनुसार हमारे मन के अंतःस्थल में तरंगे उठती रहती है और यह कुछ समय के बाद स्वतः ही समाप्त भी हो जाती है। बिल्कुल उस सरोवर की तरह जिसमें पत्थर फेंकने पर ऊंची लहरदार तरंगे उत्पन्न होती है। परंतु उसे न छेड़े तो वह स्वतः ही समाप्त हो जाते है। हमारा मन वैसा ही होता है। विचारों की तरंगे उठने और शांत होने की क्रिया लगी रहती है। अगर हम इन तरंगो के साथ चहल–कदमी करेंगे, तो यह और भी बलवती हो जाएगीं। फिर इसे संभालना बहुत मुश्किल हो जाएग। मन में अच्छे–बुरे विचार आते ही रहते हैं, परंतु हमें इससे विचलित नही होना चाहिए। बल्कि राह में खड़े एक पथिक की भांति इन विचारों को आते–जाते देखना चाहिए। फिर यही विचार आपको हाय–हैलो बोलकर कब निकल जाएंगे आपको पता ही नही चलेगा। कई बार आप ऐसे लोगो से मिले होंगे जो दिखने में तो हट्टा–कट्टा लगता है, पर मानसिक रुप से कमजोर होता है। उन्हे संसारिक चिंताए बहुत जल्द घेर लेती है और वह संसारिक जीवन का आनंद नही ले पाते हैं। वे फिजुल के काल्पनिक भय, चिंता और तनाव में जीते है, जिसका वास्तविकता में कोई लेना देना नही होता और यह न कभी वास्तविक जीवन में घटित होता है। ऐसे लोग जरा–जरा सी बात पर भविष्य की काल्पनिक अंधकारमय घटनाओं के बारे में सोच–सोच अपने खुशहाल वर्तमान को भी बर्बाद करते रहते है। वे धीरे–धीरे निराशावादी हो जाते है और हमेशा जीवन के अदीप्त पक्ष को ही देखने लगते है, मन और तन के वेग को नियंत्रित न कर पाना। इसके लिए आवश्यक है कि हर हालत में अपना मनोबल और आत्मविशवास कायम रखें तभी तन–मन में चिंता नहीं घुसने देंगें। तथा चिंताओं को मन–मस्तिष्क से बाहर खदेड़ने में सफल हो सकेंगे। जैसे–जैसे हमारा मनोबल, आत्मविश्वास और खुश रहने की प्रवृति बढ़ेगी वैसै–वैसे हमारी सहनशक्ति भी बढ़ेगी और छोटी–मोटी कठिनाईयां हमें डगमगा नहीं सकेगी और हमारी हंसी–खुशी अधिक दमदार होकर अधिक समय तक कायम रहेगी।

हमें सदा ही खुश रहना चाहिए, और सदा अच्छा रहने की कामना करना चाहिए। हमें अपनी यादों के पिटारे को टटोल कर उसमें से अच्छे–अच्छे क्षणों को देखने चाहिए और उन्हें याद करके पुनः जीने की कोशिश करनी चाहिए। जब हम बार–बार दुख भरी घड़ियों को याद करते है तो इससे हमारे मन मस्तिष्क पर इन विचारों की लेप चढ़ जाती है, जो बिना घटित हुए भी आपके मन को अवसाद से भर देती है। दूसरी ओर जब हम हमारे जीवन के खुशनुमा पलो को याद करते है, तो वह चित्र पुनः सजीव होने लग जाती है और हमारा मन फिर से खिल उठता है हमें इसी की आवश्यकता है। फुरसत के क्षणों में इन सुखदायक पलों को पुनः जीना चाहिए। जितना हम इन्हें अधिक प्रसन्न होंगे।

जो व्यक्ति भावनाओं को जितना लंबे समय तक काबू रखते हैं वह उतनी ही ज्यादा देर तक खुश रह सकते हैं। व्यक्ति की परिपक्वता उसके अपनी भवनाओं को काबू करने की क्षमता पर निर्भर होती है। जितना अधिक हम शांत रहेंगे उतना ही अधिक हम परिपक्व होंगे। यहां शांत रहने का मतलब गंभीर रहने से नही है। शांति का मतलब है सरोवर के जल की सतह की तरह। मन वैसा ही बनेगा जैसा हम अपने तन को बनाएंगे। और तन भी वैसा ही होगा जैसा हम में सोचेंगे। यानी तन और मन का रिश्ता डोरी और पतंग की तरह होती है। जितना डोर ढ़िली छोड़ोगे पतंग उतना दूर जाएगा। यदि किसी व्यक्ति का मन उदास है, तों उसका शरीर भला कैसे स्वस्थ्य रह सकता है। मन के अंतःस्थल में क्या चल रहा है, यह चेहरे के पटल स्पष्ट कर ही देती है। हम अपनी भावनाओं पर "पौरुष" प्राप्त कर नियंत्रण रखने में कामयाब हो सकते हैं। "पुरुषार्थ" का अर्थ सही मायने में तन और मन के खाते को अलग–अलग रखना। परिस्थितियों के अनुसार हमारे मन के अंतःस्थल में तरंगे उठती रहती है और यह कुछ समय के बाद स्वतः ही समाप्त भी हो जाती है। बिल्कुल उस सरोवर की तरह जिसमें पत्थर फेंकने पर ऊंची लहरदार तरंगे उत्पन्न होती है। परंतु उसे न छेड़े तो वह स्वतः ही समाप्त हो जाते है। हमारा मन वैसा ही होता है। विचारों की तरंगे उठने और शांत होने की क्रिया लगी रहती है। अगर हम इन तरंगो के साथ चहल–कदमी करेंगे, तो यह और भी बलवती हो जाएगीं। फिर इसे संभालना बहुत मुश्किल हो जाएग। मन में अच्छे–बुरे विचार आते ही रहते

राजेश कुमार, नि.श्रे.लि.

स्वास्थ्य

स्वच्छ पेय जल

आपने अक्सर सुना होगा कि जल ही जीवन है। जल के बिना धरती पर जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है। धरती पर सभी सभ्यताएं ऐसी जगह फली–फूली जहाँ पर्याप्त मात्रा में पेय जल उपलब्ध थे। इतना महत्वपूर्ा होने के बावजूद भी अधिकांश लोगों को यह पता नही होता कि वे जो जल पी रहे होते है। वह पेय योग्य है अथवा नही। कुछ बातों का ध्यान रखकर हम पेय जल की शुद्धता को माप सकते है। मसलन जल की टीडीएस कितनी है ? और इसका पी.एच.(ph) स्तर क्या है? टीडीएस का अर्थ होता है–टोटल डिजोल्व सोलिड अर्थात कुल घुलित ठोस कण। पेय जल में टीडीएस के रुप में मुख्यः कैल्शियम, मैग्निशियम, पोटैशियम, सोडियम, बाईकार्बोनेट, क्लोराइड एवं सल्फेट घुला रहता है। इसकी अत्यधिक मात्रा जल को दूषित कर देती है। डब्ल्यु. एच.ओ.के
अनुसार पेय जल का टीडीएस 500 मिलीग्राम प्रति लिटर होना चाहिए। अगर यह 300 मिलीग्राम प्रति लिटर हो तो, अतिउत्त्म पेय जल माना जाता है बशर्ते कि इसमें चुना पत्थर की मात्रा न के बराबर हो। चुना मिश्रित जल की टीडीएस 200 मि.ली. ग्राम प्रति लि. पेय माना जाता है। इसी तरह शुद्ध जल स्वादहीन, रंगहीन, गंधहीन होता है और इस का पी.एच.(ची) 7 होता है। किसी भी घुलनशील पदार्थ की अम्लीयता और क्षारीयता की माप पी.एच.(ची) स्केल से ही किया जाता है। अगर जल की पी.एच.(ची) 7 से कम है तो वह अम्लीय हो जाती है। इसी तरह पी.एच.(ची) स्तर 7 से अधिक होने पर वह क्षारीय हो जाता है। अगर पेय जल ज्यादा अम्लीय या ज्यादा क्षारीय हो तो, स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पडता है।

राजू कुमार, सहायक

'माउंटेनमैन" दशरथ मांझी
एक जीवन कथा

दशरथ माँझी का जन्म सन् 1934 ई. में बिहार के गया जिले के गहलौर गाँव के एक गरीब दलित परिवार में हुआ था। उनका प्रारंभिक जीवन काफी कष्टमय रहा। बचपन में ही वे बंधुआ मजदूरी का शिकार हो गये, जो उनके पिता से साहूकारों का कर्ज न चुका पाने के कारण विरासत में मिली थी। वे खुले विचारों वाले आजाद पंछी थे, तो भला कब तक पिंजरे में कैद रहते। एक दिन वो चुपके से घर छोड़कर भाग गये और धनबाद शहर पहुंच गये। यहां उन्होंने कोयले के खादानों में काम करके बाकी के बचपन गुजार दिया। युवा होने पर वापस अपने गांव लौटे और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि सब कुछ बदल चुका है, बस एक चीज जो नहीं बदली, वो थी भूस्वामियों और मजदूरों के बीच का द्वंद्व। उनकी मां गुजर चुकी थी और पिता अब भी मजदूरी करके गुजारा कर रहे थें। संगी–साथी युवा हो चुके थे, पर उन्होंने भी अपने पिता के पेशे "मजदूरी" को अपना लिया। मस्तमौला मांझी को कब पड़ोस के गांव की एक सुंदर लड़की "फल्गुनी देवी(फगुनी)" से प्रेम हो गया पता ही नहीं चला। "फल्गुनी देवी" के परिवार इसके लिए राजी नहीं थे, परंतु उन्होंने पूरी दुनिया को दरकिनार करके, दशरथ मांझी से ही शादी रचायी।

काम की तलाश में दशरथ मांझी को अक्सर गहलौर के पहाड़ को पार करके आस–पास के गांव जाना पड़ता था। छोटी–मोटी काम के लिए अगर पड़ोस के गांव या कस्बा जाना हो तब भी उसे ऊंची पहाड़ की चढ़ाई करनी ही पड़ती थी। एक दिन इसी क्रम में उनकी गर्भवती पत्नी पहाड़ से फिसलकर नीचे गिर गई और गंभीर रूप से जख्मी हो गई। उन्हें ईलाज के लिए पास के कस्बा "वजीरगंज" ले जाया गया। जहां तक जाने के लिए काफी लंबा रास्ता तय करना पड़ा, क्योंकि गांव और कस्बे के बीच गहलौर का पहाड़ खड़ा था। डॉक्टरों ने उन्हें बचाने का बहुत प्रयास किया, परंतु उपचार में विलंब हो जाने के कारण "फाल्गुनी देवी" को बचाया नहीं जा सका ।

यह सदमा दशरथ मांझी को अंदर तक झकझोर दिया। यह घटना उन्हें इतना प्रभावित किया कि यहीं से उन्हें जीने का एक नया मकसद मिल गया । उनके मन में हरदम एक ही बात कौंधती थी कि अगर गांव से कस्बे तक के बीच की दूरी थोड़ी कम होती, तो कुछ समय और मिल जाता। और वो अपनी प्रिय को बचा लेता। अब वो पहाड़ का सीना चिरकर एक छोटा– सा रास्ता बनाना चाहते थे ताकि किसी और

दशरथ माँझी का जन्म सन् 1934 ई. में बिहार के गया जिले के गहलौर गाँव के एक गरीब दलित परिवार में हुआ था। उनका प्रारंभिक जीवन काफी कष्टमय रहा। बचपन में ही वे बंधुआ मजदूरी का शिकार हो गये, जो उनके पिता से साहूकारों का कर्ज न चुका पाने के कारण विरासत में मिली थी। वे खुले विचारों वाले आजाद पंछी थे, तो भला कब तक पिंजरे में कैद रहते। एक दिन वो चुपके से घर छोड़कर भाग गये और धनबाद शहर पहुंच गये। यहां उन्होंने कोयले के खादानों में काम करके बाकी के बचपन गुजार दिया। युवा होने पर वापस अपने गांव लौटे और यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि सब कुछ बदल चुका है, बस एक चीज जो नहीं बदली, वो थी भूस्वामियों और मजदूरों के बीच का द्वंद्व। उनकी मां गुजर चुकी थी और पिता अब भी मजदूरी करके गुजारा कर रहे थें। संगी–साथी युवा हो चुके थे, पर उन्होंने भी अपने पिता के पेशे "मजदूरी" को अपना लिया। मस्तमौला मांझी को कब पड़ोस के गांव की एक सुंदर लड़की "फल्गुनी देवी(फगुनी)" से प्रेम हो गया पता ही नहीं चला। "फल्गुनी देवी" के परिवार इसके लिए राजी नहीं थे, परंतु उन्होंने पूरी दुनिया को दरकिनार करके, दशरथ मांझी से ही शादी रचायी।

काम की तलाश में दशरथ मांझी को अक्सर गहलौर के पहाड़ को पार करके आस–पास के गांव जाना पड़ता था। छोटी–मोटी काम के लिए अगर पड़ोस के गांव या कस्बा जाना हो तब भी उसे ऊंची पहाड़ की चढ़ाई करनी ही पड़ती थी। एक दिन इसी क्रम में उनकी गर्भवती पत्नी पहाड़ से फिसलकर नीचे गिर गई और गंभीर रूप से जख्मी हो गई। उन्हें ईलाज के लिए पास के कस्बा "वजीरगंज" ले जाया गया। जहां तक जाने के लिए काफी लंबा रास्ता तय करना पड़ा, क्योंकि गांव और कस्बे के बीच गहलौर का पहाड़ खड़ा था। डॉक्टरों ने उन्हें बचाने का बहुत प्रयास किया, परंतु उपचार में विलंब हो जाने के कारण "फाल्गुनी देवी" को बचाया नहीं जा सका ।

यह सदमा दशरथ मांझी को अंदर तक झकझोर दिया। यह घटना उन्हें इतना प्रभावित किया कि यहीं से उन्हें जीने का एक नया मकसद मिल गया । उनके मन में हरदम एक ही बात कौंधती थी कि अगर

हिन्दी की विकास यात्रा

सुजीत कुमार, सहायक

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुरानी है। 9वीं सदीं के आस–पास अपभ्रंश भाषा से विकसित अवहट्ट भाषा को ही हिन्दी के उद्‌गम भाषा मानी जाती है। अवहट्ट भाषा को आधुनिक आर्य भाषा एवं अपभ्रंश भाषा के बीच की कड़ी मानी जाती है। यहीं से हिन्दी अपने मूल स्वरूप में आना प्रारंभ हुआ। हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया जाता है।

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) इसकी अवधि संवत् 1050 से 1375 ई. तक माना गया है।

2. पूर्व मध्य काल (भक्तिकाल) इसकी अवधि 1375 से 1700 ई. तक माना गया है। भक्तिरस के महान साहित्यकार इसी अवधि में हुए हैं।

3. उत्तर मध्य काल (रीतिकाल) यह अवधि 1700 से 1900 ई. के बीच का माना जाता है।

4. आधुनिक काल (गद्यकाल) यह सन् 1900 से 1984 तक के अवधि को माना जाता है। रामायण के रचयिता बाल्मिकी के आदि कवि कहा जाता है।

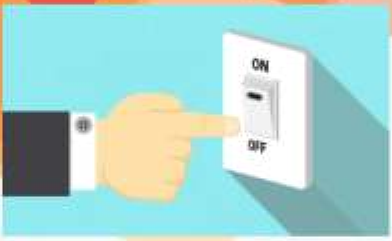

(पर्यावरण)

स्वीच ऑफ की महत्ता

राजू कुमार, सहायक

अक्सर हमलोग अपने घरों में बिना जरूरत के भी बिजली के उपकरण जैसे पंखा, बल्ब, टी.वी.,व ध्वनि उपकरण आदि चालू छोड़ देते हैं। हद तो तब हो जाती है। जब हम ठण्डे के मौसम में भी फ्रीज, पंखे और वातानुकूलित उपकरण का उपयोग करते है, जबकि हमें इन मौसम में इसकी कोई जरुरत ही नही होती है। अगर आप भी ऐसी आदतों के गुलाम हैं, तो एक बार रुकिये। फिर से सोचिए, कहीं कुछ गलत तो नही कर रहे आप ! आप सोच रहें होंगे कि "भला एक बल्ब को रात भर यूं ही छोड़ देने से या दिन में इस्तेमाल करने से किसी का क्या नुकसान हो सकता है? तो मैं आप को बता दूं कि आप बिल्कुल गलत हैं! चलिए, इसे एक उदाहरण द्वारा समझाने की कोशिश करते हैं। मान लीजिए कि आप पूरे साल एक 100 वाट का बल्ब इस्तेमाल करते हैं, यानी 0.1 किलोवाट का बल्ब आप 8,760 घंटे इस्तेमाल करते है। अगर कुल बिजली की खपत की बात की जाए तो यह होगी **0.1x8,760+876** किलोवाट प्रति वर्ष। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि घरों में इस्तेमाल होने वाले बिजली का उत्पादन जल विद्युत केन्द्र और ताप विद्युत केन्द्र आदि में ही होता है। देश की जरुरत का लगभग पचहत्तर प्रतिशत से ज्यादा विद्युत उत्पादन केवल ताप विद्युत केन्द्र (थर्मल पावर स्टेशन) से ही होता है। इन ताप विद्युत केन्द्र में बिजली उत्पादन के लिए ईंधन के रुप में कोयले का इस्तेमाल होता है। कुल उपयोग होने वाले से केवल 40 प्रतिशत ही बिजली का उत्पादन हो पाता है बाकी के 60 प्रतिशत भाग धुंआ व अन्य हानिकारक व्यर्थ कचरे के रुप में बाहर आ जाते है, जो अंततः वातावरण में ही घुल–मिल कर इसे दूषित करते है। दूषित वातावरण किसी के सेहत का कितना भला कर सकता है। यह हम सभी को भालि–भांति पता है। एक 100 वाट के बल्ब को पूरे साल जलाने के लिए जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है, उसका उत्पादक करने में इन थर्मल पावर स्टेशन को 325 किलोग्राम कोयले को जलाना पड़ता है। अर्थात हमारी लापरवाही से छोड़ा गया केवल एक बल्ब सालभर में 325 कि.ग्रा. कोयले की मात्रा को फूंक देती है। जरा सोचिए कि केवल एक बल्ब से इतने कोयले की खपत हो जाती है, तो अगर घर के सारे उपकरणें को इसमें शामिल कर लिया जाए, तो कोयले की खपत कितनी होगी। हम प्रतिदिन इतने कोयले फूंक देते है जितने कि हम वातावरण में सांस लेने के लिए पेड़–पौधे भी नहीं लगाते।

कमोवेश यही हाल लापरवाही से इस्तेमाल होने वाले पेयजल का भी है। जब भी हम बाथरुम में पानी के नल को खुला छोड़ देते हैं, तो यह भूल जाते हैं कि पेय जल का भंडार सीमित है, अगर इसे किफायत से इस्तेमाल नहीं करेंगे तो एक दिन यह भंडार खत्म हो जाएगा। पूरी दुनिया में जितना जल उपलब्ध है उसका केवल 2.5 से लेकर 2.75 प्रतिशत ही स्वच्छ पेय जल है बाकी के 97 प्रतिशत समुद्री जल है या फिर पेय योग्य नहीं हैं। कुल स्वच्छ पेय जल का भी अधिकांश हिस्सा ग्लेशियर में बर्फ के रुप में जमी है। हमारे पास मात्र 0.01 प्रतिशत से भी कम जल पेय के रूप में जलाशयों या भूमिगत जलस्त्रोत में उपलब्ध है। और यह जल भी हमारे दुरुपयोग के कारण खत्म होता जा रहा है। ऐसा अनुमान है कि दुनिया की सारी ग्लेशियर 40 वर्षों के भीतर समाप्त हो जाएंगी। तब गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। इसकी कल्पना मात्र से ही हमारे मन विचलित हो उठते है। मनुष्य जल के बिना दो–तीन दिन से ज्यादा जिंदा नही रह सकता है। फिर अगर सारे जलस्त्रोत सूख जाए तो क्या होगा? इस विनाशकारी घटनाओं के संकेत दिखने भी लगे हैं। ध्रुवीय प्रदेशों के हिमखण्ड जो लाखों वर्षों में नही पिघले, उन्हे मानव जनित वैश्विक तापमान ने कुछ ही दशकों में पिघला दिया। और यह सब अनुमान से बहुत पहले ही घटित हो रहा है। किसी ने कल्पना भी नही की होगी की एक छोटे से देश के आकार के हिमखण्ड टूटकर समुद्र में बह भी सकते है। दुनिया के सभी ग्लेशियर के बर्फ पिघल कर आधे से भी कम रह गये हैं। इन दिनों जिस तरह से पानी का बहुत ही बेरहमी से इस्तेमाल हो रहा है, उसे देखते हुए स्थिति कुछ ही दशकों में और भी भयावह हो जाएगी। हमारी आदत ऐसी हो गयी है कि जहां थोड़े से पानी से काम चल सकता था वहां बाल्टी के बाल्टी पानी उड़ेल देते हैं। घरो और वाहनों को प्रतिदिन साफ करने में हजारों लीटर पानी बहा देते हैं जबकि हम

अक्सर हमलोग अपने घरों में बिना जरूरत के भी बिजली के उपकरण जैसे पंखा, बल्ब, टी.वी.,व ध्वनि उपकरण आदि चालू छोड़ देते हैं। हद तो तब हो जाती है। जब हम ठण्डे के मौसम में भी फ्रीज, पंखे और वातानुकूलित उपकरण का उपयोग करते है, जबकि हमें इन मौसम में इसकी कोई जरुरत ही नही होती है। अगर आप भी ऐसी आदतों के गुलाम हैं, तो एक बार रुकिये। फिर से सोचिए, कहीं कुछ गलत तो नही कर रहे आप ! आप सोच रहें होंगे कि "भला एक बल्ब को रात भर यूं ही छोड़ देने से या दिन में इस्तेमाल करने से किसी का क्या नुकसान हो सकता है? तो मैं आप को बता दूं कि आप बिल्कुल गलत हैं! चलिए, इसे एक उदाहरण द्वारा समझाने की कोशिश करते हैं। मान लीजिए कि आप पूरे साल एक 100 वाट का बल्ब इस्तेमाल करते हैं, यानी 0.1 किलोवाट का बल्ब आप 8,760 घंटे इस्तेमाल करते है। अगर कुल बिजली की खपत की बात की जाए तो यह होगी **0.1x8,760+876** किलोवाट प्रति वर्ष। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि घरों में इस्तेमाल होने वाले बिजली का उत्पादन जल विद्युत केन्द्र और ताप विद्युत केन्द्र आदि में ही होता है। देश की जरुरत का लगभग पचहत्तर प्रतिशत से ज्यादा विद्युत उत्पादन केवल ताप विद्युत केन्द्र (थर्मल पावर स्टेशन) से ही होता है। इन ताप विद्युत केन्द्र में बिजली उत्पादन के लिए ईंधन के रुप में कोयले का इस्तेमाल होता है। कुल उपयोग होने वाले से केवल 40 प्रतिशत ही बिजली का उत्पादन हो पाता है बाकी के 60 प्रतिशत भाग धुंआ व अन्य हानिकारक व्यर्थ कचरे के रुप में बाहर आ जाते है, जो अंततः वातावरण में ही घुल–मिल कर इसे दूषित करते है। दूषित वातावरण किसी के सेहत का कितना भला कर सकता है। यह हम सभी को मालि–भांति पता है। एक 100 वाट के बल्ब को पूरे साल जलाने के लिए जितनी ऊर्जा की जरूरत होती है, उसका उत्पादक करने में इन थर्मल पावर स्टेशन को 325 किलोग्राम कोयले को जलाना पड़ता है। अर्थात हमारी लापरवाही से छोड़ा गया केवल एक बल्ब सालभर में 325 कि.ग्रा. कोयले की मात्रा को फूंक देती है। जरा सोचिए कि केवल एक बल्ब से इतने कोयले की खपत हो जाती है, तो अगर घर के सारे उपकरणें को इसमें शामिल कर लिया जाए, तो कोयले की खपत कितनी होगी। हम प्रतिदिन इतने कोयले फूंक देते है जितने कि हम वातावरण में सांस लेने के लिए पेड़–पौधे भी नहीं लगाते।

कमोवेश यही हाल लापरवाही से इस्तेमाल होने वाले पेयजल का भी है। जब भी हम बाथरुम में पानी के नल को खुला छोड़ देते हैं,

(प्रौद्योगिकी)

आईएफएससी एवं एमआईसीआर संख्या

हरीश शर्मा, उच्च श्रेणी लिपिक

बैंकिंग कार्यों में इस्तेमाल होने वाले आईएफएससी (IFSC) संख्या का अर्थ होता है भारतीय वित्त प्रणाली कोड(इंडियन फाइनेंसियल सिस्टम कोड)। चेक एवं ऑनलाइन राशि के हस्तांतरण व अन्य लेन–देन में इस्तेमाल होने वाली यह एक महत्त्वपूर्ण संख्या है। इसमें 11 अंक होता हैं जिसका प्रथम चार अंक बैंक का नाम, पांचवा अक्षर शून्य एवं आखिर के छः अंक बैंक का वास्तविक स्थिति को दर्शातें है।

इसी तरह एमआईसीआर (MICR) का भी बैकिंग लेन–देन व राशि हस्तांतरण खासकर चेक के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसका पूर्ण रूप होता है चुम्बकीय स्याही अक्षर पहचान (मैग्नेटिक इंक कैरेक्टर रिकॉगनिशन)। इसमें कुल 14 अक्षरांक होते हैं जिसमें से मुख्यतः 3 अंक कोड और आखिर के तीन अंक बैंक की शाखा का कोड होते हैं। इस संख्या को पढ़ने के लिए एक विशेष तरह के मशीन का इस्तेमाल किया जाता है। यह फर्जी लेन–देन पर अंकुश लगाने का एक बढ़िया साधन है।

क्यूआर कोड एवं बार कोड

सिद्धार्थ नागपाल, उच्च श्रेणी लिपिक

आजकल दैनिक इस्तेमाल में आने वाले हर समान के डब्बे पर क्यूआर कोड और बार कोड अंकित होता है। कम जगह में सूचनाओं को संग्रहित करने का यह सबसे बढ़िया साधन है। क्यूआर कोड का अर्थ होता है। क्यूक रेसपॉस आर्थात तुरंत प्रतिक्रिया कोड। क्यूआर कोड सफेद पृष्ठभूमि पर काले रंग के चौकोर आकार के व्यवस्थित अंको और चिह्नों का पैटर्न होता है। यह कोड जल्द पठनीय और बड़ी संग्रहन क्षमता के कारण काफी लोकप्रिय होता जा रहा है। इसे पढ़ने के लिए स्कैनर मशीन का इस्तेमाल किया जाता है। आजकल यह मोबाइल के जरिए भी स्कैन करके पढ़ा जा रहा है। यह क्यूआर कोड को वेबसाइट के अनुरुप उपयोगी फॉर्म में बदलकर पैतृक यूआरएल जो जोड़कर संग्रहित डाटा प्राप्त करने में मदद करते हैं।

बार कोड का इस्तेमाल भी क्यूआर कोड के तरह ही होता है। क्यूआर कोड में जहां चौकोर पैटर्न का इस्तेमाल किया जाता है वही बारकोड में समानांतर लंबवत् रेखाओं का पैटर्न इस्तेमाल किया जाता है। रेखाओं के आपस में बीच की दूरी एवं उनकी मोटाई का इस्तेमाल कर उपयोगी जानकारी को संग्रहित किया जाता है। इसे ऑप्टिकल मशीन के जरिए पढ़ा जाता है।

पर्यटन

भारत की विलासी ट्रेन

दीपक भाटिया, उच्च श्रेणी लिपिक

यूँ तो भारत पूरी दुनियां में भीड़–भाड़ वाली ट्रेन और किफायती किराया के लिए जाना जाता है। वहीं दूसरी ओर भारत में ऐसे भी ट्रेन है जिसकी किराया लाखों मे है। इतना ही नहीं इसकी शान–शौकत किसी पांच सितारा होटल से कम नहीं है। इसमे व्यायामशाला, मनोरंजन गृह, इंटरनेट, स्पा, आकर्षक बार, रेस्टोरेंट जैसी तमाम सुविधा उपलब्ध है। इसमे बैठने वाले यात्रियों को राजसी ठाठ का अहसास दिलाया जाता है। इस तरह के ट्रेन भारतीय रेलवे द्वारा सैलानियों को देश के प्राचीन धरोहर, शहर, गांव और प्रमुख पर्यटन स्थल को करीब से देखने और समझझे के लिए संचालित की जा रहीं है। भारत में इस तरह के पांच लग्जरी ट्रेन– पैलेस ऑन व्हील्स, महराजा एक्सप्रेस, डेक्कन ओडिसी, रॉयल राजस्थान व गोलडेन चौरियॅट का संचालन भारतीय रेलवे द्वारा किया जाता है जिसमें सबसे पुरानी और सर्वाधिक लोकप्रिय ट्रेन है पैलस ऑन व्हील्स। इसे 26 जनवरी 1982 को गणतंत्रता दिवस के अवसर शुरू किया गया था। यह दुनिया की चौथी विलासी ट्रनों में से एक है। यह सन 2009 ई. तक देश की एकमात्र लग्जरी ट्रेन थी। इसकी किराया अक्टूबर से मार्च तक 2.75 लाख एवं अप्रैल से सितंबर तक 2 लाख रुरये है। वहीं महाराजा एक्सप्रेस की किराया 3 रातों के लिए 2.75 लाख से 8.25 लाख रुपये तक है। जबकि 7 रातों का किराया 4.5 लाख सें 16 लारव रुपये तक है। डेक्कन ओडिसी का किराया 2.90 लाख से लेकर 4.35 लाख रुपये तक है। महाराष्ट्र के प्रमुख पार्यटन स्थल का परिभ्रमण इससे किया जा सकता है। इसके अलावा राजस्थान रॉयल का किराया 3 लाख से 4.15 लाख रुपय तक है। यह राजस्थान के प्राचीन धरोहरों को करीब से दर्शन कराती है। गोल्डेन चौरियॅट का किराया 1.62 लाख से 2.85 लाख रुपये तक है। यह दक्षिण भारत के प्रुमख पार्यटन स्थलों का परिभ्रमण कराती है। इसे एशिया के प्रमुख विलासी ट्रेन के पुरस्कार से भी नवाजा गया है।

आलेख

हिंदी साहित्य में दैनिक समाचार पत्रों की उपादेयता एवं प्रासंगिकता : एक विवरण

• कृष्ण वीर सिंह सिकरवार

समाचार पत्र अथवा अखबार समाज और देश में हो रही घटनाओं पर आधारित एक प्रकाशन है । जिसके द्वारा हमें, घर बैठे ही देश–विदेश में होने वाली घटनाओं का पता रोजाना चल जाता है । समाचार पत्रों की सहायता से अब दुनिया छोटी हो गई है। इन समाचार पत्रों में मुख्यतः ताजी घटनाएँ, खेल–कूद, व्यक्तित्व, राजनीति, विज्ञापन, पर्व–त्यौहार, धर्म–अध्यात्म, साहित्य एवं सम–सामयिक जानकारियाँ सस्ते कागज पर छपी होती है । इन समाचार पत्रों का मूल्य भी प्रायः कम ही होता है । समाचार पत्र प्रायः दैनिक होते है, लेकिन कुछ समाचार पत्र साप्ताहिक, पाक्षिक भी होते है । अधिकतर समाचार पत्र स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय विषयों पर केन्द्रित होते है । आज शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार का संचार के साधनो में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। इन समाचार पत्रों का हमारी जिन्दगी में कितना महत्वपूर्ण योगदान है, यह इस बात से समझा जा सकता है कि हममें से कई ऐसे पाठक होंगे जिनको अगर प्रातःकाल समाचार पत्र पढ़ने को न मिले तो वे बैचेन हो उठते हैं, कई पाठक तो सुबह की चाय ही समाचार पत्र पढ़ने के साथ–साथ पीते है । सम्पूर्ण अखबार देख लेने के बाद ही वे अन्य कोई कार्य हाथ में लेते है । अगर किसी दिन समाचार पत्र लेट आये या न आये उस दिन उनकी मनोदशा का स्वतः ही अंदाजा लगाया जा सकता है । किसी भी कार्य में उनका मन नही लगता। कहने का तात्पर्य है कि आज हमारे जीवन में समाचार पत्र जिदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है । जिसे एक बार देखे बिना हम किसी अन्य दूसरे कार्य में दिलचस्पी नहीं लेते है।

इन समाचार पत्रों का इतिहास देखें तो हमें पता चलता है कि विश्व का सबसे पहला समाचार पत्र लगभग 1300 वर्ष पूर्व चीन में शुरू हुआ था। इसका नाम 'चिंग पाओ' था जिसका अर्थ होता है–'राजधानी का समाचार'। इस समाचार पत्र द्वारा सरकार मुख्य–मुख्य घटनाओं की खबर जनता तक पहुँचाती थी। विश्व का सर्वप्रथम दैनिक समाचार पत्र 'मॉर्निंग पोस्ट' था, जो वर्ष 1762 में लंदन से छपना शुरू हुआ था। इसके बाद वर्ष 1785 में लंदन से ही 'दि टाइम्स, 'लंदन' नामक अखबार शुरू हुआ, जो आज भी छपता है। भारत में सबसे पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' के नाम से 29 जनवरी 1780 से छपना शुरू हुआ था। बाद में इसका नाम 'इंग्लिश मैन' कर दिया गया था । विश्व में आज रोज लगभग सौ करोड़ से अधिक लोग अखबार खरीदते हैं। केवल रूस में दस हजार से अधिक तरह के समाचार पत्र छपते हैं, जिन्हें 20 करोड़ से भी अधिक लोग पढ़ते हैं ।

एक आंकड़े के मुताबिक भारत में 15 हजार से अधिक आई.एस.एस.एन. वाले जर्नल और शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। भारत दुनिया में सर्वाधिक पंजीकृत पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाला देश है। चीन के बाद दुनिया भर में दूसरे स्थान पर सर्वाधिक प्रतियाँ भारत से ही प्रकाशित हो रही है । 31 मार्च 2014 तक देश में लगभग 94067 पत्र–पत्रिकाएँ पंजीकृत थें। इनमें से 8155 आवधिक और शेष 12511 दैनिक प्रकाशन है । इनमें हिंदी भाषा की पत्र–पत्रिकाएँ सर्वाधिक है ।

आज भारत में अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं में भी समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। 30 मई 1826 को पं0 युगुल किशोर शुक्ल ने देवनागरी में प्रथम हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन आरंभ किया था। इस समाचार पत्र का शाब्दिक अर्थ है 'उगता सूर्य'। अपने नाम के अनुरूप ही उदंत मार्तण्ड हिंदी की समाचार दुनिया के सूर्य के समान ही था लेकिन कानूनी कारणों एवं ग्राहकों के पर्याप्त सहयोग न देने के कारण 19 दिसंबर 1827 को युगुल किशोर शुक्ल का उदंत मार्तण्ड का प्रकाशन बंद करना पड़ा। इसके ठीक बाद 10 मई, 1829 को 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ । इसके बाद वर्ष 1868 तक अनेक हिंदी पत्र प्रकाशित होने लगे। 19 वीं शताब्दी 'अमर उजाला' 7 राज्य, 1 केन्द्रशासित प्रदेश के साथ 20 संस्करण में प्रकाशित होने वाला महत्त्वपूर्ण पत्र है । यह पत्र 'मनोरंजन' परिशिष्ट में सप्ताह की किताबें, कहानी, कविता, यात्रा, पर्यटन, स्वाद गली, कथा पहेली आदि के तहत महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है ।

दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ, गाजियाबाद, नोयडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद से प्रकाशित होने वाला महत्वपूर्ण दैनिक समाचार पत्र है 'नवभारत टाइम्स' जो रविवारीय अंक में नई किताबें, अन्तरंग एवं स्पेशल स्टोरी शीर्षक से महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित करता है । 'पंजाब केसरी' पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, जम्मू–कश्मीर से एक साथ प्रकाशित होता है। इस पत्र के रविवारीय अंक में साहित्य सुगंध, ग्लैमर जगत, पुस्तक परिचय, कविता, बालकथा, हँसी का खजाना, विविधा आदि के तहत लोकप्रिय सामग्री इस पत्र की लोकप्रियता में चार चाँद लगा देती है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित होने वाला प्रमुख दैनिक समाचार पत्र है 'पत्रिका' । यह समाचार पत्र कई राज्यों में 'राजस्थान पत्रिका' के नाम से भी प्रकाशित होता है । यह समाचार पत्र चार अन्य सहायक परिशिष्ट का भी प्रकाशन करता है जिनमें प्रमुख है 'परिवार', 'फुर्सत में' 'हेल्थ', 'मी नेस्ट' आदि । परिवार पत्रिका में व्यंग्य,

समाचार पत्र अथवा अखबार समाज और देश में हो रही घटनाओं पर आधारित एक प्रकाशन है । जिसके द्वारा हमें, घर बैठे ही देश–विदेश में होने वाली घटनाओं का पता रोजाना चल जाता है । समाचार पत्रों की सहायता से अब दुनिया छोटी हो गई है। इन समाचार पत्रों में मुख्यतः ताजी घटनाएँ, खेल–कूद, व्यक्तित्व, राजनीति, विज्ञापन, पर्व–त्यौहार, धर्म–अध्यात्म, साहित्य एवं सम–सामयिक जानकारियाँ सस्ते कागज पर छपी होती है । इन समाचार पत्रों का मूल्य भी प्रायः कम ही होता है । समाचार पत्र प्रायः दैनिक होते है, लेकिन कुछ समाचार पत्र साप्ताहिक, पाक्षिक भी होते है । अधिकतर समाचार पत्र स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय विषयों पर केन्द्रित होते है । आज शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार का संचार के साधनो में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। इन समाचार पत्रों का हमारी जिन्दगी में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान है, यह इस बात से समझा जा सकता है कि हममें से कई ऐसे पाठक होंगे जिनको अगर प्रातःकाल समाचार पत्र पढ़ने को न मिले तो वे बैचेन हो उठते हैं, कई पाठक तो सुबह की चाय ही समाचार पत्र पढ़ने के साथ–साथ पीते है । सम्पूर्ण अखबार देख लेने के बाद ही वे अन्य कोई कार्य हाथ में लेते है । अगर किसी दिन समाचार पत्र लेट आये या न आये उस दिन उनकी मनोदशा का स्वतः ही अंदाजा लगाया जा सकता है । किसी भी कार्य में उनका मन नही लगता। कहने का तात्पर्य है कि आज हमारे जीवन में समाचार पत्र जिदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है । जिसे एक बार देखे बिना हम किसी अन्य दूसरे कार्य में दिलचस्पी नहीं लेते है।

इन समाचार पत्रों का इतिहास देखें तो हमें पता चलता है कि विश्व का सबसे पहला समाचार पत्र लगभग 1300 वर्ष पूर्व चीन में शुरू हुआ था। इसका नाम 'चिंग पाओ' था जिसका अर्थ होता है–'राजधानी का समाचार'। इस समाचार पत्र द्वारा सरकार मुख्य–मुख्य घटनाओं की खबर जनता तक पहुँचाती थी। विश्व का सर्वप्रथम दैनिक समाचार पत्र 'मॉर्निंग पोस्ट' था, जो वर्ष 1762 में लंदन से छपना शुरू हुआ था। इसके बाद वर्ष 1785 में लंदन से ही 'दि टाइम्स, 'लंदन' नामक अखबार शुरू हुआ, जो आज भी छपता है। भारत में सबसे पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' के नाम से 29 जनवरी 1780 से छपना शुरू हुआ था। बाद में इसका नाम 'इंग्लिश मैन' कर दिया गया था । विश्व में आज रोज लगभग सौ करोड़ से अधिक लोग अखबार खरीदते हैं। केवल रूस में दस हजार से अधिक तरह के समाचार पत्र छपते हैं, जिन्हें 20 करोड़ से भी अधिक लोग पढ़ते हैं ।

एक आंकड़े के मुताबिक भारत में 15 हजार से अधिक आई.एस.एस.एन. वाले जर्नल और शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। भारत दुनिया में सर्वाधिक पंजीकृत पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाला देश है। चीन के बाद दुनिया भर में दूसरे स्थान पर सर्वाधिक प्रतियाँ भारत से ही प्रकाशित हो रही है । 31 मार्च 2014 तक देश में लगभग 94067 पत्र–पत्रिकाएँ पंजीकृत थें। इनमें से 8155 आवधिक और शेष 12511 दैनिक प्रकाशन है । इनमें हिंदी भाषा की पत्र–पत्रिकाएँ सर्वाधिक है ।

आज भारत में अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं में भी समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। 30 मई 1826 को पं0 युगुल किशोर शुक्ल ने देवनागरी में प्रथम हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन आरंभ किया था। इस समाचार पत्र का शाब्दिक अर्थ है 'उगता सूर्य'। अपने नाम के अनुरूप ही उदंत मार्तण्ड हिंदी की समाचार दुनिया के सूर्य के समान ही था लेकिन कानूनी कारणों एवं ग्राहकों के पर्याप्त सहयोग न देने के कारण 19 दिसंबर 1827 को युगुल किशोर शुक्ल का उदंत मार्तण्ड का प्रकाशन बंद करना पड़ा। इसके ठीक बाद 10 मई, 1829 को 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ । इसके बाद वर्ष 1868 तक अनेक हिंदी पत्र प्रकाशित होने लगे। 19 वीं शताब्दी

'अमर उजाला' 7 राज्य, 1 केन्द्रशासित प्रदेश के साथ 20 संस्करण में प्रकाशित होने वाला महत्त्वपूर्ण पत्र है । यह पत्र 'मनोरंजन' परिशिष्ट में सप्ताह की किताबें, कहानी, कविता, यात्रा, पर्यटन, स्वाद गली, कथा पहेली आदि के तहत महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है ।

दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ, गाजियाबाद, नोयडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद से प्रकाशित होने वाला महत्वपूर्ण दैनिक समाचार पत्र है 'नवभारत टाइम्स' जो रविवारीय अंक में नई किताबें, अन्तरंग एवं स्पेशल स्टोरी शीर्षक से महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित करता है । 'पंजाब केसरी' पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, उतर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, जम्मू–कश्मीर से एक साथ प्रकाशित होता है। इस पत्र के रविवारीय अंक में साहित्य सुगंध, ग्लैमर जगत, पुस्तक परिचय, कविता, बालकथा, हँसी का खजाना, विविधा आदि के तहत लोकप्रिय सामग्री इस पत्र की लोकप्रियता में चार चाँद लगा देती है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित होने वाला प्रमुख दैनिक समाचार पत्र है 'पत्रिका' । यह समाचार पत्र कई राज्यों में 'राजस्थान पत्रिका' के नाम से भी प्रकाशित होता है । यह समाचार पत्र चार अन्य सहायक परिशिष्ट का भी प्रकाशन करता है जिनमें प्रमुख है 'परिवार', 'फुर्सत में' 'हेल्थ', 'मी नेस्ट' आदि । परिवार पत्रिका में व्यंग्य, काव्यांजलि, कथा पहेली तथा खानपान इसके नियमित स्तंभ है । हेल्थ में स्वास्थ्य सबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है । मी नेस्ट युवाओं का मार्गदर्शन करती महत्वपूर्ण पत्रिका है । फुर्सत में खास किताब, संस्मरण, लघुकथा, बच्चों का साहित्य आदि सामग्री

समाचार पत्र अथवा अखबार समाज और देश में हो रही घटनाओं पर आधारित एक प्रकाशन है । जिसके द्वारा हमें, घर बैठे ही देश–विदेश में होने वाली घटनाओं का पता रोजाना चल जाता है । समाचार पत्रों की सहायता से अब दुनिया छोटी हो गई है। इन समाचार पत्रों में मुख्यतः ताजी घटनाएँ, खेल–कूद, व्यक्तित्व, राजनीति, विज्ञापन, पर्व–त्यौहार, धर्म–अध्यात्म, साहित्य एवं सम–सामयिक जानकारियाँ सस्ते कागज पर छपी होती है । इन समाचार पत्रों का मूल्य भी प्रायः कम ही होता है । समाचार पत्र प्रायः दैनिक होते है, लेकिन कुछ समाचार पत्र साप्ताहिक, पाक्षिक भी होते है । अधिकतर समाचार पत्र स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय विषयों पर केन्द्रित होते है । आज शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार का संचार के साधनो में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। इन समाचार पत्रों का हमारी जिन्दगी में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान है, यह इस बात से समझा जा सकता है कि हममें से कई ऐसे पाठक होंगे जिनको अगर प्रातःकाल समाचार पत्र पढ़ने को न मिले तो वे बैचेन हो उठते हैं, कई पाठक तो सुबह की चाय ही समाचार पत्र पढ़ने के साथ–साथ पीते है । सम्पूर्ण अखबार देख लेने के बाद ही वे अन्य कोई कार्य हाथ में लेते है । अगर किसी दिन समाचार पत्र लेट आये या न आये उस दिन उनकी मनोदशा का स्वतः ही अंदाजा लगाया जा सकता है । किसी भी कार्य में उनका मन नही लगता। कहने का तात्पर्य है कि आज हमारे जीवन में समाचार पत्र जिदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है । जिसे एक बार देखे बिना हम किसी अन्य दूसरे कार्य में दिलचस्पी नहीं लेते है।

इन समाचार पत्रों का इतिहास देखें तो हमें पता चलता है कि विश्व का सबसे पहला समाचार पत्र लगभग 1300 वर्ष पूर्व चीन में शुरू हुआ था। इसका नाम 'चिंग पाओ' था जिसका अर्थ होता है–'राजधानी का समाचार'। इस समाचार पत्र द्वारा सरकार मुख्य–मुख्य घटनाओं की खबर जनता तक पहुँचाती थी। विश्व का सर्वप्रथम दैनिक समाचार पत्र 'मॉर्निंग पोस्ट' था, जो वर्ष 1762 में लंदन से छपना शुरू हुआ था। इसके बाद वर्ष 1785 में लंदन से ही 'दि टाइम्स, 'लंदन' नामक अखबार शुरू हुआ, जो आज भी छपता है। भारत में सबसे पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' के नाम से 29 जनवरी 1780 से छपना शुरू हुआ था। बाद में इसका नाम 'इंग्लिश मैन' कर दिया गया था । विश्व में आज रोज लगभग सौ करोड़ से अधिक लोग अखबार खरीदते हैं। केवल रूस में दस हजार से अधिक तरह के समाचार पत्र छपते हैं, जिन्हें 20 करोड़ से भी अधिक लोग पढ़ते हैं ।

एक आंकड़े के मुताबिक भारत में 15 हजार से अधिक आई.एस.एस.एन. वाले जर्नल और शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। भारत दुनिया में सर्वाधिक पंजीकृत पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाला देश है। चीन के बाद दुनिया भर में दूसरे स्थान पर सर्वाधिक प्रतियाँ भारत से ही प्रकाशित हो रही है । 31 मार्च 2014 तक देश में लगभग 94067 पत्र–पत्रिकाएँ पंजीकृत थें। इनमें से 8155 आवधिक और शेष 12511 दैनिक प्रकाशन है । इनमें हिंदी भाषा की पत्र–पत्रिकाएँ सर्वाधिक है ।

आज भारत में अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं में भी समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। 30 मई 1826 को पं0 युगुल किशोर शुक्ल ने देवनागरी में प्रथम हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन आरंभ किया था। इस समाचार पत्र का शाब्दिक अर्थ है 'उगता सूर्य'। अपने नाम के अनुरूप ही उदंत मार्तण्ड हिंदी की समाचार दुनिया के सूर्य के समान ही था लेकिन कानूनी कारणों एवं ग्राहकों के पर्याप्त सहयोग न देने के कारण 19 दिसंबर 1827 को युगुल किशोर शुक्ल का उदंत मार्तण्ड का प्रकाशन बंद करना पड़ा। इसके ठीक बाद 10 मई, 1829 को 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ । इसके बाद वर्ष 1868 तक अनेक हिंदी पत्र प्रकाशित होने लगे। 19 वीं शताब्दी

'अमर उजाला' 7 राज्य, 1 केन्द्रशासित प्रदेश के साथ 20 संस्करण में प्रकाशित होने वाला महत्त्वपूर्ण पत्र है । यह पत्र 'मनोरंजन' परिशिष्ट में सप्ताह की किताबें, कहानी, कविता, यात्रा, पर्यटन, स्वाद गली, कथा पहेली आदि के तहत महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है ।

दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ, गाजियाबाद, नोयडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद से प्रकाशित होने वाला महत्वपूर्ण दैनिक समाचार पत्र है 'नवभारत टाइम्स' जो रविवारीय अंक में नई किताबें, अन्तरंग एवं स्पेशल स्टोरी शीर्षक से महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित करता है । 'पंजाब केसरी' पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, जम्मू–कश्मीर से एक साथ प्रकाशित होता है। इस पत्र के रविवारीय अंक में साहित्य सुगंध, ग्लैमर जगत, पुस्तक परिचय, कविता, बालकथा, हँसी का खजाना, विविधा आदि के तहत लोकप्रिय सामग्री इस पत्र की लोकप्रियता में चार चाँद लगा देती है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित होने वाला प्रमुख दैनिक समाचार पत्र है 'पत्रिका' । यह समाचार पत्र कई राज्यों में 'राजस्थान पत्रिका' के नाम से भी प्रकाशित होता है । यह समाचार पत्र चार अन्य सहायक परिशिष्ट का भी प्रकाशन करता है जिनमें प्रमुख है 'परिवार', 'फुर्सत में' 'हेल्थ', 'मी नेस्ट' आदि । परिवार पत्रिका में व्यंग्य, काव्यांजलि, कथा पहेली तथा खानपान इसके नियमित स्तंभ है । हेल्थ में स्वास्थ्य सबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है । मी नेस्ट युवाओं का मार्गदर्शन करती महत्वपूर्ण पत्रिका है । फुर्सत में खास किताब, संस्मरण, लघुकथा, बच्चों का साहित्य आदि सामग्री प्रकाशित की जाती है।

समाचार पत्र अथवा अखबार समाज और देश में हो रही घटनाओं पर आधारित एक प्रकाशन है । जिसके द्वारा हमें, घर बैठे ही देश–विदेश में होने वाली घटनाओं का पता रोजाना चल जाता है । समाचार पत्रों की सहायता से अब दुनिया छोटी हो गई है। इन समाचार पत्रों में मुख्यतः ताजी घटनाएँ, खेल–कूद, व्यक्तित्व, राजनीति, विज्ञापन, पर्व–त्यौहार, धर्म–अध्यात्म, साहित्य एवं सम–सामयिक जानकारियाँ सस्ते कागज पर छपी होती है । इन समाचार पत्रों का मूल्य भी प्रायः कम ही होता है । समाचार पत्र प्रायः दैनिक होते है, लेकिन कुछ समाचार पत्र साप्ताहिक, पाक्षिक भी होते है । अधिकतर समाचार पत्र स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय विषयों पर केन्द्रित होते है । आज शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार का संचार के साधनो में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। इन समाचार पत्रों का हमारी जिन्दगी में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान है, यह इस बात से समझा जा सकता है कि हममें से कई ऐसे पाठक होंगे जिनको अगर प्रातःकाल समाचार पत्र पढ़ने को न मिले तो वे बैचेन हो उठते हैं, कई पाठक तो सुबह की चाय ही समाचार पत्र पढ़ने के साथ–साथ पीते है । सम्पूर्ण अखबार देख लेने के बाद ही वे अन्य कोई कार्य हाथ में लेते है । अगर किसी दिन समाचार पत्र लेट आये या न आये उस दिन उनकी मनोदशा का स्वतः ही अंदाजा लगाया जा सकता है । किसी भी कार्य में उनका मन नही लगता। कहने का तात्पर्य है कि आज हमारे जीवन में समाचार पत्र जिदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है । जिसे एक बार देखे बिना हम किसी अन्य दूसरे कार्य में दिलचस्पी नहीं लेते है।

इन समाचार पत्रों का इतिहास देखें तो हमें पता चलता है कि विश्व का सबसे पहला समाचार पत्र लगभग 1300 वर्ष पूर्व चीन में शुरू हुआ था। इसका नाम 'चिंग पाओ' था जिसका अर्थ होता है–'राजधानी का समाचार'। इस समाचार पत्र द्वारा सरकार मुख्य–मुख्य घटनाओं की खबर जनता तक पहुँचाती थी। विश्व का सर्वप्रथम दैनिक समाचार पत्र 'मॉर्निंग पोस्ट' था, जो वर्ष 1762 में लंदन से छपना शुरू हुआ था। इसके बाद वर्ष 1785 में लंदन से ही 'दि टाइम्स, 'लंदन' नामक अखबार शुरू हुआ, जो आज भी छपता है। भारत में सबसे पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' के नाम से 29 जनवरी 1780 से छपना शुरू हुआ था। बाद में इसका नाम 'इंग्लिश मैन' कर दिया गया था । विश्व में आज रोज लगभग सौ करोड़ से अधिक लोग अखबार खरीदते हैं। केवल रूस में दस हजार से अधिक तरह के समाचार पत्र छपते हैं, जिन्हें 20 करोड़ से भी अधिक लोग पढ़ते हैं ।

एक आंकड़े के मुताबिक भारत में 15 हजार से अधिक आई.एस.एस.एन. वाले जर्नल और शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। भारत दुनिया में सर्वाधिक पंजीकृत पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाला देश है। चीन के बाद दुनिया भर में दूसरे स्थान पर सर्वाधिक प्रतियाँ भारत से ही प्रकाशित हो रही है । 31 मार्च 2014 तक देश में लगभग 94067 पत्र–पत्रिकाएँ पंजीकृत थें। इनमें से 8155 आवधिक और शेष 12511 दैनिक प्रकाशन है । इनमें हिंदी भाषा की पत्र–पत्रिकाएँ सर्वाधिक है ।

आज भारत में अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं में भी समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। 30 मई 1826 को पं० युगुल किशोर शुक्ल ने देवनागरी में प्रथम हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' का प्रकाशन आरंभ किया था। इस समाचार पत्र का शाब्दिक अर्थ है 'उगता सूर्य'। अपने नाम के अनुरूप ही उदंत मार्तण्ड हिंदी की समाचार दुनिया के सूर्य के समान ही था लेकिन कानूनी कारणों एवं ग्राहकों के पर्याप्त सहयोग न देने के कारण 19 दिसंबर 1827 को युगुल किशोर शुक्ल का उदंत मार्तण्ड का प्रकाशन बंद करना पड़ा। इसके ठीक बाद 10 मई, 1829 को 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ । इसके बाद वर्ष 1868 तक अनेक हिंदी पत्र प्रकाशित होने लगे। 19 वीं शताब्दी

'अमर उजाला' 7 राज्य, 1 केन्द्रशासित प्रदेश के साथ 20 संस्करण में प्रकाशित होने वाला महत्त्वपूर्ण पत्र है । यह पत्र 'मनोरंजन' परिशिष्ट में सप्ताह की किताबें, कहानी, कविता, यात्रा, पर्यटन, स्वाद गली, कथा पहेली आदि के तहत महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती है ।

दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ, गाजियाबाद, नोयडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद से प्रकाशित होने वाला महत्वपूर्ण दैनिक समाचार पत्र है 'नवभारत टाइम्स' जो रविवारीय अंक में नई किताबें, अन्तरंग एवं स्पेशल स्टोरी शीर्षक से महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित करता है । 'पंजाब केसरी' पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, उतर प्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, जम्मू–कश्मीर से एक साथ प्रकाशित होता है। इस पत्र के रविवारीय अंक में साहित्य सुगंध, ग्लैमर जगत, पुस्तक परिचय, कविता, बालकथा, हँसी का खजाना, विविधा आदि के तहत लोकप्रिय सामग्री इस पत्र की लोकप्रियता में चार चाँद लगा देती है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गुजरात तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और दिल्ली से प्रकाशित होने वाला प्रमुख दैनिक समाचार पत्र है 'पत्रिका' । यह समाचार पत्र कई राज्यों में 'राजस्थान पत्रिका' के नाम से भी प्रकाशित होता है । यह समाचार पत्र चार अन्य सहायक परिशिष्ट का भी प्रकाशन करता है जिनमें प्रमुख है 'परिवार', 'फुर्सत में' 'हेल्थ', 'मी नेस्ट' आदि । परिवार पत्रिका में व्यंग्य, काव्यांजलि, कथा पहेली तथा खानपान इसके नियमित स्तंभ है । हेल्थ में स्वास्थ्य सबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है । मी नेस्ट युवाओं का मार्गदर्शन करती महत्वपूर्ण पत्रिका है । फुर्सत में खास किताब, संस्मरण, लघुकथा, बच्चों का साहित्य आदि सामग्री

आलेख

साइकिलनामा

मुकेश कुमार, सहायक

हमलोगों में से बहुतेरे के घर पर पड़ी होगी एक साइकिल। कोने में पड़ी साइकिल बड़ी हसरत से घर के हर सदस्य को निहारती है कि काश इनमे से कोई बाहर मुझे भी आपने साथ सैर के लिए ले चले। 21वीं सदी का जमाना है, मोबाइल नेटवर्क भी 5वीं पीढ़ी की दहलीज पर है । गति के इस युग मे धीमी चलने वाले यंत्र की नई पीढ़ी के लिए क्या उपयोगिता है?

बेशक आज सरपट तेज दौड़ने वाली गड़ियों की भरमार हैं। ये गाडियां लक्जरी हैं, तेज हैं, समय बचाने वाली हैं। जिसके आगे साइकिल निहायत पुराने की तकनीक से लैस पुराने जमाने की चीज लगती है। कारें तेज भागती आपका समय बचाती है, समाज में आपका स्टेटस सिंबल बढ़ाती है, वहीं साइकिल की सवारी आपको कंजुस, दकियानुसी तक का लांक्षण झोलने को विवश कर सकती है।

साइकिल को लेकर भले ही कुछ लोगों में पूर्वाग्रह हो, लेकिन इसके बेहिसाब फायदों से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। बेशक साइकिल की गति कारों से धीमी है, मगर यही धीमापन हमें अनगिनत फायदों से रु–ब–रु कराता है। तेज कारों के बरक्स सड़कों पर रेंगती साइकिल हमें आपपास के आबोहवा के करीब लाती है। फूलों से लदे अमलतास, गुलमोहर को आपके संज्ञान में लाती है। फुटपाथ पर फटे कपड़े में सो रहे किसी मजदूर की हालात से आपका साबका कराती है। रोजमर्रा की कई जरूरी चीजें बेच कर अपना पेट पाल रहे किसी औरत के जीवन के जद्दोजहद को दिखाकर आपको जीना सीखाती है। रेहड़ी वाले से किसी गृहिणी की तकरार आपको गुदगुदा सकती है। यह भी संभव है कि इसकी धीमी चाल आपको नॉस्टेल्जिक बना दे। विगत की स्मृतियों में गोता लगा दे। लेकिन तेज रफ्तार फेरारी की सवारी में इसका अनुभव संभव नही है। इन गाड़ियों की सवारियों की दृष्टिपटल पर तो यह दृश्य किसी बिजली की मानिंद उभरता है और अनदेखा सा झटपट गायब हो जाता है।

गाड़ियां वातावरण को जहरीला करने के लिए बदनाम है । देश का आयात बिल बढाने को कसूरवार है । लेकिन बेचारी साइकिल के साथ ऐसा नहीं है । गाड़ियां तेल पीकर चलती है, तो साइकिल इंसान का पसीना पीकर । गाड़ियों को शायद प्रकृति भी देखना न चाहती हो, लेकिन साइकिल का खुले ह्रदय से चहुंओर स्वागत है । शहरें गाड़ियों के बल पर चलता है । शहर की भीड़–भाड़ वाले सड़को पर नियाहत मासूमियत से रेंगती साइकिल का जेहन इस डर से भरा रहता है कि कहीं किसी बदमिजाज गाड़ी का शिकार न हो जाए, कोई बाहुबली वाहन उसके परखच्चे न उड़ा दे। जबकि शहरों के उलट गांवों की रानी है साइकिलें। गलियों में सरपट भागती है । कीचड़ से सनी गलियाँ से यूं गुजरती है जैसे किसी इंसान की भाग्य की रेखा रच रही हो । गृहस्थ की बोरिया अपनी पीठ पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाती है । अक्सरहां आपको यह भी देखने को मिल जाए कि कोई सज्जन अपनी सकुचाई पत्नी को साइकिल पर बिठा कर मेला घूमने चल पड़ा हो । ग्रामीण जीवन के सुख–दुख से भरे हर पल का साक्षी है साइकिल ।

साइकिल की महत्ता यहीं नहीं खत्म हो जाती। आधुनिक भारत में महिला सशक्तिकरण का वाहन बनकर उभरी है साइकिल। बिहार जैसे राज्यों में स्कूल की बालिकाओं को साइकिल प्रदान किए जाने के कारण उनकी कक्षा में उपस्थिति बढ़ी है। पढ़ाई के प्रति लड़कियों में रुझान बढ़ा है, बालिका शिक्षा के इस बदलाव का श्रेय साईकिल को ही जाता है।

साइकिल के इस पहलू से शायद ही आप वाकिफ होगें कि यह आपकी सेहत का भी हर प्रकार से ख्याल रखती है। चिकित्सकों का कहना है कि यह आपको कई प्रकार के रोगों से सुरक्षित रखती है। बताया जाता है कि सप्ताह में केवल 42 मील साइकिल चलाने से आपके हृदय रोग का खतरा कम हो जाता है। जोड़ों के दर्द, मधुमेह, उच्च रक्ताचाप से छुटकारा मिलता है, मानसिक तनाव कम

साइकिलनामा

साइकिल रखे सेहत का ख्याल

हमलोगों में से बहुतेरे के घर पर पड़ी होगी एक साइकिल। कोने में पड़ी साइकिल बड़ी हसरत से घर के हर सदस्य को निहारती है कि काश इनमे से कोई बाहर मुझे भी आपने साथ सैर के लिए ले चले। 21वीं सदी का जमाना है, मोबाइल नेटवर्क भी 5वीं पीढ़ी की दहलीज पर है । गति के इस युग मे धीमी चलने वाले यंत्र की नई पीढ़ी के लिए क्या उपयोगिता है?

बेशक आज सरपट तेज दौड़ने वाली गड़ियों की भरमार हैं। ये गाडियां लक्जरी हैं, तेज हैं, समय बचाने वाली हैं। जिसके आगे साइकिल निहायत पुराने की तकनीक से लैस पुराने जमाने की चीज लगती है। कारें तेज भागती आपका समय बचाती है, समाज में आपका स्टेटस सिंबल बढ़ाती है, वहीं साइकिल की सवारी आपको कंजुस, दकियानुसी तक का लांक्षण झोलने को विवश कर सकती है।

साइकिल को लेकर भले ही कुछ लोगों में पूर्वाग्रह हो, लेकिन इसके बेहिसाब फायदों से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। बेशक साइकिल की गति कारों से धीमी है, मगर यही धीमापन हमें अनगिनत फायदों से रु–ब–रु कराता है। तेज कारों के बरक्स सड़कों पर रेंगती साइकिल हमें आपपास के आबोहवा के करीब लाती है। फूलों से लदे अमलतास, गुलमोहर को आपके संज्ञान में लाती है। फुटपाथ पर फटे कपड़े में सो रहे किसी मजदूर की हालात से आपका साबका कराती है। रोजमर्रा की कई जरूरी चीजें बेच कर अपना पेट पाल रहे किसी औरत के जीवन के जद्दोजहद को दिखाकर आपको जीना सीखाती है। रेहड़ी वाले से किसी गृहिणी की तकरार आपको गुदगुदा सकती है। यह भी संभव है कि इसकी धीमी चाल आपको नॉस्टेल्जिक बना दे। विगत की स्मृतियों में गोता लगा दे। लेकिन तेज रफ्तार फेरारी की सवारी में इसका अनुभव संभव नही है। इन गाड़ियों की सवारियों की दृष्टिपटल पर तो यह दृश्य किसी बिजली की मानिंद उभरता है और अनदेखा सा झटपट गायब हो जाता है।

गाड़ियां वातावरण को जहरीला करने के लिए बदनाम है । देश का आयात बिल बढाने को कसूरवार है । लेकिन बेचारी साइकिल के साथ ऐसा नहीं है । गाड़ियां तेल पीकर चलती है, तो साइकिल इंसान का पसीना पीकर । गाड़ियों को शायद प्रकृति भी देखना न चाहती हो,

कहानी

जीने का नजरिया

मुकेश कुमार, सहायक

जीवन में खालीपन, सूनापन क्या है। यह कोई सीमा से पूछे। कहने को तो जीवन में आज सीमा को सभी सुख–सुविधाएं उपलब्ध हैं, लेकिन इसके बावजूद भी वह अधूरेपन की शिकार है। सीमा बैंक अधिकारी है। अच्छी तनख्वाह पाती है। शहर के पॉश इलाके में बढ़िया कोठी है। कार है, घर पर नौकर–चाकर है। ऊपर से देखें तो काफी खुशहाल लगती है, जिसे देखकर किसी को भी रश्क हो सकता है लेकिन कुछ ऐसा है कि जिस वजह से वह अंदर –अंदर ही घुटती जा रही है।

बहुत ही कम समय में सीमा ने अपने मां–बाप को खो दिया था। फिर उसके चाचा ने उसका लालन–पालन किया, लेकिन अनमने ढंग से। मां–बाप के जिस प्यार की उम्मीद उसने चाचा–चाची से की थी, वह उसे मयस्सर नहीं हो सका, तिस पर घर का सारा काम करने के बाद भी उसे चाची की जली–कटी व तानें, गालियां भी सुनने पड़ते। कभी किसी मां की गोद में बच्चे को खेलते देखती, तो अनायास ही उसकी ऑख नम हो जाती।

सीमा के जीवन में अपनेपन, स्नेह और मुकम्मल सहारे का अभाव था, लेकिन इसके बावजूद भी सीमा के अंदर कुछ ऐसा था, जो उसे जीवन बेदर्द थपेड़ों और असहनीय झंझावातों से लड़नें का साहस देता था– वो थी नियति से लडनें की उसकी अटूट शक्ति। यह सीमा का जुझारूपन ही था, जो उसे आगे बढ़ने का सहारा देता था। पढ़ने में वह काफी मेधावी थी। मैट्रिक परीक्षा से लेकर एम.ए. तक की परीक्षा में वह अव्वल ही आती थी। बी.ए. के फाइनल ईयर की परीक्षा देने से पहले ही सीमा की चाची ने शादी की बात चलानी शुरू कर दी थी। चाची ने उसके लिए जो लड़का ढूंढा था, वो कोई सुकुमार, सौंदर्य का धनी युवक नहीं था, बल्कि बस सटैंड के बाहर फल बेचने वाला एक अधेड़ था। सीमा को जब यह पता चला तो वह इसका विरोध करने लगी। रात गहराती, तो वह काफी रोती। गीली ऑखों से आसमान को घंटों निहारती। सोचती अगर उसके मां– बाप होते तो उसे यह दिन नहीं देखने पड़ते।

जब सीमा जिद पर अड़ गई तो उसके चाचा–चाची ने उसे घर से निकाल दिया। फिर सीमा ट्यूशन पढ़ाकर अपनी पढ़ाई जारी रखी। एम.ए. की परीक्षा में यूनिवर्सिटी टॉपर रही और स्वर्ण पदक भी प्राप्त की। हालांकि सीमा आगे पढ़ना चाहती थी, लेकिन चाह कर भी वह ऐसा नहीं कर पाई, क्योंकि ट्यूशन से प्राप्त मामूली आय से संघर्ष कर पाना मुश्किल हो रहा था। नतीजतन वह प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने में लग गई।

कहा जाता है कि किस्मत भी मेहनती व साहसी लोगों का साथ देती है। उसने कम समय में ही प्रतियोगी परीक्षाा में सफलता प्राप्त करके बैंक में अधिकारी के रूप नौकरी हासिल कर ली थी। बैंक अधिकारी बनते ही सीमा की जिंदगी में काफी तेजी से बदलाव आए। कल तक जिस चीज को हसरत की निगाह से देखती थी, वह आज उसकी मुट्ठी में थीं। पड़ोस के लोग उसे कल तक हिकारत की निगाह से देखते थे, आज उनकी ऑखों में सीमा के लिए सम्मान था।

कार्यालय में सीमा को अपने ऐक सहकर्मी से प्यार हो गया था, वह स्थानांतरित होकर कुछ दिन पहले ही दूसरे शहर सें आया था। यह प्यार जल्द ही शादी में बदल गई। जीवन में हो रहे तेजी से बदलाव से सीमा अभिभूत थी और उसे उम्मीद थी कि शादी के बाद उसकी दुनिया बदलने वाली है। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। रवि से उसे उम्मीद थी कि वह उसके सपनों का इंसान होगा। मां–बाप के जिस प्यार के लिए आजीवन भटकी, वह उसे रवि से मिल जाएगा। लेकिन ऐसा हो न सका। रवि को सीमा से नही बल्कि उसकी हर माह मिलने वाली मोटी सैलरी से प्यार था, सीमा को जब रवि की नीयत का पता चला, तो वह लगभग टूट सी गई।

सीमा को लगा कि समय के साथ सब कुछ बदल जाऐगा और रवि की पैसे की हर मांग को बेहतर भविष्य की उम्मीद में आंख मूंदकर पूरी करने लगी। समय बदला पर रवि का लक्षण नहीं बदला, तो सीमा सतर्क हो गई और रवि की पूरी निगरानी करने लगी। सोचती रवि को तो खुद अच्छी सैलरी मिल रही है, तो वह इतने पैसे का करता आखिर क्या है? अभी ज्यादा समय नही बीता था कि रवि के स्याह

सच्चाई से सीमा को दो–चार होना पड़ गया। सीमा रवि की दूसरी बीवी थी, वह पहले से ही शादी–शुदा था। सीमा से शादी का नाटक के पीछे पैसों का लालच था।

रवि का यह घिनौना रुप सीमा को तोड़ने के लिए काफी था। पह चाहती तो रवि को इस धोखे के लिए उसे जेल भेज सकती थी, लेकिन वह चाहकर भी ऐसा नही कर सकी। कयोंकि वह रवि को जेल भेजकर उसके निर्दोष बच्चों का प्रताड़ित नही करना चाहती थी। यह भी था कि रवि उसका पहला प्यार था, लेकिन रवि से रिश्तें तोडने में वह बिल्कुल भी समय नहीं गंवाई।

सीमा के जीवन रूपी नखलीस्तान में खुसगवार बासंती बयार अचानक ही उससे छिटक कर दूर चली गई थी। वह जिस खालीपन से अपने जीवन की शुरूआत की थी, आज फिर वह वहीं थी। जीवन में बिना बुलाऐ इतने बड़े धोखे से वह टूट चुकी थी। घंटों दफतर में खामोश बैठी रहती, किसी से बात नही करती। कल तक चिड़ियो के मानिंद चहचहाने वाली सीमा शून्य में कहीं खो गई थी। रीत गई थी। उसकी हालत को देखकर ऐसा लगता कि बूचड़खाने की वह जानवर है,जिसे कुछ पल में कत्ल किया जाना हो।

जीवन चलने का नाम है। कहा गया है कि कोई भी सुख हो या दुख कभी स्थाई नही होता। जीवन के बेहिसाब दुख, उदासी, खालीपन को ढो रही सीमा ने गजलों व किताबों में अपनी नई दुनिया ढूंढ ली थी गमगीन गजलें व उदास कविताएं पढ़ना उसका शगल हो गया। निराला की "दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूं जो नहीं कही" उसकी प्रिय कविता थी, जिसे वह हजारों दफा पढ़ चुकी थी।

सीमा कविताओं में अपना जीवन ढूंढने लगी। कविताएं उसे हिम्मती बढ़ाती उम्मीदे जगाती। कल्पनाओं में गोता लगवाती। स्मृतियों में खो जाने देती। उसे लगता, उदासी हर इंसान के जीवन की साम्यता है। और यही उदासी, बेचैनी, सुनापन, दुख, वेदना सीमा के आज रचनात्मक हथियार थें। पन्नों में वह जीवन के हर रागों को उड़ेलने लगी। अपने विगत के अनुभव को तुकबंदी करके कविता का रूप देने लगी। फिर धीरे–धीरे गंभीर लेखने की बढ़ गई। सीमा को जिन्दगी में जिस गर्माहट और उमंगो की दरकार थी, वह आज उसे मयस्सर हो चुका था।

सीमा की कविताएं धड़ल्ले से हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाओं में अपनी जगह बनाने लगी। दो साल के भीतर उसकी दो कविता संग्रह प्रकाशित हो गए। साहित्यिक जगत में सीमा की कविताओं की चर्चा होने लगी। लेखन के क्षेत्र में उसने अपनी एक अलग पहचान बना ली थी। कई संस्थानों द्वारा लेखन के क्षेत्र में सीमा के योगदान को देखते हुए उसे पुरस्कार के लिए नामित भी किया जाने लगा।

आज सीमा अपनी पीछे की जिन्दगी को पलटकर देखती है, तो सिहर सी जाती है। जिस खालीपन, सूनेपन उदासी, अवसाद, वेदना को उसने अपनी नियति मान ली थी, उसी ने उसके जीवन के नए दरवाजे खोले थो। दरअसल जीवन में दुख, तकलीफ जैसी कोई चीजे होती ही नही है। बल्कि यह आपके जीवन को देखने का नजरिया होता है।

ऋषि का कर्ज

नीलम, अधीक्षक

देवगर के राजा विश्वकेतु को शिकार खेलने का शैक था। एक दिन वे अपने सिपाहियों के साथ शिकार खेलने के लिए जंगल में गये। शिकार खेलने में इतने मग्न हो गये कि उन्हे पता ही नहीं चला कि कब रात हो गई। उनकी ईच्छा रात को ही जंगल मे पड़ाव डालकर विश्राम करने की हुई। एक अच्छी जगह का चुनाव कर उन्होने अपने सिपाहियों से कहा कि ''इस जगह के पेड़–पौधो को साफ करो, और मेरे विश्राम की व्यवस्था करों। ''राजा की बात सुनकर सभी सिपाहयों का दल शांत हो गया। उस जंगल के बारे में ऐसी अफवाहें थी कि वहां के पेड़–पौधो भी इंसान की तरह बाते करते है। अगर कोई उन्हें नुकसान पहंचाता है, तो वह भी इंसान को नुकसान पहुंचाता है। एक सिपाही ने राजा को यह बात समझाने की कोशिश की ''क्यों एक रात के लिए पेड़–पौधे को नुकसान पहुंचाए? आज रात हमलोग पेड़ पर ही मचान बनाकर गुजार लेंगे''। राजा विश्वकेतु यह सुनकर क्रोधित हो गये। उन्होने खुद ही तलवार उठाकर इधर–उधर पौधे और झाड़ियों को काटने लगे। उनकी तलवार पेड़ के एक तने से जा टकराई। चोट लगते ही पेड़ से एक आवाज आई'' मुझे मत काटो। मै हवा का पेड़ हूं। काटोगे तो हवा बंद हो जाएगी।''

राजा विश्वकेतु अहम में बोला–''हुं! हवा बंद हो जाएगी? जैसे पूरे जंगल में एक तुम ही पेड़ हो हवा देने के लिए। ''इतना कहकर उन्होंने दोबारा जोरदार तलवार चलाई।

राजा ने जेसे ही दुबारा तलवार चलाई, जोरो की आवाज के साथ हवा का धूल भरा एक बवंडर उठा। हवा इतनी प्रदूषित हो गई कि इसमें सांस लेने में भी सभी को दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था। सभी का दम घुटने लगा। प्राण वायु की कमी महसूस होने लगी। राजा के साथ–उसके दल के सभी लोगो की सांसे अटकने लगी और आंखों सें पानी आने लगा।

राजा ने धीमी स्वर में अपने सिपहसालार को कहा,'' मेरा दम घुट रहा है, मुझे बचाओं।'' राजा के अंगरक्षकों ने उन्हें जंगल से निकाल कर खुले मैदान में एक ऋषि के आश्रम के पास ले आए। आश्रम में एक ऋषि विश्राम कर रहे थे। सिपाहियों ने उन्हे जगाया और पूरी घटना के बारे में बताया। ऋषि यह सुनकर मुस्कुराएं और बोले राजा की तबियत ठीक करनें में उनकी मदद करुंगा, परंतु मेरी एक शर्त है। सभी चौक गयें कि पता नहीं ऋषि क्या शर्त रख दे।

'' डरो नहीं, मैं बहुत बड़ी चीज नहीं मागूंगा। मै तुम लोगो को शुद्ध हवा और पानी दूंगा। और बदले में मुझे भी यही चाहिए। वचन दो कि तुम उसे लौटाओगे।.''
ऋषि की बात सुनकर राजा ने हामी भर दी। फिर ऋषि अपने कुटिया में गये और वहां से एक औषधि लेकर आये और शुद्ध जल के साथ मिला दिया। ऋषि ने राजा के सिरहाने को सहारा देते हुए उठाकर बैठा दिया और राजा को एक औषधि का पेय देते हुए कहा,'' स्वास्थ्य लाभ प्रप्त करेंगे।''

ऋषि की यह बात सुनकर राजा उस पेय को एक झटके में ही पी गया। कुछ मिनटो के बाद अपने

अंदर परिवर्तन महसूस किया। अब राजा खुली हवा में जोरो की सांस ले रहा था और उसके शिथिल शरीर में फिर से जान आ गई। यह देख अखेट दल के सभी सदस्यों में खुशी की लहर दौड़ गई। कुछ ही घंटे में राजा पूर्णतः ठीक हो गया और चलने फिरने लगा। फिर वहां से राजा अपने दल के साथ चलने लगे। ऋषि ने उन्हें आवाज देकर रोका, '' अरे कहां चल दिए सभी। अपना वचन याद नहीं।''

पलटकर राजा ने जवाब दिया,'' हां याद है। राजमहल पहुंचते ही सोने के घड़े में शुद्ध जल भरवा कर भिजंवा दूंगा। आप इसकी चिंता न करों।

'' पर शुद्ध जल के साथ–साथ हवा भी तो लौटाने है, जो आपको ठीक करने में खर्चा किया। ''ऋषि ने उतर दिया।

राजा उलझन में पड़ गया। अब वह भला हवा का कर्ज कैसे चुकाए? उसने खुद को असहाय महसूस किया और महात्मा से विनती करते हुए कहा,'' मुनिवर आप महान है। मैं एक साधारण–सा इंसान भला आपके हवा का कर्ज कैसे चुका सकता हूं। कृपया आप ही मार्गदर्शन करें।

महात्मा ने उन्हें समझाया,'' हम सभी प्रणियों को जीने का पूरा हक है। फिर चाहे पेड़–पौधे और जंगली जानवर ही क्यों न हो। जीने का हक तो उन्हें भी बराबर ही है। इसलिए शिकार की आदत छोड़कर पेड़–पौधे लगाओ। अपने पूरे राज्य में इतने पेड़ लगाओं कि वह हरियाली की चादर से ढ़क जाए। लोगों को इसके लिए प्रोत्साहित करो। अगर आपने एक भी पेड़ की तरुण अवस्था आने तक सेवा की तो आपके हवा का कर्ज माफ हो जाएगा''

राजा ने वैसा ही किया जैसा उस ऋषि ने उन्हें मार्गदर्शित किया था। उनका पूरा राज्य सुंदर–सुंदर फूलों और फलदार वृक्षों से महक उठा।

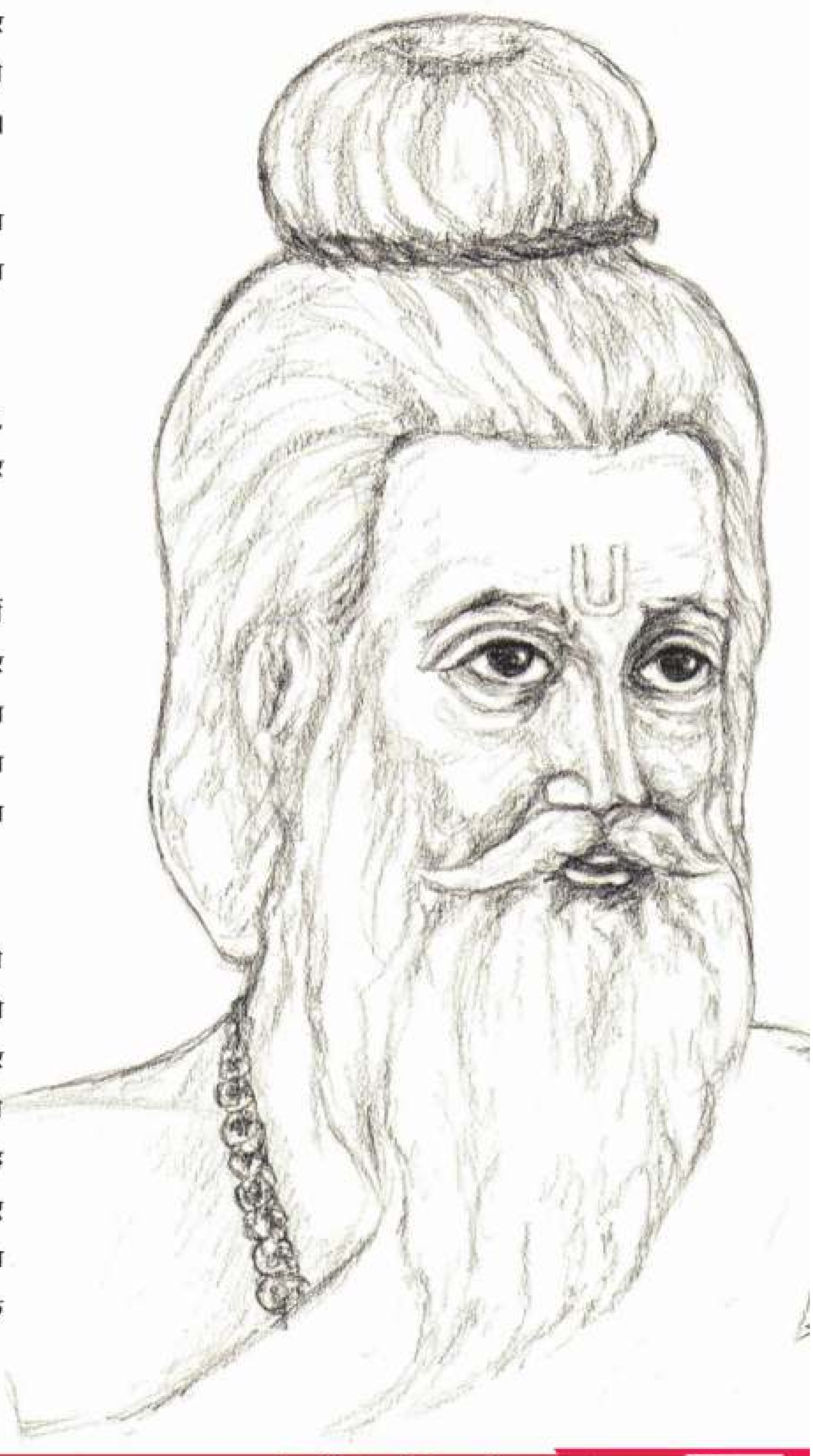

बोधकथा

दस कदम का फलसफा

संदीप श्रीवास्तव, अधीक्षक

बात उन दिनों की है जब मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रहा था उम्र के इस पड़ाव पर मन बहुत चंचल होता है। बारहवीं परीक्षा पार कर के क्या किया जाए? यह एक पश्न था। यह सोचकर मन बहुत घबड़ाता था कि जीवन में इतना लंबा रास्ता कैसे तय किया जाएगा। उसी समय मेरे बड़े भाई जो कि दिल्ली में प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करते थें और मानसिक रुप से काफी परिपक्व थे, से पत्रों के जरिये मैने अपनी समस्याएं बताई तो वे पत्रों के जवाब में एक कहानी जरुर लिखते थे, जो अक्सर मेरे प्रश्नों के उत्तर ही होते थे। इतने वर्ष के बाद भी वे कहानियां आज भी प्रसंगिक हैं जो आप सब के समक्ष प्रस्तुत है:–

"एक सीधा सादा किसान जीवन में पहली बार पहाड़ियो की यात्रा पर जा रहा था। वो पहाड़ियां यद्यपि उसके गांव से बहुत ज्यादा दूर नहीं थी, फिर भी वह कभी वहां तक नहीं जा सका था। उनकी हरियाली से ढकी चोटियां उसे अपने खेतों से ही दिखाई पड़ती थी। बहुत बार उसके मन में उन्हें निकट से जाकर देखने की आकांक्षा अत्यंत बलवती भी हो जाती थी। पिछली बार तो वह इसलिए ही एक बार नहीं गया था क्योंकि उसके पास कंडील (प्रकाश फैलाने वाली दीया) नही था और पहाड़ियों पर जाने के लिए आधी रात के अंधेरे में ही निकल जाना आवश्यक था। एक दिन वह कंडील ले आया। ऐसे ही एक रात्रि में 1 बजे ही पहाड़ियों के लिए निकल पड़ा। लेकिन यह क्या, वह गांव के बाहर ही आकर रूक गया गया। उसके मन में एक दुविधा पैदा हो गई। उसके घर से बाहर आते ही देखा कि बाहर आमावस की रात्रि की धुंध अंधकार फैला है। निश्चय ही उसके पास कंडील थी, लेकिन
उसका प्रकाश तो दस कदमों से ज्यादा नहीं पड़ता था और चढ़ाई थी 10 मील की। वह सोचने लगा कि जाना है दस मील और रोशनी है केवल दस कदमों तक पड़ने वाली तो रास्ता कैसे पूरा होगा? वह काफी हिसाब किताब करता रहा कि 10 मील बनाम 10 कदम। ऐसे घुप्प अंधकार में इतनी सी कंडील के प्रकाश को लेकर जाना क्या उचित है। यह तो सागर में छोटी–सी डोंगी लेकर उतरने जैसा ही है। वह थक हार कर गांव के बाहर ही बैठ गया व सूर्य के निकलने की बाट जोहने लगा। तथा उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी उसके पास से ही पहाड़ियों की तरफ जा रहा है और उसके हाथ में तो और भी छोटी कंडील है। उसने वृद्ध को रोककर अपनी दुविधा बताई तो वह वृद्ध खूब हंसने लगा और बोला," पागल! तू पहले दस कदम तो चल। जितना दिखता है उतना तों पहले आगे बढ़। फिर इतना ही और आगे दीखने लगेगा। एक कदम से ज्यादा कोई चल पाया है क्या भला! एक कदम दीखता हो तो उसके सहारे तो सारी भूमि की परिकमा की जा सकती है।"

युवक समझा, उठा और चला और सूर्य निकलने के पहले ही वह पहाड़ियों पर था।

जीवन के मार्ग पर भी उस बूढ़े की सीख याद रखने योग्य है। जो सोचता है, वह नही, जो चलता है बस केवल वही पहुंचता है। इतना विवेक रूपी प्रकाश प्रत्येक के पास है कि उससे कम से कम दस कदम का फासला दिखाई पड़ सके और उतना प्रयास भी कर सके

मुझे मेरे प्रश्नों का उतर मिल चुका था।

कविताएं

स्मृति के कैनवास पर

राजू कुमार, सहायक

स्मृति के कैनवास पर,
कुछ अधूरी यादे हैं,
कसमों का तो पता नहीं
रिश्तों के रंग गाढ़े है,
भूल चुके जिन लम्हों को,
अहसास अभी तक ताजे है,
विस्मृति के पन्नों पर,
जो चित्र बचे वो सादें है,

वक्त जिन्हें भुला न पाया,
याद शहर जो मिटा न पाया,
जी लूं कुछ पल उन लम्हों में,
ख्वाहिश फिर से जागे है,
स्मृति के कैनवास पर,
कुछ अधूरी यादें है।।

मेरी प्यारी नानी

बार्बी शर्मा (सुपुत्री सुश्री मंजू शर्मा)

उम्र वहीं पर रुक गयी जैसे,
हुई खुदा की मेहरबानी,
चेहरे पर रौनक–सी रहती,
होंठों पर मीठी वाणी,
हर गुण जिसमें कूट–कूट भरा,
ऐसी है मेरी नानी।
संयम, हिम्मत, विशवास तुम रखना,
ये बाते वो हमें सिखाती है।
अपने शब्दों की दुनियां में,
इक नया संसार दिखाती है।
उठकर सुबह वह पूजा करती,
रामायण व गीता पढ़ती,
पास बैठकर है सब सुनते,
मेरी नानी संस्कार है गढ़ते,
पर हसी–मजाक में कर देती है,
हरकत एकदम बचकानी,
हर गुण जिसमें कूट–कूट भरा,
ऐसी है मेरी नानी।
घर की वो तो वैद्य है जिससे,
डरती है हर बीमारी,
बातें सुनकर लगती उनकी,
नहीं उनसा कोई है ज्ञानी,
हर गुण जिसमें कूट–कूट भरा,
ऐसी है मेरी नानी।
जब नींद नहीं आती रातों को,
वो लोरी हमें सुनाती है,
सुनकर मीठी आवाज उनकी भर,
नींद हमें आ जाती है।
कभी–कभी तो चलते किस्से,
एक राजा, एक रानी,
हर गुण जिसमें कूट–कूट भरा,
ऐसी है मेरी नानी।
हर मुश्किल को हल करने की
रखती है हरदम तैयारी,
शक की कोई बात नहीं है,
वो सचमुच बड़ी सयानी,
हर गुण जिसमें कूट–कूट भरा,
ऐसी है मेरी नानी।

जीवन के मंत्र

जगदीश चन्द सूर्यवंशी, सहायक

आंनद में–वचन मत दीजिए।
क्रोध में– उत्तर मत दीजिए।
दुख मे – निर्णय मत लीजिए।

भक्ति कीजिए तो मुक्ति मिलेगी।
सेवा कीजिए – शक्ति मिलेगी।
सहन कीजिए – देवत्त–मिलेगा।
संतोषी बनिए – सुख मिलेगा।

वाह रे जिंदगी
दौलत की भूख ऐसी लगी कि कमाने निकल गए ।
जब दौलत मिली तो हाथ से रिश्ते निकल गए
बच्चों के साथ रहने की फुरसत न मिल सकी,
फुरसत मिली तो बच्चे प्रदेश प्रवास पर निकल गए।

बेटी

अवल मग्गू, उच्च श्रेणी लिपिक

बहुत चंचल,बहुत खुशनुमा सी होती है बेटियां,
नाजुक–सा दिल रखती, मासूम होती है बेटियां,
बात–बात पर रोती है, छुईमुई–सी होती है बेटियां,
रहमत से भरपूर, खुदा की नेमत हैं बेटियां,
हर घर महक उठता, जहां मुस्कुराती हैं बेटियां,
अजीब–सी तकलीफ होती, जब दूर होती है बेटियां,
घर लगता सूना–सूना, पल–पल याद आती है बेटियां,
खुशी की झलक और बाबुल की लाडली हैं बेटियां,
ये हम नहीं कहते, ये तो रब कहता है,
कि जब भी मैं खुश होता, तो जन्म लेती है बेटियां ।।

राखियां

मुकेश कुमार

भैया के हाथों का गहना,
बनी आज रंग बिरंगी राखियां,
भैया से उपहार दिलाती,
बनकर आज प्यार राखियां।
रिश्तों को मजबूत बनाती,
बनकर आज विश्वास राखियां।
बहनों की रक्षा के खातिर,
भैया की आज तलवार राखियां
हंसी खुशी ठिठोली का,
बनाती आज माहौल राखियां।

यात्रा संस्मरण–माउंट आबू दर्शन

संजीव मदान, अधीक्षक

माउंट आबू राजस्थान तथा गुजरात का एकमात्र पहाड़ी पयर्टन स्थल है जो विश्व की प्राचीनतम पर्वतमाला अरावली पर स्थित है। इसे राजस्थान का स्वर्ग भी कहा जाता है। यह भारत के एक मशहूर आध्यात्मिक शहर के रूप में भी विश्व प्रसिद्ध है। यहां विश्व के हर कोने से सैलानी तथा आध्यात्मिक शांति तथा सुख की प्राप्ति के ईच्छुक यात्री आते रहते है। मैंने भी अपने परिवार के साथ इस साल इन खुबसूरत नैसर्गिक दृश्यों तथा आध्यात्मिक ज्ञान गंगा में तैर कर जो आनन्द प्राप्त किया उसे आप सब के साथ साझा कर रहा हूं।

शांतिवन

मेरा, परिवार सहित माउंट आबू स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा ज्ञान सरोवर,(एकेडमी फार ए बैटर वर्ल्ड) में एक कार्यकम में जाना हुआ। दिनांक 03.01.2018 को सुबह 5.45 पर चण्डीगढ़–बांद्रा सुपरफास्ट ट्रेन से आबू रोड रेलवे स्टेशन तक की सीधी ट्रेन से मेरा परिवार रात करीब 10 बजे आबू रोड़ रेलवे स्टेशन पहुंचा। जहां से ब्रहमाकुमारी संस्था द्वारा चलाई जा रही निशुल्क बस सेवा द्वारा हमें रेलवे स्टेशन से 06 किलोमीटर की दूरी पर अरावली पर्वत की तलहटी में बने विशाल शांतिवन कैंपस में रात्रि विश्राम के लिए लाया गया। शांतिवन कैंपस में बना डायमंड हाल बिना किसी पिलर की मदद से बना एक विशाल हाल है, जिसमें 30000 लोग एक साथ बैठ सकते हैं। यहां लगभग 20000 लोगों के एकसाथ रहने खाने पीने की बेहतरीन सुविधा उपलब्ध है। कैंपस में कई बहुमंजिला रिहायशी भवन, 3000 लोगों के बैठने की सुविधा युक्त तथा 13 अलग–अलग भाषाओं में अनुवाद की सुविधा से युक्त वातानूकूलित कांफ्रैंस हाल, बेहतरीन रोड, आंतरिक यातायात व्यवस्था तथा भव्य किचन जिसमें 30000 लोगों के लिए सौर ऊर्जा से सारा भोजन तैयार किया जाता है। तथा एक साथ टेबल कुर्सी पर बैठ कर 15000 लोगों के भोजन करने के लिए तीन मंजिला डायनिंग भवन है जिसमें कई विशाल हॉल है। यहां पहुंच कर हमें रहने के लिए कमरे उपलब्ध करवाए गए। जहां अपना सामान रखकर पूरे परिवार ने नहा– धोकर रात्रि भोजन कर मेडिटेशन हाल से राजयोग किया।

ज्ञान सरोवर

सुबह के नाश्ते के बाद हम लोग संस्था की ही बस द्वारा वहां से लगभग 25 किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रृंखला पर स्थित संस्था के इंटरनैशनल कांफ्रैंस स्थल ज्ञान सरोवर की तरफ चल पड़े। रास्ते में अरावली पर्वत की ऊंची–ऊंची चोटियां तथा गहरी–गहरी खाईया देखकर मन प्रकृति की विशालता को देखकर मंत्रमुग्ध होता रहा। साथ ही यह भी सोच चली कि इंसान ने अपनी मेहनत से असंभव सी दिखने वाली परिस्थितियों पर विजय पाने के बाद ऐसी ऐसी जगह आबाद की हैं जहां जाकर मन से बस वाह! वाह! ही निकलता है। ऐसा ही एक स्थान ज्ञान सरोवर कैंपस है जो लगभग 60 एकड़ की पहाड़ी जमीन पर फैला है। कैंपस के अंदर पैर रखते ही वहां की प्राकृतिक नैसर्गिक सुंदरता, रंग बिरंगे फूल–फलों से लदे वृक्ष, वास्तुकला की अनोखी मिसाल वहां बने भवन तथा वहां निस्वार्थ भाव से सेवा तपस्यारत बाल ब्रहमचारी समर्पित श्वेत वस्त्रधारी ब्रहमकुमार तथा ब्रहमाकुमारियों को देखकर एक बार तो ऐसा लगता है कि जैसे हम किसी अन्य दिव्य लोक में ही पहुंच गए हों। यहां की दिव्यता, सुंदरता तथा रमणीकता का वर्णन करना ऐसा होगा जैसे गूंगे द्वारा गुड़ के स्वाद का बखान। ज्ञान सरोवर में संस्था द्वारा समाज के हरेक वर्ग की सेवा के लिए बनाए गए 20 विंग जैसे–आर्ट एण्ड कल्चर, सोशल सर्विग, प्रशासनिक सेवाओं, सुरक्षा संस्थाओं, महिला विंग, ग्रामीण विंग, शिक्षक विंग, ज्यूडिशियल विंग, पॉलिटिकल विंग इत्यादि से संबंधित इन क्षेत्रों से जुडे लोगों के लिए अपने कार्य व्यवहार में आध्यात्मिकता के माध्यम से सुधार हेतु 5 दिवसीय आवासीय कांफ्रैंस का आयोजन लगभग पूरा साल होता रहता है।

यूनिवर्सल पीस हाल

संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय यूनीवर्सल पीस हाल भी हमारा जाना हुआ है। इस जगह पर जाते ही मन स्वयमेव ही उस सर्वशक्तिमान से योगयुक्त हो जाता है जो इस जगह पर बाल ब्रह्मचारी तपस्वियों द्वारा की गई दशकों की तपस्या का परिणाम ही लगता है।

पीस पार्क

संस्था द्वारा बनाए तथा संभाले जा रहे पीस पार्क में रंग बिरंगे फूलो, ऊंचे–ऊंचे वृक्षों तथा साथ ही कई प्रकार के वैज्ञानिक तरीकों तथा ऑडियो–वीडियो के माध्यम से बड़े ही दिलचस्प तरीके से आध्यात्मिक ज्ञान तथा राजयोग सिखाने वाले अनेक स्थान हर यात्री की आंखों के साथ ही मन तथा आत्मा को ही भी अतीन्द्रीय सूख तथा शान्ति से प्रफुल्लित कराने वाले लगे।

नक्की झील

अरावली पर्वतमाला की गोद में चारों तरफ पहाडियों से घिरी नक्की झील 3937 फीट ऊंचाई पर स्थित है तथा लगभग अढ़ाई किलोमीटर के दायरे में फैली है। चारों तरफ ऊंचे पहाडों, हरी भरी घाटियों तथा खजूर के ऊंचे पेड़ो से घिरी इस झील को देखना ऐसा लगता है जैसे उस सबसे बड़े कलाकार की कोई नयनाभिराम रचना देख रहे हैं। यहां बोटिंग करना अपने आप में एक अविस्मरणीय अनुभव रहा।

सनसैट प्वाइंट

ढलते सूर्य को देखने के मनोरम स्थान सनसैट प्वाइंट का दृश्य बडा ही मनोहारी लगा। यहां से देखने पर ढलता हुआ सूर्य किसी लाल गेंद की तरह प्रतीत होता है जो हमारी आंखों के सामने ही धरती में समा जाता है।

गुरुशिखर

अरावली पर्वत की सबसे ऊंची चोटी गुरुशिखर समुद्रतल से 1722 मीटर पर है। यहां से आस पास देखना मानो किसी और ही दुनियां को देखने का अनुभव कराता है।

दिलवाड़ा जैन मंदिर

दिलवाड़ा जैन मंदिर 11वीं तथा 13 वीं सदी की स्थापत्य कला का एक विश्वस्तरीय दर्शनीय स्थल है जहां पर जैन धर्म के तीर्थंकरों के 5 मंदिर बने हुए हैं। यहां जैन धर्म के अनुयायी देश विदेश से दर्शनार्थ आते हैं। मंदिर में सफेद संगमरमर के पत्थरों पर की गई बारीक नक्काशी, दीवारो तथा छतों पर बने देवी–देवताओं तथा स्वर्ग के उकेरे गए चित्र उस समय की कला उत्कृष्टता की कहानी बयान करते हे।

वास्तव में मेरा आबू प्रवास इस भाग दौड़, यान्त्रिकता तथा भैतिकता के पीछे अंधाधुंध भाग रही जिंदगी से कुछ समय स्वयं को जानने तथा उस सर्वशक्तिमान सत्ता द्वारा हमें प्रदत्त परंतु भौतिकता के कारण अंदर छुपी आत्मिक संपन्नता से रुबरु होने का एक अच्छा मौका था यहां प्रकृति की अनुपम विशालता को दर्शाते ऊंचे–ऊंचे पहाड़ प्रकृति की कलात्मकता को दर्शाते फूल–फलों से लदे वृक्ष तथा उस पर इंसानी प्रयासों से स्वर्ग समान बनाए स्थानो पर प्रकृति के समीप रह कर आध्यात्मिकता का रसास्वादन करना मानो सोने पे सुहागे सा लगा। यह प्रवास इतना सुखद तथा अच्छा था कि काश ! सदा के लिए यही रह जाए । परंतु वहां की मनोहारी यादों को अपने दिलों में संजोए हम लोग वापस चण्ड़ीगढ़ लौटे।

यात्रा

कुंडलपुर का जैन श्वेताम्बर मंदिर

-पूजा कुमारी (पत्नी श्री मुकेश कुमार)

प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष से बड़गांव जाने वाली मार्ग पर अवस्थित है कुंडलपुर का जैन श्वेताम्बर मंदिर। पीले पत्थरों से निर्मित यह मंदिर वास्तुकला का उत्कृष्ट नमूना है, जो बरबस ही हर पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह मंदिर मनोरम परिदृश्य के बीच भव्य रूप में उपस्थित है, जिसके मनोहारी बाग में गुलाब, डहलिया, गेंदा, गुलदऊदी इत्यादि पुष्प नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता है। एक ओर जहां इसका शांत, मनोरम परिवेश लुभाता है, वहीं मंदिर में प्रवेश करते ही पर्यटक आध्यात्मिक शांति से सराबोर हो उठता है। महानगर की भाग–दौड़ तथा कोलाहल से ऊब चुके लोग यहां से एक अविस्मरणीय अनुभव लेकर जाते हैं।

यह भूमि जैन, हिन्दू एवं बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए एक समान महत्त्व रखता है। महात्मा बुद्ध के प्रिय शिष्य सारिपुत्र तथा मोग्लायायन का जन्म यहीं हुआ था। महात्मा बुद्ध राजगृह प्रवास के दौरान यहां हमेशा आया करते थें। बौद्ध धर्म एवं दर्शन के एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण केंद्र नालंदा विश्वाविद्यालय यहीं था। इस मंदिर से एक किलोमीटर की दूरी पर बड़गांव का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर है, जो प्राचीन बारह सूर्य मंदिरों में से एक है।

इसी प्रकार जैन धर्मावलंबियों के लिए यह भूमि श्रद्धा का अनन्य केंद्र है। गौतम स्वामी जो भगवान महावीर स्वामी के प्रथम शिष्य थें, का जन्मभूमि कई श्रद्धालु कुंडलपुर को मानते हैं। वहीं महावीर ने अपना पहला, सातवां तथा नौवां वर्षावास यहीं व्यतीत किया था। प्राचीन जैन श्रुतियों के अनुसार भगवान महावीर के प्रथव प्रवास के दौरान यहां बहुतायत कुण्ड पाये जाने के कारण इस स्थल को कुण्डलपुर कहा जाने लगा।

संप्रति यहां कई जैन मंदिर अवस्थित है। यहां के पुराने जैन मंदिर को 3000 साल से भी पुराना माना जाता हैं इसी तरह यहां एक नए जैन मंदिर का निर्माण श्री आनन्द कल्याण जी पेढ़ी द्वारा 1996 में किया गया है। पीले पत्थरों से निर्मित यह मंदिर काफी भव्य है। इस मंदिर में भगवान ऋषवदेव की प्राचीन प्रतिमा स्थापित की गई है। हाल ही में यहां नंदावर्त समेत कई जैन मंदिर, भगवान महावीर की एक भव्य मूर्ति का निर्णाण करवाया गया है, जो यहां आने वाले पर्यटकों को बरबस ही आकर्षित करता है।

सड़क मार्ग से यह स्थल बिहारशरीफ से 13 किलोमीटर तथा राजगीर से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहां से बस, ऑटो के द्वारा आया जा सकता है। रेलमार्ग से यहां आने के लिए नालन्दा अथवा राजगीर रेलवे स्टेशन से उतर कर आया जा सकता है। जबकि हवाई मार्ग से यहां आने के लिए पटना अथवा गया एयरपोर्ट उतरा जा सकता है।

विविध

स्वाद मेरे देश का

मुकेश कुमार

भारत एक बहुरंगी देश है। कहावत है कि यहां एक कोस पर पानी तथा दूसरे कोस पर वाणी बदलता है। इस बहुरंगी देश के खान–पान की बात करें तो इस मामले में भी यह देश अलहदा है। आइए बहुरंगी भारत के बहुरंगी स्वाद के सफर पर चलते हैं।

दाल बाटी चूरमा

आप राजस्थान की सैर पर हों और जोधपुर, जैसलमेर के इलाके में हों तो, एक स्थानीय स्वाद अनायास ही आपका ध्यान खींचता है– वो है दाल बाटी चूरमा। यह एक प्रसिद्ध राजस्थानी व्यंजन है, जिसे बहुत प्रकार के दालों के साथ मोटे गेंहूं के आटे के बने पेड़े के साथ खाया जाता है। इसे अगर घी के साथ खाया जाए, तो इसके स्वाद को आजीवन भुलाना मुश्किल है। इसे आमतौर पर विशेष अवसरों मसलन यानी शादी, जन्मदिन आदि पर खाया जाता है।

मैसूर डोसा

वैसे तो दक्षिण भारत अपने अलहदे स्वाद के लिए मशहूर है। प्रसिद्ध मैसूर डोसा इसकी एक बानगी है। यूं तो दक्षिण में डोसे की कई वैरायटी मिलती है, लेकिन मैसूर डोसा का मिजाज कुछ अलहदा है। यह अपने मसालों एवं तीखे स्वाद के लिए जाना जाता है, जिसे सांवर, रसम अथवा नारियल की चटनी के साथ खाया जाए, तो इसका स्वाद सर चढ़कर बोलता है। दुनिया भर के रेस्त्रां में मैसूर डोसा आपको सहज ही चखने के लिए मिल जाएंगे। लेकिन अगर आप मैसूर शहर में हो, तो वहां के स्ट्रीट फूड के रूप में इसके अनोखे स्वाद से साक्षात्कार कर सकते हैं।

खाजा

एक कहावत तो आपने जरूर सुनी होगी– "टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।" क्या आपने कभी टके सेर खाजे का बहुमूल्य स्वाद का आस्वादन किया है। बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश आदि क्षेत्र में शादी–विवाह समारोह पर खाजा वितरण की परंपरा है। लेकिन बिहार के नालंदा जिला स्थित सिलाव के खाजे की पूरी दुनिया में अपनी पहचान है। हालही में सिलाव के खाजे को जीआई टैग प्राप्त हुआ है। खाजा के दो वैरायटी होते है– एक मीठा तथा दूसरा नमकीन। सिलाव के खाजा अपने कुरकुरे स्वाद तथा हल्के वजन के लिए जाना जाता है। सिलाव के खाजा के हल्के स्वरूप के बारे मे कहा जाता है कि यह इतना भुरभुरा होता है कि अगर इसके उपर एक सिक्का गिराया जाए, तो सिक्का खाजा को पार करके तल तक चला जाता है। यह एक बुद्धकालीन मिष्टान है। इसके नामकरण के बार में एक मजेदार कहावत प्रचलित है। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध ने किसी हलवाई की दुकान पर इस मिष्टान को देखा और कौतूहलवश उनसे पूछा कि यह कौन सी मिठाई है। हलवाई ने मजाक–मजाक में कह दिया–"खाजा।" तभी से इसे खाजा के नाम से जाना जाने लगा।

लिट्टी चोखा

बिहार का नाम लेते हुए इस राज्य के एक मजेदार व्यंजन की याद स्वतः ही आ जाती है। वह है लिट्टी चोखे के देसज स्वाद का। यह कहने की जरूरत नहीं कि आम आदमी के इस जायके की मकबूलियत बिहार की सीमाओं को लांघकर देश–दुनिया में पहुंच चुकी है। लिट्टी को गेहूं के आटे, चने के सत्तु से बनाया जाता है। आटे के पेड़े में सत्तु, प्याज, लहसुन, अदरख, अजवायन, अचार के मसाला आदि चीजों को मिलाकर इसे कोयले अथवा उपले की आग में पकाया जाता है। आम

भारत एक बहुरंगी देश है। कहावत है कि यहां एक कोस पर पानी तथा दूसरे कोस पर वाणी बदलता है। इस बहुरंगी देश के खान–पान की बात करें तो इस मामले में भी यह देश अलहदा है। आइए बहुरंगी भारत के बहुरंगी स्वाद के सफर पर चलते हैं।

दाल बाटी चूरमा

आप राजस्थान की सैर पर हों और जोधपुर, जैसलमेर के इलाके में हों तो, एक स्थानीय स्वाद अनायास ही आपका ध्यान खींचता है– वो है दाल बाटी चूरमा। यह एक प्रसिद्ध राजस्थानी व्यंजन है, जिसे बहुत प्रकार के दालों के साथ मोटे गेंहूं के आटे के बने पेड़े के साथ खाया जाता है। इसे अगर घी के साथ खाया जाए, तो इसके स्वाद को आजीवन भुलाना मुश्किल है। इसे आमतौर पर विशेष अवसरों मसलन यानी शादी, जन्मदिन आदि पर खाया जाता है।

मैसूर डोसा

वैसे तो दक्षिण भारत अपने अलहदे स्वाद के लिए मशहूर है। प्रसिद्ध मैसूर डोसा इसकी एक बानगी है। यूं तो दक्षिण में डोसे की कई वैरायटी मिलती है, लेकिन मैसूर डोसा का मिजाज कुछ अलहदा है। यह अपने मसालों एवं तीखे स्वाद के लिए जाना जाता है, जिसे सांवर, रसम अथवा नारियल की चटनी के साथ खाया जाए, तो इसका स्वाद सर चढ़कर बोलता है। दुनिया भर के रेस्त्रां में मैसूर डोसा आपको सहज ही चखने के लिए मिल जाएंगे। लेकिन अगर आप मैसूर शहर में हो, तो वहां के स्ट्रीट फूड के रूप में इसके अनोखे स्वाद से साक्षात्कार कर सकते हैं।

खाजा

एक कहावत तो आपने जरूर सुनी होगी– "टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।" क्या आपने कभी टके सेर खाजे का बहुमूल्य स्वाद का आस्वादन किया है। बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश आदि क्षेत्र में शादी–विवाह समारोह पर खाजा वितरण की परंपरा है। लेकिन बिहार के नालंदा जिला स्थित सिलाव के खाजे की पूरी दुनिया में अपनी पहचान है। हालही में सिलाव के खाजे को जीआई टैग प्राप्त हुआ है। खाजा के दो वैरायटी होते है– एक मीठा तथा दूसरा नमकीन। सिलाव के खाजा अपने कुरकुरे स्वाद तथा हल्के वजन के लिए जाना जाता है। सिलाव के खाजा के हल्के स्वरूप के बारे मे कहा जाता है कि यह इतना भुरभुरा होता है कि अगर इसके उपर एक सिक्का गिराया जाए, तो सिक्का खाजा को पार करके तल तक चला जाता है। यह एक बुद्धकालीन मिष्टान है। इसके नामकरण के बार में एक मजेदार कहावत प्रचलित है। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध ने किसी हलवाई की दुकान पर इस मिष्टान को देखा और कौतूहलवश उनसे पूछा कि यह कौन सी मिठाई है। हलवाई ने मजाक–मजाक में कह दिया–"खाजा।" तभी से इसे खाजा के नाम से जाना जाने लगा।

लिट्टी चोखा

बिहार का नाम लेते हुए इस राज्य के एक मजेदार व्यंजन की याद स्वतः ही आ जाती है। वह है लिट्टी चोखे के देसज स्वाद का। यह कहने की जरूरत नहीं कि आम आदमी के इस जायके की मकबूलियत बिहार की सीमाओं को लांघकर देश–दुनिया में पहुंच चुकी है। लिट्टी को गेहूं के आटे, चने के सत्तु से बनाया जाता है। आटे के पेड़े में सत्तु, प्याज, लहसुन, अदरख, अजवायन, अचार के मसाला आदि चीजों को मिलाकर इसे कोयले अथवा उपले की आग में पकाया जाता है। आम चीजों से बना लिट्टी न केवल स्वाद में जायकेदार होता है, बल्कि सेहत के लिए भी फायदेमंद होता है।

पेठा

आगरा शहर न केवल ताजमहल के लिए विश्वप्रसिद्ध है, बल्कि यह लाजबाव मिठाई पेठा के लिए भी मशहूर है। मुगल रसोई की देन इस मिठाई का स्वाद लोगों के सर चढ़कर बोलता है। अगर आप आगरा शहर यह इसके आप–पास हैं, तो मिठाई

यात्रा संस्मरण

मेरी चारधाम यात्रा का अनुभव

अनिल कुमार, सहायक

जीवन में एक बार चार धाम की ईच्छा सभी श्रद्धालुओं के मन में अवश्य होती है। अन्य श्रद्धालुओं की तरह मेरी भी थी। यह ईच्छा 24 जून 2018 की सुबह को पूरी हुई, जब हम अपने परिवार एंव एक करीबी मित्र के परिवार के साथ यात्रा पर निकले। पूरी यात्रा के लिए गाड़ी का इंतजाम मेरे मित्र द्वारा ही किया गया था। तड़के सुबह करीब 6 बजे हम सभी लुधियाना से चारधाम पंहुचने के लिए प्रस्थान किये और यमुनानगर, पोंटा साहिब के रास्ते होते हुए देहरादून पहुंचे। लुधियाना से देहरादून के बीच की कुल दूरी लगभग 268 कि.मी. है, जिसे हमने अपने मित्र की निजी वाहन में लगभग 6 घंटे में तय किया। यह यात्रा काफी रोमांच एवं आंनदभरा था। वहां कुछ देर विश्राम करने के उपरांत हम सभी यमुनोत्री के लिए रवाना हुए और शाम को करीब 6 बजे हम सभी वहां पहुंच गये। वहां यमुना जी के मंदिर जाने के लिए 6 किमी की पैदल रास्ता है, जो कि हम सभी ने अगली सुबह घोड़े पर चढ़कर तय किया। घोड़े पर चढ़कर पहाड़ों की दुर्गम रास्तों वाला कठिन यात्रा कितनी रोमांचक हो जाती है, इसे शब्दों में बयां नही कर सकते। लगभग तीन घंटे की यात्रा के बाद हम अखिरकर यमुनोत्री धाम पहुंच ही गये। वहां का दृश्य काफी मनमोहक एवं सुहावना था। पूरा वातावरण भक्तिमय था। ऐसी आबोहवा में खुद को पाकर मेरे मन की तरंगें बज उठी और मैं भी अपने परिवार के साथ भक्ति में रम गया। पूजा–अर्चना करने के बाद हम सभी पुनः अपने अगले पड़ाव की ओर जाने के लिए वहां से वापस लौट आये। और यमुनोत्री से उत्तरकाशी की यात्रा प्रारंभ किया। कई घंटो के सफर के बाद हम सभी शाम को उत्तरकाशी पहुंचे। यहां रात्रि में ठहरने के लिए एक होटल किराया पर लिया और रात्रि विश्राम के बाद अगली सुबह ''गंगोत्री धाम'' की यात्रा के लिए निकल पड़े। जिसकी दूरी उत्तरकाशी से लगभग 100 किमी है। दोपहर 12 बजे के करीब हम सभी गंगोत्री पंहुच गये। यहां हम सभी ने ''गंगा'' के उद्गम चरणें का स्पर्श और दर्शन किया। मां ''गंगा'' अपने रौद्र रुप में यहां प्रवाहित हो रही थी। बहाव इतना तेज था कि उसे देखकर सभी सदस्यों को डर महसूस होने लगा था। गंगा का पर्वतों से निकलकर मैदानी भागों में प्रस्थान करते विशाल रूप को हम सभी करीब से देख रहे थे। पूजा–अर्चना के बाद फिर वापस उत्तरकाशी में स्थित अपने होटल में रात्रि पड़ाव के लिए वापस लौट आऐ। शाम को लगभग 6 बजे हम सभी अपने होटल पहुंच गये जहां रात्रि को विश्राम के उपरांत अगले दिन दिनांक 27 जून की सुबह करीब 7 बजे सभी अपने अगले धाम ''केदारनाथ'' के लिए रवाना हो गए। उत्तरकाशी से 225 किमी की दूरी तय करके हम सभी रात्रि को 8 बजे ''सोनप्रयाग'' पहुंचे। रात हो जाने के कारण हम सभी रात को यहीं पर ठहर गये। ग्रीष्म ऋतु की रात में भी यहां ठंढ की अनुभूति हो रही थी। रात गुजारने के प्रश्चात अगले दिन ''बाबा केदारनाथ धाम'' के दर्शन के लिए चल पड़े। सोनप्रयाग से गौरीकुंड के 5 किमी का सफर स्थानीय वाहनों से करना पड़ा। वहां से फिर केदारनाथ के लिए 16 किमी का रास्ता पैदल या घोड़े द्वारा तय करना पडता है। चूंकि हमारे दल के अधिकांश सदस्य बच्चे ही थे, इस कारण हम सभी ने इस यात्रा को घोड़े से तय करने का फैसला किया। यह रास्ता काफी दुर्गम और रोमांचक था

जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। ऊंची–ऊंची वादियों से घिरी घटियों का मनोरम दृश्य जैसे आंखो में ठहर–सा गया। सुंदर–सुंदर पेड़–पौधे और गगनचुंबी पर्वतों के शिखर से अठखेलियां करता बादल देखने लायक था। शहर के कोलाहल से दूर हमे असीम शांति का अनुभव हो रहा था । हम सभी दोपहर के लगभग 1 बजे ''बाबा'' केदारनाथ'' के धाम पहुंच गये। वहां प्रभु के दर्शन और पूजा–आर्चना करने के बाद वापस ''गौरीकुंड'' की और लौट चले। रात्रि के करीब 9 बजे हम सभी गौरीकुंड पहुंचे। रास्ते में मूसलाधार बारिश होने की वजह से भूस्खलन के खतरे को देखते हुए सभी स्थानीय गाड़ियां बंद हो चुकी थी। अतः मजबूरन हमें अपनी गाड़ी के ड्राइवर को फोन से संपर्क करके बुलाना पड़ा। गौरीकुंड से अपने वाहन से यात्रा करते हुए रात्रि के करीब 10 बजे सभी अपने होटल पहुंचे। हमारे पूरे दल के पूरे सदस्य लिए यह सफर काफी रोमांचक था, किसी किसी सदस्य के लिए यह उसके जीवन के सबसे यादगार सफर था। रात को यहां होटल में बिताने के बाद अगली सुबह 29 जून को इस यात्रा के सबसे लंबे सफर ''श्री बद्रीनाथ धाम'' की ओर रवाना हुए। यह सफर काफी लंबा और कठिन होने की वजह से हम सभी शाम को लगभग 7 बजे पहुंचे। यहां पर एक होटल किराया पर लेकर सामान को वही पर रख दिये और फिर ''बद्रीनाथ जी'' के दर्शन को निकल पड़े। 30 जून की सुबह हम सभी ''बाबा बद्रीनाथ के धाम पहुंचकर स्नानकुंड मे स्नान किये ओर फिर प्रभु का दर्शन व जलाभिषेक किये। पूजा–पाठ के बाद सभी भारत के सबसे आखिरी सीमावर्ती गांव ''माना'' हम सभी पैदल चलकर ही पहुंचे। यह गांव ''ब्रद्रीनाथ जी'' से 3 किमी दूरी पर स्थित है। ''माना'' गांव हम सभी पैदल चलकर ही पहुंचे। यहां ''व्यास'', ''गणेश'' आदि नामक गुफा है, जिसे हम सभी देखने गये। इससे कुछ दूरी पर ''भीम शीला'' है, जहां से सबसे पवित्र नदी ''सरस्वती'' अवतरित होती है। कहा जाता है कि युधिष्ठिर जब स्वर्ग की ओर प्रस्थान कर रहे थे, तब सरस्वती नदी उनके रास्ते के बीच में आ गई। और उनका रास्ता रोक दिया, तब भीम कुध होकर वहां पर एक शीलाखंड रख दिया और आगे का रास्ता तैयार किया। इसके कुछ दूरी पर ''बसुंधरा स्वर्ग रोहिणी'' है। ऐसी मान्यता है कि युधिष्ठर यहीं से सीधे स्वर्ग गये थे। हालांकि शाम हो जाने और रास्ता दुर्गम होने के कारण हमारे दल के कुछ ही सदस्य वहां जा पाये। बाकी के सदस्य ''भीम शीला'' में मां ''सरस्वती'' के दर्शन करके ही लौट आये। रात्रि ज्यादा हो जाने की वजह से हम सभी रात को ''बाबा बद्रीनाथ धाम'' में ही रुक गये। अगली सुबह 1 जुलाई हम सभी अपने घर की ओर वापस लौटने के लिए रवाना हुए। घर लौटते समय ऋषिकेश और हरिद्वार भी गये, जो ''बाबा बद्रीनाथ'' से 350 किमी की दूरी पर स्थित है। ऋषिकेश पहुंचते–पहुंचते काफी शाम हो चुका था और हरिद्वार जाना संभव नहीं था अतः हम सभी रात को ऋषिकेश में ही गुजारना पड़ा। ऋषिकेश काफी सुंदर जगह है। यहां का लक्ष्मण झुला दर्शनीय है। अगले दिन हम सभी हरिद्वार पंहुच गये और वहां ''हरकी पौड़ी'' में सभी स्नान किये और मां ''गंगा'' को जलाभिषेक और पुष्प समर्पित किये। गंगा के शीतल जल में स्नान करके मन शांत और शीतल हो चुका था। पूरी यात्रा के सुखद अनुभव मानो मन के अंतः स्थल में कैद हो चुके थे। वहां से घर पंहुचने तक पूरे सफर में उन सुखद पलों को याद करके जैसे मन कहीं खो–सा गया। जब लुधियाना पहुंचा तो मेरी पत्नी ने मेरे ख्वाबों के सफर से जगाते हुए कहा, ''वापस लौट आईए। हम सभी अभी लुधियाना आ चुके हैं और साथ में आप भी।'' कहा जाता है कि चारधाम की यात्रा सौभाग्य से पूरी होती है और मेरा सौभाग्य अब पूरा हो चुका था।

हमारी हिन्दी

हिन्दी जगत की खबरें

-पूजा कुमारी (पत्नी श्री मुकेश कुमार)

''नारी शक्ति'' बना वर्ष 2018 का शब्द

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश ने 26 जनवरी 2019 को ''नारी शक्ति'' शब्द को वर्ष 2018 का हिन्दी शब्द घेषित किया। इसे जयपुर सहित्य उत्सव के दौरान विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा चयन किया गया था। ऑक्सफोर्ड ने पिछले वर्ष ''आधार'' शब्द को वर्ष का हिन्दी शब्द घोषित किया था। नारी शक्ति शब्द संस्कृत से व्युत्पन्न हुआ है, जो किसी महिला की जीवन के जीने की क्षमता रेखांकित करता है। इस शब्द को चयन के पीछे हाल ही के दिनों में महिला सशक्तिकरण के उभार 'मी टू कैंपेन' के प्रभाव, भारतीय सेना में महिलाओं की बढ़ती भूमिका आदि को देखते हुए चयन किया गया है।

'डिजिटल डिलेमा' का हिन्दी संस्करण का अनावरण

नई दिल्ली में 28 मई 2019 को एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आटर्स एण्ड साईसेंज का अध्यक्ष बेली जॉन ने डिजिटल डिलेमा का हिन्दी संस्करण को लांच किया।

यूएनओ ने ट्विटर पर हिन्दी में हैंडल जारी किया

संयुक्त राष्ट्र संघ ने पिछले वर्ष माह 22 जुलाई से हिन्दी भाषा में अपना ट्विटर हैंडल जारी किया है, जिसके द्वारा हिन्दी में 10 मिनट का साप्ताहिक बुलेटिन जारी किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपना फेसबुक पेज भी हिन्दी में बनाया है। किसी अंतराष्ट्रीय मंच पर राष्ट्रभाषा हिन्दी की इस तरह की स्वीकार्यता इसके वैश्विक भाषा के रुप में बढते प्रभाव की मान्यता मिलती है।

हिन्दी के गलोबल शब्द

अवतार, गुरु अथवा योग शब्द में क्या साम्यता है। हिन्दी के ये शब्द अपनी सीमाओं को लांघकर अपनी वैश्विक पहचान बना चुके हैं। विदेशी भाषाओं में ये शब्द इस प्रकार घुल–मिल गए है कि विदेशियों को भी ये नही पता कि ये शब्द मूलतः भारतीय है। भारतीय शब्दों की एक लंबी फेहरिस्त है, जो विदेशी भाषाओं में इस प्रकार घुल–मिल गए हैं कि इनका अंदाजा लगाना मुश्किल है कि वास्तव में ये भारतीय शब्द हैं। जिस शब्द को गैर भारतीय समुदाय द्वारा अंगीकार कर लिया गया है तथा जो विदेशों में काफी लोकप्रिय हैं, को समय–समय पर ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में शामिल किया जाता है। पिछले वर्ष लगभग 70 शब्दों को उक्त शब्दकोश में शामिल किया गया है।

आईए जाने हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं के उन शब्दों को जिसे ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में शामिल किया गया है। प्रमुख शब्दों में अब्बा, अवतार, बांधवा, बडा दिन, बदमाश, भेलपुरी, चाचा, भिण्डी, चौधरी, छिः छिः चना दाल, दादागिरी, दावा, दीदी, गंजा, गुलाब जामुन घी, झुग्गी, जुगाड, मसाला, मिर्च, नाटक, पापड, किला, सूर्यनमस्कार, टाइमपास, यार, पुडी, चमचा, जय, चटनी, जी, माता, चुडीदार आदि प्रमुख है।

राजभाषा पखवाड़ा वर्ष 2017 के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की सूची

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

प्रतिभागी का नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कु	प्राप्त स्थान	पुरस्कार की राशि
1. मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/–
2. भारत भूषण वलिया, उ.श्रे.लि.	द्वितीय	रुपये 1500/–
3. संदीप श्रीवास्तव, अधीक्षक	तृतीय	रुपये 1200/–
4. दीपिका रावत, उ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–
5. सागर कंठ, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

प्रतिभागी का नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कु	प्राप्त स्थान	पुरस्कार की राशि
1. मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/–
2. संदीप कुमार मदान, अधीक्षक	द्वितीय	रुपये 1500/–
3. संदीप श्रीवास्तव, अधीक्षक	तृतीय	रुपये 1200/–
4. शशि, उ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–
5. अनिल कुमार, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–

राजभाषा ज्ञान लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

प्रतिभागी का नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कु	प्राप्त स्थान	पुरस्कार की राशि
1. मुकेश कुमार, सहायक	प्रथम	रुपये 1800/–
2. मनीषा कुमारी, उ.श्रे.लि.	द्वितीय	रुपये 1500/–
3. शशि कुमार, उ.श्रे.लि.	तृतीय	रुपये 1200/–
4. नवीन कुमार, उ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–
5. सुनील मोची, बहु कार्य स्टाफ	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–

हिन्दी वाक प्रतियोगिता

प्रतिभागी का नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमती/कु	प्राप्त स्थान	पुरस्कार की राशि
1. संदीप श्रीवास्तव, अधीक्षक	प्रथम	रुपये 1800/–
2. मुकेश कुमार, सहायक	द्वितीय	रुपये 1500/–
3. संजीव कुमार मदान, अधीक्षक	तृतीय	रुपये 1200/–
4. सुनील मोची, बहु कार्य स्टाफ	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–
5. अनिल कुमार, सहायक	प्रोत्साहन पुरस्कार	रुपये 500/–

हिन्दी प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं एवं हिन्दी प्रतियोगिताएं

भारत सरकार, राजभाषा विभाग की हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन/प्रोत्साहन योजनाएं निगम में भी लागू है, जो इस प्रकार है।

1.सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी टिप्पण आलेखन/प्रोत्साहन योजना :– यह योजना प्रत्येक वर्ष अप्रैल से अगले वर्ष मार्च तक की अवधि के लिए होती है। इस योजना के लिए पात्रता 'क' और 'ख' क्षेत्र में कम से कम 20,000 शब्द प्रतिवर्ष हिन्दी में लिखने होते हैं। इस योजना के अंतर्गत कुल 10 पुरस्कार दिए जाते है जो निम्नानुसार है :

1. प्रथम पुरस्कार (दो) 5000/– रुपये (प्रत्येक)
2. द्वितीय पुरस्कार (तीन) 3000 /– रुपये (प्रत्येक)
3. तृतीय पुरस्कार (पांच) 2000 /– रुपये (प्रत्येक)

2. हिन्दी डिक्टेशन पुरस्कार योजना : अधिकारियों के स्तर पर हिन्दी में डिक्टेशन के लिए यह योजना लागू की गई है। इसके अंतर्गत 5,000/– रुपये के दो पुरस्कार हिन्दी भाषी व हिंदीतर भाषी वर्ग के लिए निर्धारित किए गए है।

3. हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजनाः निगम कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के उद्‌देश्य से हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना लागु की गई है। यह योजना केलेन्डर वर्ष के लिए अर्थात 1 जनवरी से 31 दिसंबर की अवधि के लिए होती है। इसके अंतर्गत 'ख' क्षेत्र में वर्ष के दौरान 75 प्रतिशत या इससे अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को 600/– रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाता है। इस योजना में भाग लेने के लिए प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी से निर्धारित प्रोफार्मा में रिकार्ड रखना होता है एवं राजभाषा शाखा को प्रस्तुत करना अपेक्षित होता है।

4. राजभाषा कार्यान्वयन सुझाव पुरस्कार योजना निगम कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए एक सुझाव पुरस्कार योजना लागू है। इस योजना के अंतर्गत हर वर्ष (अप्रैल से अगले वर्ष मार्च तक) प्राप्त ऐसे सुझावों पर मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र देने की व्यवस्था है जिन्हें निगम के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से उपयोगी पाया गया हो। पुरस्कार राशि निम्नानुसार है

कुल पुरस्कार राशि :– रुपये 12000/– (बारह हजार रुपये मात्र)

अधिकतम पुरस्कार राशि :– रुपये 3000/– (तीन हजार रुपये मात्र)

न्यूनतम पुरस्कार राशिः– रुपये 600/– (छःसै रुपये मात्र)

5. हिन्दी प्रतियोगिताएंः उपरोक्त के अलावा प्रत्येक वर्ष राजभाषा पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। जैसे–हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, प्रश्न– पत्र के आधार पर हिन्दी टिप्पण–आलेखन प्रतियोगिता, राजभाषा ज्ञान लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता एवं हिन्दी वाक प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं में विजेता कार्मिको को 1800/– रुपये का प्रथम पुरस्कार 1500/– रुपये का द्वितीय पुरस्कार, 1200/– रुपये का तृतीय पुरस्कार तथा 500–500/– रुपये के दो प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

वार्षिक कार्यक्रम 2019–20 हेतु निर्धारित लक्ष्य

क.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	हिंदी मे मूल पत्राचार (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई–मैल आदि सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 100% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र को 100% राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90: 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90: 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55: 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र को 100: राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55: 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55: 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55: 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र को 85: राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4	हिंदी में टंकक, आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5	हिंदी मे डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधो टंकण (स्वयं) तथा सहायक द्‌वारा)	65%	55%	30%
6	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7	दविभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8	हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%

वार्षिक कार्यक्रम 2019–20 हेतु निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
2	वेबसाइट	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
3	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
4	1) मंत्रालय/विभागों और कार्यालयों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालय का निरी क्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
5	2) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
6	राजभाषा संबंधी बैठकें 1. हिंदी सलाहकार समिति 2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति 3. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (कम से कम) वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 2 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
7	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
8	मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/बैंक उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां सारा कार्य हिंदी में हो	'क' क्षेत्र 40%	'ख' क्षेत्र 30%	'ग' क्षेत्र 20%

हिन्दी दिवस समारोह वर्ष 2018 की झलकियां

हिन्दी दिवस समारोह

पंचदीप प्रज्ज्वलित करके हिंदी दिवस समारोह का उदघटन करते मुख्य अतिथि श्री राकेश कुमार एवं कार्यालय अध्ययक्ष श्री प्रेम कुमार नरूला

मुख्य अतिथि को शाल भेट देते कार्यालय अध्यक्ष श्री प्रेम कुमार नरुला

हिंदी दिवस समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

मुख्य अतिथि एवं कार्यालय अध्यक्ष से पुरस्कार ग्रहण करते राजभाषा प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी सुश्री दीपिका रावत

मुख्य अतिथि एवं कार्यालय अध्यक्ष से पुरस्कार ग्रहण करते राजभाषा पखवाड़ा प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी श्री सागर कुमार कंठ

राजभाषा के प्रचार–प्रसार में उत्कृष्ठ योगदाना देने के लिए पुरस्कार प्राप्त करते प्रशासन शाखा के अधिकारी एवं कर्मचारी।

उ.क्षे.का. के अधिकारी श्री महेन्द्र सिंह एवं श्री कुं.अजय सिंह से पुरस्कार ग्रहण करते राजभाष प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी श्री मुकेश कुमार

मुख्य अतिथि श्री राकेश कुमार को स्मृति चिन्ह भेंट देते कार्यालय अध्यक्ष श्री प्रेम कुमार नरुला

लुधियाना में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उप क्षेत्रीय कार्यलया के प्रांगण में ध्वजारोहण करते अधिकारी एवं कर्मचारी सदस्य।

हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर गृह पत्रिका पंजज्योति का मुख्य अतिथि के साथ विमोचन करते अन्य अधिकारीगण।

विदाई समारोह के दौरान कार्यालय अध्यक्ष श्री प्रेम कुमार नरुला से स्मृति चिन्ह् ग्रहण करते सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी श्री जगदीश सिंह

सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारी को उपहार भेंट करते मनोरंजन क्लब के सदस्य

सतर्कता जागरूकता कार्याक्रम में अधिकारीयों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते कार्यालय अध्यक्ष श्री प्रेम कुमार नरूला

राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम में शपथ ग्रहण करते उ.क्षे.का. के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर आयोजित क्वीज प्रतियोगिता कार्यक्रम का संचालन करते अधिकारी श्री अश्वनी कुमार सेठ।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर आयोजित क्वीज प्रतियोगिता के विजता प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करते कार्यालय अध्यक्ष।

लुधियाना में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को सम्बोधित करते कार्यालय अध्यक्ष श्री प्रेम कुमार नरूला

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में मंच का संचालन करते राजभाषा सहायक श्री राजू कुमार

हिंदी कार्यशाला में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते अधिकारी श्री बलदेव राज

हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षित कर्मचारियों को पुस्तक भेंट देते कार्यालय अध्यक्ष एवं अन्य अधिकारीगण।

शाखा कार्यालय ग्यासपुरां में आयोजित सुविधा समागम कार्यक्रम में नियोजकों एवं बीमांकित व्यक्तियों की समस्याओं को सुनते सभापति एवं अन्य अधिकारीगण।

सुविधा समागम कार्यक्रम मे बढ़ चढ़कर भाग लेते नियोजक व बीमाकृत व्यक्ति

राष्ट्रीय सतर्कता दिवस के अवसर पर सत्यनिष्ठा का शपथ ग्रहण करते उप क्षेत्रीय कार्यालय, के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

शाखा कार्यालय में आयोजित सुविधा समागम कार्यक्रम में उपस्थित नियोजक एवं बीमांकित व्यक्तियों के प्रतिनिधि मंडल।

समाचार पत्रों की सुर्खियों में उप क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

Centre reduces ESI contribution rate to 4 pc from July 1

ESI scheme in Ludhiana

ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਪਹਿਲੀ ਤੋਂ ਈ.ਐੱਸ.ਆਈ. ਅੰਸ਼ਦਾਨ 4 ਫ਼ੀਸਦੀ ਤੱਕ ਘਟਾਇਆ

कर्मचारी राज्य बीमा योजना पंजाब के सभी जिलों में लागू : नरूला

लुधियाना, 3 सितम्बर (सहगल): केंद्र सरकार के श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा एक नोटिफिकेशन जारी करके 1 सितम्बर 2019 से पंजाब के सभी 22 जिलों में कर्मचारी राज्य बीमा योजना पूर्ण रूप में लागू कर दी गई है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप क्षेत्रीय दफ्तर लुधियाना के निदेशक पी.के. नरूला ने बताया कि इस नोटिफिकेशन के साथ अब लुधियाना जिले की तहसीलों, ब्लाकों और गांवों सहित पूरे जिले में ई.एस.आई. नियम लागू हो गए हैं। इससे पहले ई.एस.आई. योजना पंजाब के औद्योगिक और व्यापारिक संस्थानों में आंशिक रूप में ही लागू होती थी। इसे ई.एस.आई. योगदान को 6.5 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत करने के बाद केंद्र सरकार के दूसरे बड़े फैसले के रूप में देखा जा रहा है।

उन्होंने बताया कि यह योजना श्रम और रोजगार मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है, जो बीमारी, मौत, रोजगार की चोट या मौत जैसे मौकों पर कर्मचारियों और उनके पारिवारिक सदस्यों को सहारा देती है। ई.एस.आई. का नोटिफिकेशन उन कारखानों और संस्थानों में लागू होता है जहां 10 या इससे ज्यादा व्यक्ति काम करते हैं। इस में शिक्षा, अस्पताल, चावल मिलें, ईंट भट्ठे आदि भी शामिल होते हैं।

इस योजना के अधीन 21 हजार रुपए महीना तक वेतन लेने वाले कर्मचारी स्वास्थ्य लाभ और अन्य नकद लाभ लेने के हकदार हैं।

Centre extends ESI Scheme in all districts of state

PUNJAB EXPRESS BUREAU
Ludhiana, September 3

P K Narula, Director In-charge, ESIC Sub Regional Office, Ludhiana has informed that with effect from September 1, the provisions of ESI Act have been extended to all districts of Punjab.

In a recent notification issued by Union Ministry of Labour and Employment, all 22 districts of Punjab have now been brought under the coverage of ESIC. He stated that with this, ESI Act has now been implemented in whole of Ludhiana district extending from Samrala to Jagraon including all villages, tehsils and Blocks of Ludhiana district.

Earlier, the ESI scheme was implemented in industrial or commercial clusters located sparsely in the state of Punjab. This has been seen as a second major decision of Centre after reducing the ESI contribution from 6.5 per cent to 4 per cent.

Narula said that the ESI Scheme is a pioneer Social Security Scheme run by ESI Corporation under the Ministry of Labour and Employment providing comprehensive social security benefits like Medical Care and a range of Cash Benefits to employees/workers in times of need such as employment injury, sickness, maternity etc. The ESI Act applies to factories/establishments including Educational and Medical Institutions, Rice shellers, Brick kilns etc. where 10 or more persons are employed. The employees drawing wages up to Rs 21,000 a month are entitled to Medical Benefit and other cash benefits, under the ESI Act.

Awareness camp for MSME held in city

• An awareness programme in progress at MSME office Ludhiana on Thursday.

Government reduces ESI contribution rate to 4 pc from July 1

• THE ACT NOW APPLIES TO OVER 12.11 LAKH FACTORIES AND ESTABLISHMENTS ACROSS THE COUNTRY, BENEFITING ABOUT 3.43 CRORES FAMILY UNITS OF WORKERS

ESI Scheme in Ludhiana

कर्मचारी राज्य बीमा योजना जिले में भी लागू

सिटी रिपोर्टर | लुधियाना

सूबे के सभी जिलों में कर्मचारी राज्य बीमा योजना पहली सितंबर से लागू कर दी गई है। केंद्र सरकार के श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने इस बारे में नोटिफिकेशन जारी किया है। इस बारे में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के उप-क्षेत्रीय कार्यालय के निदेशक पीके नरूला ने बताया कि इस नोटिफिकेशन के साथ ही लुधियाना जिले की तहसीलों, ब्लॉक व गांवों में ईएसआई नियम लागू हो गए हैं। इसके पहले ईएसआई योजना पंजाब औद्योगिक व व्यवसायिक संस्थानों में ही आंशिक रूप से लागू हो रही थी। इस ईएसआई योगदान को 6.5 फीसदी से घटाकर 4 फीसदी करने के बाद केंद्र सरकार दूसरे बड़े फैसले के तौर पर देखा जा रहा है। उन्होंने बताया कि मंत्रालय की यह बहुत महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है। जो बीमारी, मौत, नौकरी के दौरान हादसे में मौत जैसी स्थिति में कर्मचारियों व उनके परिजनों को फायदा देती है। यह नोटिफिकेशन उन संस्थानों में लागू होता है, जहां दस या उससे ज्यादा कर्मचारी काम करते हैं। इसमें शिक्षण संस्थान, अस्पताल, चावल मिलें, ईंट भट्ठे भी शामिल होते हैं। इस योजना के तहत 21 हजार रुपए तक वेतन पाने वाले कर्मचारी सेहत संबंधी व अन्य लाभ लेने के हकदार हैं। जिले में 15 हजार फैक्ट्रियों और अन्य संस्थानों में काम कर रहे 3.5 लाख से ज्यादा मुलाजिमों को लाभ मिलेगा। इस बीमा निगम का उप-क्षेत्रीय कार्यालय, 5 ब्रांच, 13 ईएसआई डिस्पेंसरियों, भारत नगर चौक के पास स्थित मॉडल अस्पताल और अन्य अस्पतालों से टाईअप है।

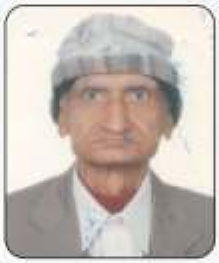

बॉलीवुड से ब्रॉडवे तक सईद जाफरी

-सुभाष चंद्र गुप्ता, उप निदेशक (सेवानिवृत्त)

जब हम फिल्म–जगत के इतिहास पर नजर डालते हैं तो हमें मालूम होता है कि फिल्म–जगत ने सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं। जब फिल्मी जगत के इन सौ वर्ष के सफर पर प्रकाश डालते हैं, तो पाते हैं कि इन सौ वर्षो की यात्रा में फिल्मी इंडस्ट्री ने कई कीमती नगीने दिये हैं, जिन्हें आज भी उतनी ही शिद्दत के साथ याद किया जाता है। जितना उस जमाने में उनका सिक्का चलता था। जब स्टारडम की बात हों, तो ''दिलीप कुमार'' ''देवानन्द'' और ''राजकपूर'' को भला कौन भुला सकता है। जिसने कई दशको तक सिल्वर स्क्रीन पर राज किया। जब बात किरदार की होती है, तो अभिनेता ''मोतीलाल'' ''बलराज साहनी'' और ''कन्हैया लाल'' को कौन भूल सकता है? दूसरे दौर के स्टारडम में ''राजेश खन्ना'' और ''अमिताभ बच्चन'' उसी शिद्दत से याद किए जाते हैं। अपने श्रेष्ठतम किरदार के लिए अभिनय स्तंभ ''संजीव कुमार'' और जिन्दादिल '' साईद जाफरी'' को याद किया जाता है।

अभिनेता ''सईद जाफरी'' का जन्म 8 जनवरी 1929 पंजाब के एक छोटे–से कस्बा मलेर कोटला में हुआ था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार सईद जाफरी अपने सशक्त अभिनय के लिए न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया में जाने जाते है। वे पहले भारतीय थे, जिन्होंने शेक्सपियर्स के नाटको के लिए अमेरिका का भ्रमण किया। जाफरी सत्तर के दशक से नब्बे के दशक तक ब्रिटिश टी.वी. के विभिन्न कार्यक्रम व धारावहिकों के लिए काम करते रहे इस दौरान वे बॉलीवुड के लिए भी काम करते रहे। वे पूर्व और पश्चिम समान रूम से सक्रिय रहे। सईद जाफरी ऐसे पहले कलाकार थें जो बॉलीबुड से लेकर ब्रॅडवे तक का सफर समान रूप से खुलकर जिया। एक तरफ वे सत्यजीत रे की फिल्म ''शतरंज को खिलाड़ी'' में काम किया, तो दूसरी तरफ ब्रिटिश फिल्मकार रिचर्ड एटनबरो के साथ फिल्म ''गांधी'' में सरदार बल्लभ भाई पटेल की भूमिका में दिखे। उन्होंने भारत के कई नामी निर्देशकों जैसे शेखर कपूर, यश चोपड़ा, श्याम बेनेगल, रमेश सिप्पी आदि के साथ काम किये। सन् 1981 में प्रदर्शित सई परांजपे की फिल्म ''चश्में बद्दूर'' में उन्होने ''ललन मियां'' का दमदार किरदार निभाया जिसे लोगो ने बहुत सराहा। इस फिल्म के लिए उन्हें खूब वाहवाही मिली। उन्होंने अपने फिल्मी कैरियर में कई शानदार फिल्में दी जिन्हें आज भी लोग चाव से देखते हैं। उन्होंने अपने फिल्मी कैरियर में कई शानदार फिल्में दी जिन्हें आज भी लोग चाव से देखते है, जैस कि ''शतरंज के खिलाडी'' ''चश्मे बद्दूर'' ''गांधी'' ''ऐ पैसेज टू इंडिया'' ''द फार पैवेलियन'', ''माई ब्यूटीफूल लान्ड्रेट'' और ''लिटिल नेपोलियन''। सईद जाफरी ऐसे पहले भारतीय फिल्म अभिनेता थे। जिसे ब्रिटेन की सबसे प्रतिष्ठि पुरस्कार ''ऑर्डर ऑफ दी ब्रिटिश एम्पायर'' से नवाजा गया। अपने सशक्त अभिनय का लोहा मनवाने वाले सईद जाफरी का देहांत 86 वर्ष की अवस्था में लंदन स्थित अपने आवास में हो गया। सईद जाफरी बेशक इस दुनिया में नहीं हैं, पर अपने फिल्मों से वे रूपहले पर्दे पर सदा के लिए अमर हो गये हैं।

अचकन की छीटें

- मंजू शर्मा, सहायक

बात उस समय की है जब देश अभी आजाद ही हुआ था। सदियों की गुलामी की जंजीरो से आजाद भारत में हर ओर घोर अभावों के बादल से छाए थें। ऐसे महौल में हर देश वासी आपने देश को आत्मनिर्भर और मजबूत रष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर देखना चाहते थे। हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री पंडित जवाहर लाल नेहरू इस दिशा में काफी प्रयत्नशील थे। फिर से वैसी ही सोने की चिड़ियां बनाना चाहते थे। जो अंग्रेजों के आने से पहले हुआ करता था। देश की तरक्की के लिए आनाज के मामले में भी आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ ऊर्जा के मामले में भी आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी था। देश की जरूरत का लगभग 90 प्रतिशत खनिज तेल आयात करना पड़ता था, जिसके कारण देश का बहुमूल्य विदेशी मुद्रा का बहिर्गमन हो जाता था और हमारे देश को विश्व बैंक व अन्य देशों से विकास के लिए ऋण लेना पड़ता था। देश का व्यापार संतुलन की खाई गहरी होती जा रही थी जिसे पाटने के लिए सरकार ने देश में तेल क्षेत्रों की खोज करने का फैसला लिया। उन्हीं दिनों हमारा मित्र देश रूस ने भारत को नए तेल क्षेत्रों की खोज करने में मदद के लिए आगे हाथ बढ़ाया और दोनों देशों के संयुक्त प्रयास के कारण देश के अंकलेश्वर क्षेत्र में तेल के कुछ कुंए की खोज करने में सफलता मिली।

कुंओं से तेल निकालना प्रारंभ किया गया और यह खबर देश के समाचार पत्रों की सुर्खिया बन गई। पंडित नेहरू जी को जब यह समाचार मिला तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने इन कुंओ को देखने का कार्यक्रम बनाया। जल्द ही वे अपने ष्टिमंडल के साथ इन कुँओं को देखने पहुंचे। इस प्रोजेक्ट से जुड़े कर्मचारियों और अधिकारियों ने उनका जोरदार स्वागत किया और वहां मौजूद इंजीनियरों ने उन्हें तेल के कुएं दिखाना प्रारंभ किया। पंडित नेहरू निरीक्षण के दौरान वहां की मशीनों को बरीकी से देखकर, इंजीनियरों से उसकी जानकारी ले रहे थे कि इस बीच आचानक एक तेल की बूंद मशीनों से छिटककर उनके अचकन में जा गिरी। सफेद अचकन पर तेल की बूंद काला मोती–सा चमक उठा। यह देख वहां मौजूद अधिकारियों के यह सोच कर हाथ पांव फुल गए कि अब तो उन्हें प्रधान मंत्री के गुस्से का शिकार होना पड़ेगा। आनन–फानन में उस तेल की बूंद को साफ करने व्यवस्था की गई। अधिकारियों ने उनसे अनुरोध किया कि वे अपने कपड़े बदल ले ताकि उसे धुलने के लिए तुरंत दिया जा सके और दाग के धब्बे साफ करवाया जा सके। पर पंडित नेहरू जी तो इन बातों से क्रोधित होने के बजाय बहुत खुश हो गए। उन्होंने अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहा कि, "यह कैसे हो सकता है कि मैं इस बात का बुरा मानूंगा, बल्कि यह तो मेरे लिए होली के रंगों जैसा है। मैं बहुत सौभाग्यशाली हूं कि इसकी पहली छींटे मुझे पड़ी। अब तो मैं इसी अचकन को पहनकर संसद भवन की बैठक में जाऊंगा और वहां पर मौजूद सभी सदस्यों को दिखाऊंगा कि देखिये यह उस तेल की बूंद की छीटें है, जो हमारे अपने देश में निकला है।" यह बात सुनते ही वहां पर उपस्थित सभी लोगों के चेहरे खिल उठे। उन्होंने अपने प्रधानमंत्री पर गर्व महसूस हुआ। इस पूरे वाकया से एक बात जाहिर होता है कि अपनी उपलब्धि चाहें कितनी भी छोटी या बड़ी क्यों न हो, वह हमारे लिए गर्व का विषय होता है न कि धर्म का। और यह हम नेहरू जी से सीख सकते हैं।

आपकी पाती मिली ....

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''पंजज्योति'' का तृतीय अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा आकर्षक तथा पत्रिका की गुणवत्ता एवं मुद्रण कार्य उच्च कोटि का है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्साहवर्धक, रोचक तथा महत्त्वपूर्ण है।

सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल को पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन के लिए बधाई। आगामी अंक के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

लक्ष्मण गुप्ता, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' के तृतीय अंक, वर्ष 2017–18 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के अग्रेषण के लिए हार्दिक आभार। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है और पत्रिका में प्रकाशित समस्त आलेख अच्छे एवं उच्च कोटि के हैं, जिनमें से ''उम्मीदों का शहर'' ''मां की ममता'' ''माता–पिता का एक अविस्मरणीय सत्य'' '' कोई लौटा दे बचपन'' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय है। विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका और भी रोचक एवं उपयोगी बनी है। कुल मिलाकर पत्रिका संग्रहणीय बनी है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एंव सहयोगियों को हमारी हार्दिक बधाईयां। आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन अनवरत जारी रहेगा। आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

बलदेव राज, उप निदेशक (प्रभारी राजभाषा),
उप क्षेत्रीय कार्यलय, जालंधर

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर एवं उपयोगी होने के साथ–साथ कार्मिकों का हिंदी भाषा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम एवं लेखन रूचि को भी दर्शाता है। रचनाओं में ''अभिव्यक्ति का सशक्त संरक्षण'' तथा ''कम्प्यूटर/मोबाईल हेतु उपयोगी सॉफ्टवोयर ''विशेष रूप से पठनीय है। वही पंजाब का प्रमुख शहर लुधियाना का वर्णन पेश करती रचना ''उम्मीदों का शहर'' एवं खान–पान प्रेमियों के लिए लजीज पंजाबी व्यंजनों का स्वाद चखाती रचना ''पंजाबी तड़का'' भी एक पृथक अनुभव साझा करती है।

गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' के आगामी अंक के लिए संपादक एवं संपादक मंडली को शुभकामनाएं।

एस.बी. शास्त्री, सहायक निदेशक (रा.भा.प्रभारी)
क्षेत्रीय कार्यालय त्रिशूर, केरल।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''पंजज्योति'' के तृतीय अंक, वर्ष 2017–18 की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका अग्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा आकर्षक तथा मुद्रण कार्य उच्च–कोटि का है। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रस्तुति अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित विविध विषयक लेख, रचनाएं, लघु कहानियां, कविताएं, प्रकृति संरक्षण के उपाय, राजभाषा नीति कार्यान्वयन संबंधी विविध सूचना तथा विविध गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका रोचक होने के साथ–साथ दैनिक जीवन के लिए भी उपयोगी है। कुल मिलाकर पत्रिका संग्रहणीय बनी है। पत्रिका प्रकाशन कार्य से जुडें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों विशेष रूप से राजभाषा कार्मिकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए हार्दिक बधाईयां।

विजय बोकोलिया, उप निदेशक एवं प्रभारी (रा.भा.),
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून उतराखंड

आपकी विभागीय गृहपत्रिका ''पंजज्योति'' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका की साज–सज्जा उत्कृष्ट है तथा पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक है तथा तस्वीरों में कार्यालय की राजभाषा से संबधित विभिन्न गतिविधियों की झलक दिखाई देती है। विशेष रूप से ''मां की ममता'', ''कंप्यूटर/मोबाइल हेतु उपयोगी सॉफ्टवेयर'', सिक्कों का इतिहास'', ''एक शहर झुमरी तिलैया'' ''उम्मीदों का शहर'' आदि रचनाएं पठनीय है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई। पत्रिका के आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ. अरुण कु. शर्मा, चिकित्सा अधीक्षक,
आदर्श अस्पताल, नामकुम, रांची, झारखण्ड

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका ''पंजज्योति'' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई। हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका पढ़ने के उपरांत प्रतीत होता है कि ''ख'' क्षेत्र में होने के बावजूद भी आपके कार्यालय में हिंदी के प्रति प्रेम एवं प्रोत्साहन का वातावरण अप्रतिम है। कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा पत्रिका के प्रकाशन में दिये योगदान से पत्रिका अविस्मरणीय बन गई है।

पत्रिका में प्रकाशित ''दृष्टिकोण'', ''कोई लौटा दे बचपन'' ''माता–पिता का एक विस्मरणीय सत्य'' ''मौलिकता'' एवं राजभाषा संबंधी जानकारी ने पत्रिका को रोचक एवं ज्ञानवर्धक बना दिया है। अन्य लेख, कविता एवं कहानियां भी पठनीय एवं मनोरंजक है। साथ ही कार्यलय में संपन्न हुई गतिविधियों के छायाचित्र भी आकर्षित करते हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाईयां एवं आगामी अंक हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

राकेश वर्मा, उप निदेशक (रा.भा. प्रभारी)
आदर्श अस्पताल, मानेसर, हरियाणा

आपकी पत्रिका '' पंजज्योति'' के तीसरे अंक की प्राप्ति हुई। इस अंक के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद। कृपया प्रतिक्रिया सादर स्वीकार करें।

बधाईः पत्रिका के तीसरे अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

प्रशंसनीयः पत्रिका में श्री विक्रांत गोसाई, श्री राजू कुमार, श्री संदीप कुमार श्री वास्तव, श्री राजेश कुमार, श्री सुनील दत, श्री संजीव मदान, श्रीमती नीलम, श्रीमती मंजू शर्मा एवं श्री महेन्द्र सिंह की रचनाएं।

आकर्षकः पत्रिका का मुख्यपृष्ठ एवं आयोजन संबंधी चित्र।

विशेष : श्री मुकेश कुमार का लेख ''कुछ अजीम लुधियानवी''।

सुझावः प्रशंसनीस रचनाकारों के उत्साहवर्धन हेतु इस पत्र की प्रति भेंट करें।

संपादक मंडल को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हमारी हार्दिक बधाईयां। अगले अंक के लिए शुभेच्छाओं सहित ।

मनोज कुमार यादव, सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा),
उप क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

नराकास लुधियाना द्वारा आयोजित संयुक्त प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी श्री मुकेश कुमार, सहायक प्रथम पुस्कार ग्रहण करते हुए ।

नराकास लुधियाना द्वारा आयोजित संयुक्त प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी श्री राजू कुमार, सहायक प्रथम पुस्कार ग्रहण करते हुए ।

जय माता दी
जय माता दी